उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम

इतिहास

3

वैकल्पिक मॉड्यूल

पाठ्यक्रम समन्वयक
विवेक सिंह

विद्याधनम् सर्वधनं प्रधानम्

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

ए-24-25, शैक्षणिक क्षेत्र, सेक्टर-62, नोएडा-201309 (उ.प्र.)

परामर्श समिति

डॉ. सितांशु शेखर जेना
अध्यक्ष
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

डॉ. राजेश कुमार
संयुक्त निदेशक, शैक्षिक
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

डॉ. अनिता प्रियदर्शिनी
संयुक्त निदेशक, शैक्षिक
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

प्रो. टी. के. वी. सुब्रमण्यम
अध्यक्ष
इतिहास विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. बी. आर. मनी
उप निदेशक
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग,
नई दिल्ली

सुश्री मंजिष्ठा बोस
अवकाश प्राप्त पी.जी.टी. इतिहास
और विभागाध्यक्ष सामाजिक विज्ञान
स्प्रिंगडेल स्कूल, पूसा रोड, नई दिल्ली

प्रो. जे. के. शर्मा
पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

डॉ. पी. के. बसंत
सह. प्रोफेसर
इतिहास विभाग,जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. गुरप्रीत मैनी
पंजाब एजुकेशन सर्विस,श्नई दिल्ली

सुश्री अनीता देवराज
प्रधानाचार्य
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बहादुरगढ़, हरियाणा

प्रो. ए. आर. खान
प्रोफेसर, इतिहास
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

सुश्री पद्मा श्रीनिवासन
पी.जी.टी (इतिहास)
दिल्ली पब्लिक स्कूल
आर.के. पुरम, नई दिल्ली

डॉ. अनिता प्रियदर्शिनी
संयुक्त निदेशक, शैक्षिक
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान,
नोएडा

विषय संपादक

मॉड्यूल 6 ए
प्रो. टी. के. वी. सुब्रमण्यम
अध्यक्ष
इतिहास विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

मॉड्यूल 6 बी
प्रो. कुमकुम रॉय
प्रोफेसर,
स्कूल ऑफ़ सोशल साइंसेस
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

भाषा संपादक

डॉ. सुरेशकान्त
उप महाप्रबन्धक (रिटा.) भारतीय स्टेट बैंक
25 ए, पाकेट J & K
दिलशाद गार्डेन, दिल्ली

श्री राम देव
पी.जी.टी. इतिहास
एस.बी.टी. झण्डेवालान,
दिल्ली–55

डॉ. बी. के. राय
शैक्षिक अधिकारी (हिन्दी)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा
संस्थान, नोएडा

संपादकीय सहयोग

श्री. एन.पी. सिंह
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान,
नोएडा

अनुवादक

श्री राम देव
पी.जी.टी. इतिहास
एस.बी.टी. झण्डेवालान,
दिल्ली–55

डॉ. सुरेशकान्त
उप महाप्रबन्धक (रिटा.) भारतीय स्टेट बैंक
25 ए, पाकेट J & K
दिलशाद गार्डेन, दिल्ली

पाठ लेखक

प्रो. कुमकुम रॉय
प्रोफेसर,
स्कूल ऑफ़ सोशल साइंसेस
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

श्री शालीन जैन (6 ए पाठ 30, 31)
सहायक प्रोफेसर
हंसराज कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

डा. भारती जगन्नाथन (6 बी पाठ 31)
सहायक प्रोफेसर
मिरांडा हाउस
दिल्ली विश्वविद्यालय

श्री संतोष कुमार राय (6 ए पाठ 32)
सहायक प्रोफेसर
एस. जी. टी. बी. खालसा कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

डा. विजया रामास्वामी (6 बी पाठ 31)
प्रोफेसर,
स्कूल ऑफ़ सोशल साइंसेस
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

रेखाचित्र

श्री महेश शर्मा
रेखाकार,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

श्री प्रवीण मिश्रा
मानचित्रकार, भूगोल विभाग
मिरांडा हाउस, दिल्ली

श्री सुंदर सिंह रावत
कार्यालय सहायक
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का विशेष आभार, जिन्होंने इस पुस्तक में छपने के लिए चित्र प्रदान किए।

निदेशक की कलम से

प्रिय शिक्षार्थियों

आपकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान का शैक्षिक विभाग आपके लिए नित नए कार्यक्रमों के द्वार खोलता है। हमने विस्त त अध्ययन करने के बाद पाया कि आपका यह पाठ्यक्रम अधिक व्यावहरिक, सहज और आज के समाज से जुड़ा हुआ है। अब हमारा काम था कि आपके लिए इसे और अधिक सार्थक व उपयोगी बनाया जाए। हमने देश के प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्रियों और विषय विशेषज्ञों को आमंत्रित करके उनके दिशा-निर्देशन में इतिहास के पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के आधार पर पुनः अवलोकन कर आपके लिए नए रूप में प्रस्तुत किया है।

साथ ही, हमने कुछ ऐसी सामग्री हटा दी है, जो आज के समाज में अप्रासंगिक हो गई है तथा नवीन सामग्री को जोड़ दिया है ताकि आपके लिए यह अधिक प्रभावी, आकर्षक और उपयोगी हो। मुझे आशा है कि आपको यह नवीन पाठ्यसामग्री अधिक रोचक और उत्साहवर्द्धक लगेगी। सामग्री में सुधार के लिए आपके सुझावों का सहर्ष स्वागत है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान देश में माध्यमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने के लिए वचनबद्ध है। माध यमिक शिक्षा एक ऐसी सामान्य शिक्षा है, जिसका मुख्य ध्येय अपनी मात भूमि को ऐसे सपूत देना है, जो अच्छे नागरिक हों व जिनकी समाज, राज्य व राष्ट्र के प्रति सकारात्मक सोच हो। साथ ही उनके अंदर ज्ञान के लिए ऐसी जिज्ञासा व पिपासा पैदा हो कि वे सजग, सार्वभौमिक, वैश्विक नागरिक बनें। दूसरी तरफ उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम अधिकतर विश्व ज्ञान की ओर इंगित करता है तथा महाविद्यालय में प्रवेश पाने का आधार बनता है।

इतिहास बीते समय की घटनाओं से संबंधित होता है, परन्तु इसका प्रमुख ध्येय सामयिक परिस्थिति को सही ढंग से समझना होता है। यह आज के समाज की विडंबनाओं की व्याख्या करता है तथा उनके कारणों की जाँच-पड़ताल करता है। आज के विश्व को अच्छी तरह समझ पाने के लिए हमें उसके अतीत की खोज व छानबीन करनी होती है ताकि हम जान सकें कि आज के हालात को अतीत ने किस प्रकार आकार दिया। भावी नागरिकों, प्रशासनिक अधिकारियों, विदेशी सलाहकारों तथा हमारी धरोहर के संरक्षकों को शिक्षित करने हेतु इनकी जरूरत हर समय बनी रहती है।

मैं आपका स्वागत करता हूं कि आपने इतिहास विषय को चुना है मैं आपके अच्छे भविष्य की कामना करता हूँ।

डॉ. राजेश कुमार

संयुक्त निदेशक (शैक्षिक)

अपने पाठ कैसे पढ़ें

बधाई! आपने खुद पढ़ने की चुनौती स्वीकार की। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान ने आपको ध्यान में रखते हुए विद्वानों की एक समिति की सहायता से इतिहास में अध्ययन सामग्री तैयार की है और हम हर कदम पर आपके साथ है। स्वतंत्र अध्ययन को सहयोग करने वाली एक पद्धति का अनुसरण किया गया है। अगर आप दिए गए निर्देशों का पालन करेंगे, तो इस अध्ययन सामग्री का सर्वोत्तम उपयोग कर सकते हैं। अध्ययन सामग्री में प्रयुक्त चिह्न ऐसा करने में आपकी मदद करेंगे।

शीर्षक: *शीर्षक आपको इसकी विषय सामग्री के संबंध में स्पष्ट संकेत देगा।*

भूमिका: *यह आपको पाठ की सामग्री से परिचित कराने के साथ ही पिछली जानकारी से भी जोड़ेगी।*

उद्देश्य: *ये आपके अध्ययन के परिणाम हैं, जिनकी आशा आपसे इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् की जाती है। आपसे उम्मीद की जाती है कि आप इन्हें पढ़ें और ज्ञान की परख करें।*

मूल पाठ/विषय सामग्री: *संपूर्ण विषय सामग्री को कई भागों एवं उपभागों में विभाजित किया गया है। ये भाग आपको विषय सामग्री के एक घटक से दूसरे में ले जाते हैं और उपभाग विषय सामग्री के घटक के विचार को समझने में सहायता करते हैं।*

टिप्पणी: *आपके लिए महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को लिखने या टिप्पणियां लिखने के लिए प्रत्येक प ष्ठ में किनारे की ओर खाली स्थान दिया गया है। इसका भरपूर उपयोग करें।*

पाठगत प्रश्न: *प्रत्येक भाग के पश्चात् स्वतः जाँच के लिए कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए गए हैं। इनके उत्तर भी पाठ के अंत में दिए गए हैं। ये आपकी प्रगति की जाँच करने में आपकी सहायता करेंगे। इन्हें हल कीजिए। इसे सफलतापूर्वक पूरा करने पर आपको यह निश्चय करने में मदद मिलेगी कि आप आगे बढ़ें या पुनः पीछे लौटकर इकाई का फिर से अध्ययन करें।*

आपने क्या सीखा: *यह पाठ के प्रमुख बिन्दुओं का सारांश है। यह पाठ के सार कथन और दोहराने में मदद करेगा। आप इनमें कुछ बिंदु जोड़ भी सकते हैं।*

पाठांत प्रश्न: *ये लघु और दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न हैं, जो आपको संपूर्ण पाठ को ठीक से समझने के लिए अभ्यास का अवसर प्रदान करते हैं।*

पाठगत प्रश्नों के उत्तर: *ये आपको यह पता करने में सहायता करेंगे कि आपने कितने पाठगत प्रश्नों के सही उत्तर दिए हैं।*

पाठांत प्रश्नों के संकेत: *ये आपको सही उत्तर खोजने में सहायता करेंगे।*

पाठ्य सामग्रीः एक नज़र में

पुस्तक - 1

मॉड्यूल 1

प्राचीन भारत

1. भारत के इतिहास को समझना
2. भारत का भौगोलिक परिवेश और प्रागैतिहासिक सभ्यताएँ
3. हड़प्पा सभ्यता
4. वैदिक काल
5. जनपद से साम्राज्य की ओर
6. मौर्योत्तर काल
7. गुप्तवंश तथा उनके उत्तराधिकारी
8. 750-1200 ई. के मध्य भरतीय परिद श्य

मॉड्यूल 2

मध्यकालीन भारत

9. दिल्ली सल्तनत की स्थापना और विस्तार
10. मुगल शासन की स्थापना
11. भारत में प्रादेशिक राज्यों का उदय
12. प्रशासनिक प्रणाली और संस्थाएं
13. अर्थव्यवस्था
14. मध्यकालीन भारत में सांस्क तिक विकास
15. 18वीं शताब्दी में भारत की स्थिति

पुस्तक - 2

मॉड्यूल 3

आधुनिक भारत

16. भारत में ब्रिटिश शासन का संस्थापन 1857 तक
17. ब्रिटिश उपनिवेशवाद का आर्थिक प्रभाव
18. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन
19. कंपनी शासन का जन विरोध

मॉड्यूल 4

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन तथा तत्कालीन भारत

20. राष्ट्रवाद
21. राष्ट्रीय आंदोलन तथा भारतीय प्रजातंत्र

मॉड्यूल 5

20वीं शताब्दी का विश्व

22. 19वीं शताब्दी का महत्त्व
23. प्रथम विश्व युद्ध तथा रूसी क्रांति
24. दोनों विश्व युद्धों के अंतराल का समय व द्वितीय विश्व युद्ध
25. शीत युद्ध व उसके प्रभाव
26. राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन
27. 20वीं शताब्दी में सामाजिक रूपांतरण
28. 20वीं शताब्दी में परिवर्तन

पुस्तक - 3

मॉड्यूल 6 क

भारत में राज्यों का विकास

29. राज्य के निर्माण की ओर
30. प्रारंभिक राज्य
31. मध्यकालीन राज्य
32. औपनिवेशिक राज्य

मॉड्यूल 6 बी

भारत में सांस्क तिक विकास

29. समसामयिक सांस्क तिक स्थिति
30. सांस्क तिक उत्पादन
31. सांस्क तिक संप्रेषण

आपसे दो बातें

प्रिय शिक्षार्थी,

आज के समाज में हम आतंकवादी, नक्सलवादी हिंसा, दंगे, साम्प्रदायिक कलह, जातीय तनाव के दौर से गुजर रहे हैं। ये सामाजिक समस्याएँ हमारे वर्तमान समाज की हैं तथा आप इन्हें सही प ष्ठभूमि में समझने का प्रयास करते होंगे। यदि हम आज की सामाजिक समस्याओं के मूल कारणों को सही तरीके से समझना चाहें तो इतिहास का विधिवत अध्ययन आपको सही दिशा दे सकता है।

इतिहास की विषय-वस्तु बहुत विस्त त है । यह मानव सभ्यता की कहानी के इर्द-गिर्द घूमती है। इसके एक छोर पर तो आदि मानव है जो भोजन संग्रह कर्ता है तथा दूसरी छोर पर आज का आधुनिक मानव है जिसने विज्ञान व तकनीक में अद्‌भुत प्रगति की है। यह भी सत्य है कि आज घातक हथियार, जनसंख्या विस्फोट, प्रदूषण, आर्थिक असमानता इत्यादि से मानव का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है।

इतिहास बीते समय की घटनाओं को खुदाई, छानबीन, शिलालेखों, दस्तावेजों इत्यादि के अध्ययन से समझने का प्रयास करता है तथा उनका विश्लेषण करने की कोशिश करते हुए, आज के हालात के कारणों को ढूँढने का प्रयत्न करता है। आज की जिंदगी अत्यधिक जटिल हो गई है और इसी तरह इतिहास भी। आज का इतिहास केवल राजाओं और सम्राटों के जीवन से ही संबंधित नहीं रहा परन्तु इसकी विषयवस्तु बहुत विस्त त हो गई है जो एक मानव सभ्यता के राजनीतिक पक्ष से प्रारम्भ होते हुए उसके सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्क तिक पहलुओं को छूती है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में उच्चतर माध्यमिक स्तर के इतिहास पाठ्‌यक्रम को इतिहास के विभिन्न कालक्रमों को सम्मिलित करते हुए बनाया गया है । पूरे पाठ्‌यक्रम को तीन पुस्तकों में विभक्त किया गया है। पहली पुस्तक प्राचीन तथा मध्यकालीन इतिहास से सम्बन्धित है। यह प्राचीन व मध्यकालीन समाज को समझने का प्रयास करती है। दूसरी पुस्तक आधुनिक काल और समसामायिक इतिहास पर विचार करती है। तीसरी पुस्तक में वैकल्पिक मॉड्‌यूल हैं। आपको इन दो मॉड्‌यूलों में से किसी एक को चुनना है-

(अ) भारत में राज्यों का विकास, तथा

(ब) भारत में सांस्क तिक विकास

विकल्प ए - भारत में राज्यों का विकास में प्राचीनकाल से लेकर मध्यकाल और औपनिवेशक काल तक में भारत में राज्यों के विकास की रुपरेखा बताई गयी है।

विकल्प बी - भारत में संस्क ति में आप समकालीन सांस्क ति उत्पादन, इसके विभिन्न रुप, साहित्य, वास्तुकला, खाघ संस्क ति के साथ बुद्ध के उदाहरण लेते हुए सांस्क तिक सम्प्रेषण का अध्ययन करेंगे।

मुझे आशा है आपको यह पुस्तक रोचक लगेगी। यदि आपको इसमें कोई दिक्कत आती है तो बिना झिझक आप हमें लिख सकते हैं।

शुभकामनाओं के साथ,

विवेक सिंह

(पाठ्‌यक्रम समन्वयक)

विषय-सूची

मॉडयूल 6 ए	**भारत में राज्यों का विकास**	
पाठ 29	**_राज्य के निर्माण की ओर**	**1**
पाठ 30	**__प्रारंभिक राज्य**	**13**
पाठ 31	**मध्यकालीन राज्य**	**30**
पाठ 32	**औपनिवेशिक राज्य**	**46**
मॉडयूल 6 बी	**भारत में सांस्क तिक विकास**	
पाठ 29	**समसामयिक सांस्क तिक स्थिति**	**60**
पाठ 30	**सांस्क तिक उत्पादन**	**75**
पाठ 31	**सांस्क तिक संप्रेषण**	**85**

- नमूना प्रश्न पत्र
- प्रतिक्रिया पत्र

मॉड्यूल 6 ए

भारत में राज्यों का विकास

पाठ 29 राज्य के निर्माण की ओर

पाठ 30 प्रारंभिक राज्य

पाठ 31 मध्यकालीन राज्य

पाठ 32 औपनिवेशिक राज्य

मॉड्यूल 6 बी

भारत में सांस्क तिक विकास

पाठ 29 समसामयिक सांस्क तिक स्थिति

पाठ 30 सांस्क तिक उत्पादन

पाठ 31 सांस्क तिक संप्रेषण

29

राज्य के गठन की ओर

राज्य ऐसा शब्द है, जिसे हम ज्यादा महत्त्व नहीं देते हैं। इससे हमारा क्या अभिप्राय होता है? प्रायः हम राज्य को सरकार के कुछ रूपों से जोड़ते हैं। सरकार के ये रूप राजतंत्र अथवा गणतंत्र अथवा कुछ मामलों में कुलीनतंत्र, अर्थात थोड़े लोगों का शासन हो सकते हैं। ये भिन्नताएं सत्ता अर्थात लोगों की प्रव त्तियों को प्रभावित और नियंत्रित करने की क्षमता के ढंग पर आधारित होती हैं, जो कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित होती हैं अथवा उसमें कई लोगों की भागीदारी होती है।

जो लोग राज्यों को नियंत्रित करते हैं, जिन्हें हम शासकों के रूप में जानते हैं, वे राजनीतिक संबंधों का निर्धारण करते हैं और विभिन्न संस्थानों के माध्यम से कार्य करते हैं। इनमें प्रशासनिक सेवाएँ शामिल हैं, जिनका उपयोग अनेक कार्यों, जैसे – राजस्व–संग्रह, सेना और न्यायपालिका के लिए किया जाता है। शासक लोगों को यह विश्वास दिलाने का प्रयास करता है कि सरकार के जिस रूप के वे प्रमुख हैं, वही सरकार आदर्श है। दूसरे शब्दों में वे राज्य के अस्तित्व को वैध बनाने का प्रयास करते हैं।

राज्यों का विकास लंबी अवधि में और भिन्न तरीकों से हुआ है। इस पाठ में हम उपमहाद्वीप की कुछ पुरानी प्रव त्तियों का पता लगाएंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आपः

- सरदारी और बादशाहत में अंतर कर सकेंगे;
- प्रारंभिक राज्यों की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे और
- कुछ प्रारंभिक राज्य किस प्रकार शक्तिशाली राज्य बन गए, इसका उल्लेख कर सकेंगे।

29.1 प ष्ठभूमि

प्रारंभिक पाठों में आपने हड़प्पा सभ्यता के बारे में पढ़ा होगा। यह अत्यधिक सुविकसित सभ्यता थी जिसमें बड़े–बड़े शहर थे, लोग विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का व्यापार करते

थे। कुछ विद्वानों का मानना है कि हड़पा सभ्यता अवश्य ही एक राज्य–संगठन रहा होगा। इस बात की अत्यधिक संभावना है, परन्तु हमारे पास इस बात के सबूत नहीं हैं कि यह राज्य कैसा था तथा हमारे पास प्रशासनिक संस्थाओं की जानकारी भी नहीं है।

(i) प्रारंभिक वैदिक साहित्य में सरदारी

आपने प्रारंभिक पाठों (पाठ 4) में ऋग्वेद के बारे में पढ़ा है। ऋग्वेद संभवतः 1800–1000 ई.पू. के बीच लिखा गया था। यह स्रोत्रों का संग्रह है, जिसमें विभिन्न देवताओं विशेष रूप से अग्नि, इन्द्र और सोम से संबंधित स्रोत्र हैं। सामान्यतः स्रोतों की रचना पुरोहितों द्वारा की जाती थी। अक्सर बलि देते समय इनका उच्चारण किया जाता था और अनुष्ठानों हेतु देवताओं को आमंत्रित करने के लिए इनका उपयोग किया जाता था। अधिकतर स्रोतों की रचना उत्तर–पश्चिम भारत में की गई थी इस क्षेत्र में सिंधु और इसकी सहायक नदियां बहती थी।

इन स्रोतों में अन्य जानकारी भी मिलती है। इनमें उन वस्तुओं की सूचियां भी शामिल हैं, जिनके लिए लोग प्रार्थना करते थे तथा कभी–कभी इनसे हमें उस काल के प्रमुखों अथवा महत्त्वपूर्ण लोगों के नामों की भी जानकारी मिलती है।

क्या इन स्रातों से हमें राजनीतिक प्रक्रियाओं के बारे में भी जानकारी मिलती है? उत्तर है – हां। कुछ दुर्लभ उदाहरणणों को छोड़कर इन स्रोतों में हमें राजनीतिक घटनाओं के बारे में सीधी जानकारी नहीं मिलती। किंतु इन स्रोतों की विषयवस्तु का विश्लेषण कर यह समझा जा सकता है कि राजनीतिक संबंध किस प्रकार स्थापित किए गए थे।

(ii) भिन्न-भिन्न राजा

सामान्यतः जब हम राजा शब्द का उपयोग करते हैं, तो हमारे मस्तिष्क में यह विचार आता है कि राजा महलों में रहता है। उसके अनेक नौकर–चाकर होते हैं। वह अत्यधिक धनी होता है। वह विशाल सेना का सेनापति होता है और उसका दरबार होता है। अक्सर हम सोचते हैं कि राजा अपनी सत्ता अपने पुत्रों को दे देता है। संभवतः सबसे बड़े पुत्र को। परन्तु राजा शब्द का हमेशा यह अर्थ नहीं होता।

ऋग्वेद में राजा शब्द का उपयोग अनेक देवताओं के विशेषण के रूप में किया गया है। कभी–कभी इसका उपयोग शक्तिशाली व्यक्तियों का उल्लेख करने के लिए भी किया गया है। ये व्यक्ति विशाल सेना अथवा विशाल प्रशासनिक प्रणाली को नियंत्रित नहीं करते थे। इनकी शक्ति का मुख्य स्रोत शायद युद्ध में नेत त्व करने से उत्पन्न होता था। आइए देखें कि युद्ध क्यों होते थे और उसके बाद क्या होता था।

(iii) युद्ध

आपको याद होगा कि ऋग्वेद इंगित करता है कि उस काल के लोग मुख्यतः किसान थे। अतः हमें पता चलता है कि कुछ युद्ध चरागाह–भूमि को लेने के लिए होते थे। अक्सर उत्तम चरागाह–भूमि नदियों के किनारे थी। युद्ध लोगों और पशुओं दोनों के लिए जल हेतु, मवेशियों तथा भूमि हड़पने, विशेष रूप से चरागाह के लिए और जल्दी से पकने वाली फसलों, जैसे बाजरा उगाने के लिए भी होते थे। इसके अतिरिक्त स्त्रियों पर अधिकार जमाने के लिए युद्ध होते थे।

ज्यादातर पुरुष ही इन युद्धों में हिस्सा लेते थे। कोई नियमित सेना नहीं होती थी, परन्तु सभाएं होती थी, जिनमें लोग सम्मिलित होते थे और युद्ध और शांति के विषयों पर चर्चाएं की जाती थीं। वे नेताओं, बहादुरों तथा योग्य लड़ाकुओं को चुनते थे। कभी–कभी वे सफलता के लिए विशेष बलि देते थे और देवताओं से प्रार्थना करते थे।

राजा द्वारा अपने लोगों को विजय दिलवाने पर क्या होता था? जीती हुई जमीन अथवा हासिल किए गए जल–स्रोतों को संभवतः सामूहिक उपयोग के लिए रखा जाता था। अन्य वस्तुएं, जैसे मवेशी और स्त्रियां, संभवतः राजाओं के समर्थकों को दी जाती थी। इनमें से कुछ उन पुजारियों को दी जाती थी जो राजा की विजय हेतु प्रार्थना करने तथा अपने राजा को विजयी बनाने में सहायता करने हेतु देवताओं का आभार प्रकट करने के लिए बलि देते थे।

ये किससे युद्ध करते थे? ऋग्वेद में अनेक कबीलों के नाम दिए गए हैं। इनमें पौरुष यादव, भरत, अनु तथा द्रुहु सम्मिलित हैं। कभी–कभी ये कबीले परस्पर संगठित हो जाते थे, परन्तु ये एक–दूसरे से युद्ध भी करते थे। स्वयं को आर्य कहने वाले ये लोग कभी–कभी दासों अथवा दस्युओं से युद्ध करते थे।

आम आदमी के लिए दो शब्दों का प्रयोग मिलता है। एक शब्द है जन, जिसका प्रयोग आज भी हिंदी और अन्य भाषाओं में किया जाता है। दूसरा शब्द है विस। अक्सर राजा का उल्लेख जन अथवा विस के राजा के रूप में किया गया है। दूसरे शब्दों में राजा का संबंध किसी राज्य अथवा किसी निर्धारित क्षेत्र से नहीं था, बल्कि वह लोगों के एक समूह का राजा होता था।

जैसा कि हमने देखा, ये राजा वैसे राजा नहीं, जिन्हें हम जानते हैं। इन्हें अक्सर राजाओं के बजाय सरदार अथवा प्रमुख कहा जाता है तथा जिस क्षेत्र पर इनका अधिकार होता है, उसे राज्य के बजाय सरदारी अथवा प्रमुख के क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जाता था।

- प्रायः प्रमुख मुखिया का चुनाव लोगों द्वारा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है, जबकि राजा वंशानुगत होता है।
- प्रमुख के पास कोई स्थायी प्रशासनिक तंत्र नहीं होता है, जो उनकी सहायता करे; वे कुटुम्ब और अन्य अनुयायियों पर आश्रित होते हैं। जबकि राजा सहायता के लिए अपने संबंधियों पर भी निर्भर रहते हैं, इसके अलावा उनके पास प्रशासनिक प्रणाली भी होती है, जिस पर वे निर्भर रहते हैं।
- प्रमुख नियमित कर एकत्र नहीं करता, वह प्रायः उन उपहारों पर निर्भर रहता है, जो उसके अनुयायी लाते थे। राजाओं को भी उपहार मिलते थे, परन्तु उनकी आय का मुख्य स्रोत कर–संग्रहण था।
- प्रमुख स्थायी सेनाएं नहीं रखते थे। वे नागरिक सेना पर आश्रित रहते थे। अर्थात जरूरत पड़ने पर लोगों को युद्ध करने के लिए बुलाया जाता था और उन्हें नियमित रूप से वेतन नहीं दिया जाता था। राजा नागरिक सेना के रूप में लोगों को भर्ती करते रहते थे, परन्तु अक्सर वे स्थायी सेनाएं भी रखते थे।

- सामान्यतः प्रमुख उन सभाओं में लोगों से बातचीत करते हैं, जहाँ लोग महत्त्वपूर्ण विषयों पर अपनी राय व्यक्त कर सकते थे। राजा भी इन सभाओं में भाग लेते थे, परन्तु ऐसा औपचारिक अवसरों पर ही होता था।

पाठगत प्रश्न 29.1

1. ऋग्वेद की रचना संभवतः __________ से __________ ई.पू. के बीच हुइ थी।
2. स्रोतों में __________ घटनाओं के बारे में हमें प्रत्यक्ष जानकारी नहीं मिलती।
3. अक्सर उत्तम चरागाह भूमियां __________ के किनारों पर होती हैं।
4. स्वयं को आर्य कहने वाले लोग अन्य लोगों से युद्ध करते थे, जिन्हें वे __________ अथवा __________ कहते थे।

29.2 प्रारंभिक राज्यः जनपद

लगभग 1000 ई.पू. से 500 ई.पू. के बीच उत्तरी भारत में अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएं हुईं। हम अब पाते हैं कि ऐसी अनेक बस्तियों का विकास हो चुका था, जो चित्रित धूसर म द्भांड संस्क ति से जुड़ी थीं, जिसके बारे में आप पाठ पांच में पढ़ चुके हैं। अन्य बातों के साथ–साथ क षि अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई थी, जन–समुदाय का विकास हो गया था तथा औजार और हथियार बनाने के लिए लोहे का उपयोग बढ़ गया था।

हमारे पास मूल ग्रंथों का विस्त त समूह भी है, जिसे हम उत्तर वैदिक साहित्य कहते हैं। इन ग्रंथों में धार्मिक अनुष्ठान, उनकी व्याख्या और विश्लेषण दिए गए हैं तथा यह उल्लेख किया गया है कि उन्हें प्रासंगिक रूप से कैसे निष्पादित किया जाता था। उनमें यह भी बताया गया है कि राजनीतिक संगठन का एक नया रूप, जिसे अक्सर जनपद कहा जाता है, अब अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो चला था।

जैसा कि स्पष्ट है जनपद शब्द की उत्पत्ति 'जन' शब्द से हुई थी, जैसा कि हमें मालूम है, जन का अर्थ है व्यक्ति। वास्तव में जनपद का अर्थ है वह स्थान, जहाँ लोग अपने समूह में रहने लगे थे और स्थायी रूप से बस गए थे। उस भूमि का नाम उनके नाम पर पड़ गया। उदाहरण के लिए, जिस भूमि पर कुरु बस गए थे वह भूमि कुरु जनपद कहलाने लगी।

जनपद की एक अन्य विशेषता थी। कि इन क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों को वर्ण के अनुसार वर्गीक त किया गया था चतुर्वर्णीय सामाजिक वर्गीकरण के बारे में आप पाठ चार में पढ़ चुके हैं।

29.3 राजा बनने के नए तरीके

जनपद के सरदार अथवा प्रमुख को राजा कहा जाता रहा। परन्तु कुछ महत्त्वपूर्ण ढंग थे, जिनमें यह राजा जन से भिन्न था। शुरुआत में हमें ये संकेत मिलते हैं कि कम से कम कुछ मामलों में अब राजा का पद वंशानुगत हो गया था। दूसरे शब्दों में, पुत्र वंशानुगत अथवा वैध रूप से अपने पिता के शासन पर दावा कर सकते थे।

दूसरे, अब हमें विस्त त धार्मिक अनुष्ठानों का उल्लेख मिलता है, जिनमें राजसूय और अश्वमेध अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। ये काफी लंबे चलते थे, कभी–कभी तो ये एक वर्ष से भी अधिक समय तक चलते थे। केवल विशिष्ट रूप से प्रशिक्षित पुजारी ही इन्हें संपन्न कर सकते थे। वैदिक साहित्य की रचना और संकलन करने वाले पुजारियों का कहना था कि इन विस्त त धार्मिक अनुष्ठानों को संपन्न करने में सक्षम व्यक्ति को ही राजा के रूप में मान्यता प्रदान की जाएगी।

ऐसी बलियों में अनेक लोग भाग लेते थे। इनमें राजा भी सम्मिलित होता था। अपनी शक्ति की घोषणा करने का यह महत्त्वपूर्ण अवसर होता था। उसका परिवार, विशेषकर उसकी पत्नियां और उसके पुत्र इस बलि में उसकी सहायता करते थे। रथ का सारथी, पारिवारिक पुरोहित, सेनापति और दूत सहित उसके अन्य सहायक भी इसमें सम्मिलित होते थे। आम जनता विस अथवा वैश्य द्वारा राजा के लिए उपहार लाने की अपेक्षा की जाती थी, जो बलि देने के लिए आवश्यक धन से अधिक होता था। पड़ोसी राजाओं को भी इसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता था। निसन्देह पुजारी ही संपूर्ण अनुष्ठान को पूरा करते थे।

क्या शुद्र इन धार्मिक अनुष्ठानों में भाग ले सकते थे? कभी–कभी उनको इन अनुष्ठानों में छोटी भूमिकाएं दी जाती थी, परन्तु अक्सर उन्हें इन धार्मिक अनुष्ठानों मे सम्मिलित नहीं होने दिया जाता था। उनमें भाग लेने वाले भी केवल अपनी भूमिका ही निभा सकते थे। उदाहरण के लिए, वैश्य पुजारी का कार्य नहीं कर सकता था, न ही राजा की पत्नी उसका स्थान ले सकती थी।

ये धार्मिक अनुष्ठान क्यों आवश्यक थे? अश्वमेध अथवा घोड़े की बलि के मामले में बलि दिए जाने वाले घोड़े को हथियारबंद लोगों के समूह के साथ एक वर्ष तक घूमने के लिए खुला छोड़ दिया जाता था। वे सब जो घोड़े को अपने राज्य में से गुजरने की अनुमति देते थे, उनके बारे में, यह समझा जाता था कि उन्होंने घोड़े के स्वामी के प्रभुत्व को मौन स्वीक ति प्रदान कर दी है।

जब घोड़े को वापस लाया जाता था, तो विस्त त धार्मिक अनुष्ठान में इसकी बलि दी जाती थी। अन्य राजाओं, पुजारियों, आम जनता सहित अनेक लोगों को इस अनुष्ठान में भाग लेने और/अथवा साक्षी होने के लिए आमंत्रित किया जाता था। भोज कराया जाता और कथा सुनाई जाती थी। दूसरे शब्दों में, यह काफी खर्चीला अनुष्ठान होता था।

ऐसा धार्मिक अनुष्ठान करने के इच्छुक किसी भी महत्त्वाकांक्षी राजा का शक्तिशाली और धनवान दोनों होना आवश्यक था। पुजारियों को बहुत अधिक बलि–शुल्क अथवा दक्षिणा दी जाती थी उसमें अन्य चीजों के अलावा घोड़े, मवेशी, सोने–चांदी की वस्तुएं, रथ, कपड़े और दास और दासियां सम्मिलित थी। अतः ऐसे धार्मिक अनुष्ठान को सफलतापूर्वक संपन्न करके राजा अपनी शक्ति की सार्वजनिक घोषणा करने के साथ–साथ अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता था। इनमें से कई धार्मिक अनुष्ठानों में अभिषेक भी सम्मिलित था। इसका अर्थ था राजा पर शुद्ध पवित्र जल छिड़कना। अक्सर पहला छिड़काव पुजारी करता था, तत्पश्चात अन्य लोग जैसे वैश्य और राजा के संबंधी भी इस प्रक्रिया में भाग ले सकते थे।

जैसा कि आप देख सकते हैं, जन–सभा द्वारा राजा के चयन का कोई प्रश्न ही नहीं था। किसी राज–परिवार में जन्मा व्यक्ति ही राजा बन सकता था। या फिर वह व्यक्ति राजा बनने की कोशिश कर सकता था, जिसके पास पर्याप्त सेना और भौतिक संसाधन हो।

29.4 प्रशासनिक प्रणाली की शुरुआत

उत्तर वैदिक साहित्य में जिन धार्मिक अनुष्ठानों का बार–बार वर्णन किया गया है, उनमें से एक है, राजसूय। यदि आप महाभारत की कहानी से परिचित हैं तो आपको स्मरण होगा कि राजसूय एक महत्त्वपूर्ण यज्ञ था, जो युधिष्ठिर द्वारा सिंहासन पर अपना दावा करने के लिए किया गया था।

राजसूय के एक भाग के रूप में 'रत्नीनाम हविमासि' नामक अनुष्ठान का उल्लेख मिलता है। यह ऐसा धार्मिक अनुष्ठान है जिसमें 'रत्नीनों' (इसका शाब्दिक अर्थ है वे लोग, जिनके पास रत्न थे) के रूप में उल्लिखित महत्त्वपूर्ण लोगों के घरों में राजा चढ़ावा भिजवाता था। इन महत्त्वपूर्ण लोगों में राजा की पत्नियां, सेना नायक, मुख्य पुजारी, सारथी तथा दूत और राजा की ओर से आहार एकत्र और प्राप्त करने वाले लोग सम्मिलित थे।

इन पदाधिकारियों को दिए जाने वाले नियमित वेतनों का कोई उल्लेख नहीं मिलता। तथापि उनके कार्यों से हम पता लगा सकते हैं कि उनमें से कुछ एक केंद्र का निर्माण करते थे, जिससे बाद में प्रशासनिक प्रणाली विकसित हुई।

29.5 राजा के लिए संसाधन

हालांकि जनपद पर राज्य करने वाला राजा ऋग्वेद में उल्लिखित राजा से कई मामलों में भिन्न था पर उसकी कई विशेषताएं उसके समान भी थी। हम पाते हैं कि इस अवधि के दौरान भी राजा द्वारा संसाधन जुटाने के मुख्य तरीके युद्ध और उपहारों की प्राप्ति ही थे।

अक्सर इन उपहारों को बलि कहा जाता था, जिनकी मांग धार्मिक अनुष्ठानों के अवसर पर की जा सकती थी उदाहरण के लिए, यदि राजा अश्वमेध यज्ञ करता था, तो वह अपने लोगों से संसाधनों की मांग कर सकता था। 'उपहार' शब्दों से लगता है कि वह स्वेच्छा से दी गई भेंट हैं, परन्तु उपहार देने के लिए लोगों को मजबूर भी किया जाता था।

हम पाते हैं कि इन ग्रंथों में राजा और प्रजा के बीच संबंधों का उल्लेख करने के लिए अनेक नई उपमाओं का उपयोग किया है। राजा का उल्लेख भोजनकर्ता अथवा हिरण के रूप में तथा प्रजा का उल्लेख 'भोजन' अथवा 'चारे' के रूप में मिलता है। इससे पता चलता है कि नियमित करों की मांग न किए जाने के बावजूद अक्सर लोगों का शोषण किया जाता था।

तथापि लोगों को राजा का समर्थन पाने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह उन्हें अन्य राजाओं से बचाने में समर्थ और इच्छुक दोनों हैं, राजा को भेंट देनी पड़ती थी।

ऋग्वेद के राजा और उत्तर वैदिक परंपरा के राजा में एक और समानता यह थी कि दोनों ही सशस्त्र सहायता के लिए नागरिक सेना पर आश्रित थे तथा आप सोच सकते हैं कि राजा स्थायी सेना रखने में समर्थ क्यों नहीं था?

29.6 महाजनपद

लगभग 500 ई.पू. तक कुछ जनपद अन्य जनपदों की तुलना में अत्यधिक शक्तिशाली बन गए थे और अब वे महाजनपद कहलाते थे। हमें बौद्ध और जैन ग्रंथों में 16 महाजनपदों की सूची मिलती है। इनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण महाजनपद और उनकी राजधानियां मानचित्र में दर्शाई गई हैं (क पया पुस्तक 1 में पाठ 5 में तालिका सं. 5.1 और मानचित्र 5.1 देखें) चार जनपद विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण थे। वे थे कोसल, अवन्ति, वज्जि और मगध। इनमें से अंततः मगध सबसे शक्तिशाली जनपद बन गया। उपमहाद्वीप के इतिहास में पहला ज्ञात साम्राज्य मौर्य साम्राज्य था, जिसका केंद्र मगध में था। महाजनपद जनपदों से कई प्रकार से भिन्न थे। आइए, इनमें से कुछ भिन्नताओं पर नजर डालें।

29.7 किलेबंद शहर

लगभग सभी महाजनपदों की राजधानी होती थी। जनपदों की बस्तियों के विपरीत इनमें से कई राजधानियां किलेबंद थी। इसका अर्थ है कि इनके चारों ओर लकड़ी, ईंट अथवा पत्थर की विशाल दीवारें बनी हुई थी।

हमारे पास इन शहरों में रहने वाले लोगों के बारे में कुछ जानकारी है। इन लोगों में राजा और उसके समर्थक तथा शिल्पकार, सौदागर, व्यापारी और छोटे दुकानदार जैसे अन्य लोग सम्मिलित थे। इन शहरों में रहने वाले कुछ लोग धनी व्यक्ति थे। आज हम जिन कई शहरों को जानते हैं, वे इसी अवधि में विकसित हुए थे। इनमें मथुरा, वाराणसी, वैशाली और पाटलिपुत्र जैसे शहर शामिल हैं। इन शहरों में लोहे के औजार के उपयोग से क षि में विकास जारी रहा। जिससे अब और अधिक अनाज उत्पन्न करना संभव हो गया था।

शायद किले इसलिए बनाए गए थे कि इन शहरों में रहने वाले कुछ लोग आक्रमणों से डरते थे और उन्हें बचाव की आवश्यकता थी। यह भी संभव है कि कुछ राजा को दर्शाना चाहते थे कि वे इतने धनी और शक्तिशाली हैं कि वे अपने शहरों के चारों ओर विशाल बड़ी भव्य दीवारें बनवा सकते हैं।

ऐसी विशाल दीवारों का निर्माण करने के लिए बड़ी योजनाएं बनाने की आवश्यकता थी। लाखों नहीं बल्कि हजारों पत्थर की ईंटें बनानी पड़ी होंगी। इसके लिए पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के रूप अनेक मजदूर में उपलब्ध कराए गए होंगे। और निसन्देह इन सबका भुगतान करने के लिए धन एकत्र करना पड़ा होगा।

29.8 नई सेनाएँ

हमारे पास उपलब्ध प्रमाणों से पता चलता है कि लगभग 330 ई.पू. तक इन महाजनपदों में से कुछ में अलग–अलग ढंग से सेनाएं संगठित की गई थी। यह वह काल था जब उत्तरी ग्रीस के मकदूनिया के शासक सिकंदर ने विश्व विजय की यात्रा प्रारंभ करने का निर्णय लिया था। जैसी उम्मीद लगाई गई थी। वह विश्व पर विजय हासिल नहीं कर पाया। तथापि उसने मिस्त्र के भाग, पश्चिम एशिया पर विजय हासिल की तथा वह भारतीय उपमहाद्वीप में व्यास के किनारे तक आ पहुंचा।

जब वह पूर्व की ओर बढ़ना चाहता था तो उसके सैनिकों ने इंकार कर दिया। वे भयभीत थे क्योंकि उन्होंने सुन रखा था कि भारत के राजाओं के पास विशाल पैदल सैनिक, रथ और हाथी थे।

ये सेनाएं उन सेनाओं से भिन्न थी, जिनका पहले उल्लेख किया गया है। राजा द्वारा नई सेना के सैनिकों को नियमित वेतन दिया जाता था और उन्हें पूरे साल रखा जाता था। हमें यह भी पता चलता है कि हाथियों का व्यापक पैमाने पर उपयोग किया जाता था। हाथियों को पकड़ना, उन्हें पालतू बनाना और प्रशिक्षित करना मुश्किल है। इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि अब सेनाएं पहले से बहुत अधिक सुसज्जित और संगठित हो गईं। ऐसी विशाल सेनाओं को रखने के लिए जनपदों की साधारण सेनाओं के लिए अपेक्षित संसाधनों से कहीं अधिक संसाधनों की जरूरत थी।

हमें बौद्ध ग्रंथों से पता चलता है कि मगध के शासकों ने सर्वोत्तम सेनाएं गठित की थी। उन्होंने राज्य के जंगलों में पाए जाने वाले हाथियों का उपयोग किया। उन्होंने अपने राज्य की खानों से प्राप्त लोहे का भी उपयोग किया। इससे सेना को मजबूत हथियार उपलब्ध कराए गए।

महत्त्वाकांक्षी शासकों के नेत त्व वाली सुसज्जित सेना का अर्थ था कि मगध का राजा शीघ्र अन्य राजाओं पर विजय प्राप्त कर सकता था और पड़ोसी राज्यों पर नियंत्रण कर सकता था। कुछ मामलों में शासकों ने प थ्वी पर और नदियों के साथ–साथ संचार के मार्गों पर नियंत्रण करने की कोशिश की। अन्य मामलों में उन्होंने भूमि पर, विशेष रूप से उपजाऊ क षि योग्य भूमि पर नियंत्रण करने की कोशिश की, चूँकि वह अधिक संसाधन प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण स्रोत थी।

पाठगत प्रश्न 29.2

रिक्त स्थान भरिए:

1. लगभग सभी महाजनपदों में एक ___________ शहर था।
2. ऐसी विशाल दीवारों का निर्माण करने के लिए ___________ की आवश्यकता थी
3. इन शहरों ने लोहे के औजारों के उपयोग से क षि में विकास जारी रखा। जहाँ अब ___________ और अधिक ___________ करना संभव हो गया।
4. सिकंदर ने मिस्र के भाग, पश्चिम एशिया पर विजय हासिल की और भारतीय उपमहाद्वीप में ___________ के किनारे तक आ पहुंचा।

29.9 नियमित विभिन्न कर

चूंकि महाजनपदों के शासक विशाल किले बनवा रहे थे और बड़ी सेनाएं रख रहे थे, अतः इसके लिए उन्हें धन की नियमित आपूर्ति की आवश्यकता थी, इसलिए कर एकत्र करना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो गया था।

- फसलों पर कर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण था। ऐसा इसलिए था क्योंकि ज्यादातर लोग

किसान थे। वे अक्सर अपनी भूमि और फसलों को बचाने के लिए राजाओं पर आश्रित रहते थे। आम तौर पर भूमि के उत्पादन का 1/6वां भाग कर के रूप में निर्धारित किया गया। यह कर 'भाग' के रूप में जाना जाता था।

- शिल्प पर भी कर लगाया गया था। यह कर श्रम के रूप में होता था। उदाहरण के लिए, एक बुनकर अथवा लुहार को प्रत्येक महीने में एक दिन सरकार के लिए काम करना पड़ता था। चरवाहों से भी कर–अदायगी अपेक्षित थी।
- व्यापार के माध्यम से खरीदी और बेची जाने वाली वस्तुओं पर भी कर लगाया जाता था।

निःसन्देह राजा को कर एकत्रित करने के लिए कई अधिकारियों और उनका वेतन देने के लिए अधिक धन की आवश्यकता थी। कुछ कर वस्तुओं, जैसे – अनाज, मवेशी अथवा शिल्पकारों द्वारा निर्मित वस्तुओं के रूप में एकत्र किए जाते थे। कभी–कभी ये कर नकद भी एकत्र किए जाते थे। वास्तव में प्रारंभ के कुछ सिक्के इसी अवधि के थे।

29.10 मगध और उसके शासक

मगध लगभग दो सौ वर्षों में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण महाजनपद बन गया था। यह आंशिक रूप से मगध की सेना के कारण हुआ था। इसके अतिरिक्त, मगध नदियों से घिरा था, जिसमें गंगा और सोन नदी सम्मिलित थी। परिवहन, जल आपूर्ति और ऊपजाऊ भूमि के लिए उनका बहुत महत्त्व था।

मगध के दो अत्यधिक शक्तिशाली राजा हुए–बिम्बिसार और उसका पुत्र अजातशत्रु, जिन्होंने प्रतिद्वंद्वियों और अन्य जनपदों पर विजय हासिल करने के लिए सभी संभावित साधनों का उपयोग किया। कभी–कभी वे अपने पड़ोसी शासकों से विवाह–संबंध स्थापित करते। अन्य मामलों में वे सेनाओं का नेत त्व करते और पड़ोसी राज्यों पर वस्तुतः विजय प्राप्त करते थे।

महापद्मनाद मगध का एक अन्य महत्त्वपूर्ण राजा था। उसने उपमहाद्वीप के उत्तर पश्चिमी भाग तक अपने शासन का विस्तार किया। संभव है सिकंदर के सैनिकों ने इसकी विशाल सेना के बारे में सुन रखा हो। हमने मगध के राजाओं को व्यापक–पैमाने पर बलियां देते नहीं सुना है। क्या आप सोच सकते हैं कि ऐसे विस्त त धार्मिक अनुष्ठान संपन्न क्यों नहीं किए गए?

29.11 गण संघ

एक ओर जहाँ अनेक महाजनदों पर विशिष्ट राजाओं द्वारा शासन किया जाता था। वहीं दूसरी ओर कुछ जनपद विभिन्न प्रकार की सरकार के अधीन थे और गण संघ कहलाते थे। यहाँ एक नहीं, बल्कि अनेक शासक होते थे। दिलचस्प बात यह है कि कभी–कभी हजारों व्यक्ति एक साथ शासन करते थे और उनमें से प्रत्येक व्यक्ति राजा कहलाता था।

ये राजा एक साथ धार्मिक अनुष्ठान संपन्न करते थे। ये धार्मिक अनुष्ठान वैदिक बलियों जैसे नहीं थे। वे सभाओं में मिलते थे और चर्चाओं और वाद–विवादों के माध्यम से क्या

किया जाए और कैसे किया जाए, इसका निर्णय करते थे। उदाहरणणण के लिए, यदि शत्रु द्वारा इन पर आक्रमण किया जाता, तो वे इस चुनौती का सामना करने के लिए क्या किया जाए इस पर चर्चा करने के लिए अपनी सभा बुलाते थे। हम पाते हैं कि स्थायी सेनाएं रखने की बजाय सभी राजा अपने अनुचरों के साथ मिलकर आवश्यकता पड़ने पर सेना का गठन करते थे।

गण संघों की सारी जमीन के स्वामी सभी राजा मिलकर होते थे। उस पर अधिकार कर लिया जाता था। उन्हें अक्सर इस भूमि को जोतने के लिए दास और मजदूर मिलते थे, जिन्हें दास कर्मकार कहा जाता था। इन स्त्री–पुरुषों को कुछ खाना, कपड़े और मकान दिए जाते थे, परन्तु जो भी कुछ ये उत्पन्न करते, उसे राजा और उसके रिश्तेदार ले लेते थे।

सबसे अधिक प्रसिद्ध गण संघों में मल्ल और वज्जि थे। वज्जि गण संघ महाजनपद था और इसकी राजधानी प्रसिद्ध शहर वैशाली थी, बुद्ध और महावीर दोनों गण संघ के थे। गण संघों में जीवन के सजीव विवरण बौद्ध ग्रंथों में देखे जा सकते हैं।

इस प्रकार आपने देखा कि सभी महाजनपदों में समान प्रकार की सरकार नहीं थी।

पाठगत प्रश्न 29.3

1. सबसे अधिक शक्तिशाली जनपद कौन–सा था?

2. मगध की सेनाओं द्वारा मार्गों पर नियंत्रण करने के लिए परिवहन और संचार के कौन–कौन से साधन उपयोग में लाए जाते थे?

3. राजा द्वारा क षि की फसल पर कितना कर लिया जाता था?

4. मगध के किन्हीं दो शक्तिशाली राजाओं के नाम बताइए?

आपने क्या सीखा

राज्य के गठन के सूत्र प्रारंभिक वैदिक काल में ढूंढे जा सकते हैं, जब सरदारी से धीरे–धीरे राज्य के गठन का मार्ग प्रशस्त हुआ। चरागाह भूमि के लिए युद्ध के परिणामस्वरूप ऐसा हुआ। ये युद्ध एक कबीले द्वारा दूसरे कबीले से या एक कबीलाई समूह द्वारा दूसरे समूह से लड़े गए। प्रारंभिक राज्य को जनपद कहा जाता था, जिनसे धीरे–धीरे महाजनपद बने जिनमें पत्थर की चारदीवारी, अनेक नौकर–चाकर और विशाल सेनाएं होती थी। राजा अथवा प्रमुख जन कहलाने वाले सामान्य लोग कई रूपों में भिन्न थे।

धीरे–धीरे राजा का पद वंशानुगत बन गया। उसके पास विशाल सेना होती थी जिसे रखने के लिए भारी व्यय की आवश्यकता होती थी। इस व्यय को फसलों, शिल्पों और वस्तुओं पर लगाए गए करों से पूरा किया जाता था। एक दिलचस्प संकल्पना थी, गण संघों की, जिसका अर्थ था कई राजाओं का राज्य। ये राजा मिलकर धार्मिक अनुष्ठान संपन्न करते थे। वे सभाएं बुलाते और निर्णय करते कि क्या किया जाए? गण संघों की भूमि पर सभी राजाओं का संयुक्त स्वामित्व होता था।

पाठांत प्रश्न

1. ऋग्वेद क्या है?
2. युद्ध क्यों लड़े जाते थे?
3. 'सरदारी' और 'बादशाहत' में अंतर बताइए?
4. ऋग्वेद में उल्लिखित किन्हीं चार वंशों के नाम बताइए।
5. राजा बनने के नए तरीकों का उल्लेख कीजिए।
6. कर एकत्र करना क्यों महत्त्वपूर्ण था? उल्लेख कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

29.1

1. 1800–1000 ई.पू.
2. राजनीतिक
3. नदियों
4. दास, दस्यु

29.2

1. राजधानी
2. योजना
3. अनाज उत्पन्न करना
4. व्यास नदी

29.3

1. मगध

2. भूमि पर और नदियों के साथ
3. 1/6
4. बिम्बिसार, अजातशत्रु और महापद्मनंद (कोई दो)

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. देखें अनुच्छेद 29.1.2
2. देखें अनुच्छेद 29.1.(iii)
3. देखें अनुच्छेद 29.1.(iii) शेष पांच बिंदु
4. देखें अनुच्छेद 29.1.(iii)
5. देखें अनुच्छेद 29.3
6. देखें अनुच्छेद 29.5

29

समसामयिक सांस्कतिक स्थिति

कल्पना करें, आप एक सुबह जागते हैं और खुद को एक अलग देश में पाते हैं, जहां लोग ऐसी भाषा बोलते हैं जिसे आप नहीं समझते, अलग तरह के कपड़े पहनते हैं और वैसा खाना खाते हैं जिसके आप आदी नहीं। जब तक आप उनके व्यवहार के तरीके नहीं सीख लेते, तब तक शायद आपको अपना जीवित रहना असंभव लगे। व्यवहार के ये तरीके अन्य चीजों के साथ मिलकर हमारी संस्कति का निर्माण करते हैं।

जैसा कि आप देखेंगे, हम सब संस्कृतियों में पैदा होते हैं। यह हमारे क्षेत्र, धर्म और जाति या वर्ग के अनुसार भिन्न हो सकती है। बड़े होने पर हममें से प्रत्येक व्यक्ति स्वतः लगभग दर्जनों सांस्कृतिक प्रथाएं आत्मसात कर लेता है। इनमें से अनेक प्रथाएं हमें पीढ़ियों से और उनमें से कुछ शताब्दियाँ से सौंपी जाती रही हैं, बल्कि कुछ तो सहस्राब्दियाँ पुरानी परंपराएं हैं। पर साथ ही, सांस्कृतिक प्रथाएं बदलती भी रहती है। इस पाठ में हम संस्कति के साथ अपने रिश्ते की पड़ताल करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आपः

- संस्कति को परिभाषित कर सकेंगे;
- संस्कति कैसे आकार लेती है, इसका विश्लेषण कर सकेंगे;
- सांस्कतिक अंतःक्रिया को स्पष्ट कर सकेंगे और
- वैश्वीकरण की घटना का समीक्षात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।

29.1 संस्कति से हमारा क्या तात्पर्य है

सांस्कतिक अभिव्यक्ति के रूप

जब हम रेडियो अथवा टीवी या मंच पर कोई सांस्कतिक कार्यक्रम सुनते अथवा देखते हैं तो उसमें आम तौर पर संगीत, गीत और नत्य शामिल होते हैं। इनमें से प्रत्येक

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक रूप है। ऐसा प्रत्येक रूप एक संदेश देता है। उदहारण के लिए, ध्यान में लीन बुद्ध की मूर्ति (चित्र 29.1) का आशय अमन और शांति की भावनाओं को बढ़ावा देना हो सकता है। लोकगीत/लोककथा शिक्षा और मनोरंजन प्रदान कर सकते हैं, जबकि कुतुब मीनार (29.2) जैसे बुलंद स्मारक हमें हैरानी में डाल सकते हैं। दूसरे शब्दों में, संस्कति तरह–तरह के विचार संप्रेषित करने के लिए इस्तेमाल की जा सकती है। इसके और उदाहरण हम पाठ संख्या 31 में देखेंगे।

चित्र 29.1 बुद्ध

29.2 कुतुब मीनार

भारत में हमें सांस्कतिक रूपों की एक व्यापक श्रंखला मिलती है। इनमें से कुछ– मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला, साहित्य और संगीत हैं। इनमें प्रत्येक में बहुत विविधता है। उदाहरण के लिए, अगर हम गीतों के बारे में विचार करें तो हम तुरंत उनकी कई किस्मों के बारे में सोच सकते हैं, जैसे लोकगीत, फिल्मी गीत, भजन, कव्वालियाँ आदि। हर प्रकार के गीत विशेष अवसर पर गाए जाते हैं और उनका खास प्रयोजन होता है। साथ ही, आपने ध्यान दिया होगा कि कुछ फिल्मी गीत असल में भजन हैं या लोकधुनों पर आधारित हैं। आपके खयाल में कोई फिल्मी भजन मंदिर में भक्तों द्वारा गाए जाने वाले भजन से किस रूप में अलग होता है?

29.2 लोकप्रिय अथवा लोक-संस्कति

आम लोगों ने समद्ध सांस्कतिक परंपराएँ विकसित कर ली हैं जिन्हें 'लोकप्रिय' कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'लोगों की'। लोगों ने गीत, नत्य और कथावाचन के जरिए स्वयं को अभिव्यक्त किया है और सांस्कतिक मूल्य संप्रेषित किए हैं। इन सबसे लोक–संस्कति का निर्माण होता है।

अपने सीमित भौतिक संसाधनों के कारण आम आदमी भव्य स्मारक नहीं बना सकते, पर वे छोटी–छोटी अनगिनत वस्तुएँ बना सकते हैं और उनका उपयोग कर सकते हैं, जो अत्यंत सुंदर होती हैं। इनमें से कुछ वस्तुएँ रोजमर्रा की गतिविधियों में इस्तेमाल की जाती हैं तो अन्य वस्तुएँ खास अवसरों के लिए सुरक्षित रहती हैं। दुर्भाग्य से उनमें प्रयुक्त अधिकांश सामग्री नाशवान होती है जैसे बेंत, कपड़े, लकड़ी, पत्ते या मिट्टी के बर्तन/इसलिए ये वस्तुएँ ज्यादा दिनों तक नहीं चलतीं। अतः हम प्राचीन काल से आम आदमी की संस्कृतियों के बारे में बहुत कम जानते हैं।

चित्र 29.3 कैलाशनाथ मन्दिर

29.3 शास्त्रीय संस्कति

भरतनाट्यम जैसे नत्य के रूप अक्सर शास्त्रीय कहे जाते हैं। इसका मतलब है कि यह कलात्मक अभिव्यक्ति का उत्कष्ट रूप है। इसी प्रकार कालिदास को शास्त्रीय संस्कत कवि का उदाहरण माना जाता है। चोल राजाओं द्वारा निर्मित मंदिर शास्त्रीय मंदिर–वास्तुकला के उदाहरण माने जाते हैं, इसी प्रकार ताजमहल (चित्र 29.4) मुगल वास्तुकला का उदाहरण है।

चित्र 29.4 ताजमहल

हमारा इन उपलब्धियों पर गर्व करना उचित है। लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि जिस समय कालिदास लिख रहे थे (चौथी शताब्दी में,) उस समय उत्तर और मध्य भारत में ज्यादातर लोग प्राकत भाषा (जिससे अनेक आधुनिक भारतीय भाषाएँ विकसित हुई हैं) के विभिन्न रूप बोल रहे थे। जहाँ उन्होंने कालिदास के नाटकों के प्राकत अंशों को समझ लिया होगा, वहीं उनके संस्कत श्लोकों को समझ पाने में वे असमर्थ रहे होंगे।

इसी प्रकार आम आदमी के लिए उन उत्कष्ट स्मारकों में प्रवेश करना कति रहा होगा, जिनका अभी हमने उल्लेख किया है। उनमें प्रवेश जाति या धर्म के आधार पर प्रतिबंधित रहा होगा।

इस प्रकार शास्त्रीय संस्कृति की प्रवत्ति अत्यधिक विकसित किंतु विशिष्ट होने की होती है। अभी लगभग पिछली दो शताब्दियाँ से ही संस्कत कतियों का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद होने लगा है और स्मारक आम जनता के लिए खोले जाने लगे हैं।

शताब्दियाँ से लोक और शास्त्रीय संस्कति का सह–अस्तित्व रहा है और दोनों अंतः क्रिया करती रही हैं। दोनों ने एक–दूसरे से विचार लिए और अपनाए हैं।

मानवविज्ञानी संस्कति को कैसे परिभाषित करते हैं

मानवविज्ञान का शाब्दिक अर्थ है, मानवों का अध्ययन। सांस्कतिक और सामाजिक मानवविज्ञानी वर्तमान समय के समाजों का अध्ययन करते हैं जिसमें उनके कर्मकांड, विश्वास, सामाजिक रीति–रिवाज, कार्य का प्रतिरूप आदि शामिल हैं। इसलिए जब मानवविज्ञानी संस्कति के बारे में लिखते हैं, तो वे इनमें से कुछ या सब पहलुओं को शामिल करते हैं।

पुरातत्वेत्ता और संस्कति

अपनी तरह खाने–पहनने वाले लोगों के साथ हम अक्सर कुछ समानता महसूस करते हैं, जबकि अपने से भिन्न तरीके से खाने–पहनने वाले लोगों को हम किसी अलग संस्कृति के प्राणी समझते हैं। संस्कति की यह परिभाषा पुरात्तवेताओं द्वारा दी जाने वाली परिभाषा से बहुत मिलती है। पुरातत्ववेत्ता घरों, औजारों, बर्तनों, प्रतिमाओं आदि का अध्ययन करता है और पुनर्रचना करने की कोशिश करता है कि अतीत में लोग कैसे रहते थे। चूँकि ये सब वस्तुएँ देखी और छुई जा सकती हैं और कमोबेश स्थाई होती हैं, अतः उन्हें हमारी भौतिक संस्कति का अंग माना जाता है। हमारी भौतिक संस्कति के कुछ पहलुओं की उत्पत्ति के बारे में आप अगले पाठ में और पढ़ेंगे।

हालाँकि कपड़े और भोजन भी हमारी भौतिक संस्कति के अंग हैं, पर वे तेजी से नष्ट हो जाते हैं। इसलिए हालाँकि पुरातत्ववेत्ता अक्सर प्रारंभिक कालों में इस्तेमाल किए गए भोजन और वस्त्रों के अवशेष प्राप्त कर लेते हैं, पर वे आम तौर पर बर्तन, औजार या हथियार जैसी चीजों की तुलना में कम होते हैं।

तो हम देख सकते हैं कि संस्कति कई तरीकों से परिभाषित की जा सकती है :

(क) सांस्कतिक अभिव्यक्ति के रूपों में (जैसे गीत, संगीत, नत्य, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला आदि)

(ख) किसी सांस्कतिक रूप को प्रस्तुत या इस्तेमाल करने वाले सामाजिक समूह के अनुसार (जैसे लोकप्रिय/लोक, शास्त्रीय/अभिजात)

(ग) सामाजिक, धार्मिक और भौतिक जीवन के पहलुओं के अनुसार व्यापक परिभाषाएँ।

क्या आपने ध्यान दिया कि किस तरह ये परिभाषाएँ एक–दूसरे पर व्याप्त हो रही हैं? इस मकान कमी तस्वीर (चित्र 29.5) पर नजर डालें। इसके रूप के अनुसार हम इसे (मूर्तिकला या संगीत के बजाय) वास्तुकला के उदाहरण के तौर पर वर्गीकृत करेंगे। पर साथ ही यह लोक–संस्कति का भी उदाहरण है, क्योंकि यह उन लोगों की भौतिक

चित्र 29.5 एक मकान

संस्कति का अंग है जिन्होंने इसे बनाया और इसमें रहे। अन्य उदाहरण : अजंता के चित्र शास्त्रीय धार्मिक चित्र के रूप में वर्गीकृत किए जा सकते हैं। अगले पाठ में आप बढ़ेंगे कि सांस्कतिक रूप कैसे प्रस्तुत किए जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 29.1

1. निम्नलिखित का मिलान करो:

(क) नृत्य	संस्कत काव्य
(ख) ताजमहल	सांस्कतिक अभिव्यक्ति का रूप
(ग) कालिदास	मुगल वास्तुकला
(घ) मानवविज्ञान	भौतिक संस्कति
(च) पुरातत्ववेत्ता	सामाजिक रीति–रिवाज

2. सही या गलत का निशान लगाएँ :

(1) फिल्मी गीत कभी लोकधुनों पर आधारित नहीं होते।

(2) कथावाचन लोकधुनों का अंग है।

(3) कर्मकांड हमारी संस्कति का अंग नहीं हैं।

(4) मकान, कपड़े और भोजन हमारी भौतिक संस्कति के अंग हैं।

(5) लोक और शास्त्रीय संस्कृतियों ने एक–दूसरे को प्रभावित नहीं किया।

29.4 संस्कृति कैसे आकार लेती है

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के हमारे कुछ सबसे भव्य रूप धर्म से जुड़े हैं। वास्तुकला में साँची (मध्य प्रदेश) के स्तूप, ऊपर वर्णित दक्षिण भारत के मंदिर और साथ ही दिलवाड़ा (राजस्थान) के भी, और दिल्ली की जामा मस्जिद (देखिए चित्र) धार्मिक प्रयोजनों से निर्मित सुंदर संरचनाएँ हैं।

चित्र 29.6 सांची स्तूप

धर्म युगों–युगों से हमारे कुछ सर्वोत्तम काव्यों और संगीत का भी प्रेरक रहा है। इनमें वैदिक ऋचाएँ, बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियों की रचनाएँ और, शायद सर्वाधिक प्रसिद्ध, भक्तों और सूफी संतों की कतियाँ शामिल हैं।

तमिलनाडु में वैष्णव और शैव भक्ति–साहित्य की समद्ध और सतत परंपरा रही है, जिसमें आंडाल जैसी महिलाओं की रचनाएँ भी शामिल हैं। सुप्रसिद्ध प्राचीनतम कश्मीरी कवियों में से एक लाई देद थी, जो चौदहवीं शताब्दी की महिला संत थी।

आज मीरां बाई, गुरु नानक और कबीर जैसे मध्यकालीन संत–कवि अपने–अपने क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि पूरे भारत में सम्मान पाते हैं। उनके संत छोटी मानी जाने वाली जातियों के थे और आम आदमी की भाषा इस्तेमाल करते थे। उनकी रचनाएँ, जो हमारी लोक–संस्कृति का अंग हैं, शताब्दियों तक मौखिक रूप से संप्रेषित होती रहीं।

हमारे धार्मिक विश्वास भी हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं। कभी–कभी हमारे वैवाहिक अनुष्ठान, भोजन और पहनावा धार्मिक नियमों से संचालित होते हैं। लेकिन अक्सर हमारा खानपान, पहनावा या वैवाहिक रीति–रिवाज धर्म के बजाय क्षेत्रों के अनुसार भिन्न होते हैं। एक सरल उदाहरण लें। पंजाब में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई और सिख महिलाएँ आम तौर पर सलवार–कमीज पहनती हैं, जबकि तमिलनाडु में हिंदू, मुस्लिम और ईसाई महिलाएँ आम तौर पर साड़ी पहनती हैं। इस तरह हमारे धार्मिक विश्वास हमारी सांस्कृतिक प्रथाओं को आकार अवश्य देते हैं, पर ऐसा करने वाले वे अकेले कारक नहीं हैं।

चित्र 29.7 दिलवाड़ा का मंदिर

चित्र 29.8 जामा मस्जिद

29.5 हमारी सामाजिक और आर्थिक स्थिति

हमारी अनेक सांस्कृतिक प्रथाएँ हमारी सामाजिक और आर्थिक स्थिति से प्रभावित होती हैं। उदाहरण के लिए, हमारी सामाजिक स्थिति हमारे पहनावे को प्रभावित कर सकती है। आपने देखा होगा कि विवाहित, अविवाहित और विधवा महिलाओं से अलग–अलग तरह के कपड़े पहनने की अपेक्षा की जाती है।

कभी–कभी हमारी सांस्कृतिक प्रथाएँ हमारी सामाजिक और आर्थिक दोनों स्थितियों से प्रभावित हो सकती हैं। इसमें संगीत संबंधी हमारी रुचि और प्राथमिकता जैसी चीजें आती हैं, जैसे हमें लोकगीत पसंद हैं या फिल्मी गीत, शास्त्रीय संगीत पसंद है या फिर पश्चिमी पॉप संगीत/हिंदी फिल्मों के गाने हम रेडियो वगैरह पर ही सुनकर तेजी से सीख सकते हैं, जबकि शास्त्रीय संगीत कहीं ज्यादा कठिन और महँगा है। इसमें ज्यादा समय भी लगता है और हममे से अनेक लोगों के लिए उतना समय निकालना कठिन हो सकता है।

हमारे द्वारा बनाई और इस्तेमाल की जाने वाली सांस्कृतिक वस्तुएँ भी अक्सर हमारे आर्थिक संसाधनों द्वारा सीमित होती हैं। हममें से कोई चाहकर भी ताजमहल नहीं बना सकता था। यह केवल एक बड़े और समद्ध साम्राज्य के शासक शाहजहाँ के लिए ही संभव था।

> शाहजहाँ ने ताजमहल का निर्माण अपनी बेगम मुमताज महल की याद में 1632 में शुरू कराया था। इस स्मारक को बनने में लगभग बाईस वर्ष लगे, वह भी तब जबकि उसके निर्माण के प्रारंभिक चरणों में बीस हजार मजदूर रोजाना काम करते थे। उसके निर्माण की लागत चार करोड़ रुपए थी, जो उस समय की एक बड़ी भारी रकम थी।

चित्र 29.9 जोधपुर का किला

चित्र 29.10 जयपुर का किला

असल में जितने भी भव्य किले, महल और धार्मिक स्मारक हमें दिखाई देते हैं (देखिए चित्र, जोधपुर/जयपुर), उनमें से ज्यादातर शासकों द्वारा बनवाए गए हैं। शाही निवास स्थानों या पूजा–स्थलों के रूप में काम आने के अलावा वे अपने बनाने वालों की सत्ता और महिला उजागर करने का प्रयोजन भी पूरा करते थे। बहरहाल, यद्यपि भौतिक संसाधनों का महत्व है, पर वे हमेशा निर्णायक नहीं होते। मीरां बाई ने अपने आध्यात्मिक लक्ष्य पूरे करने के लिए चितौड़ के महल की धन–संपदा और शानोशौकत त्यागकर बेघरबार और आजादी का जीवन अपना लिया था। आज हम उनके गीतों को याद करते हैं, उसके पति को नहीं।

पाठगत प्रश्न 29.2

1. रिक्त स्थानों भरें :

    1. __________ का स्तूप धार्मिक वास्तुकला का उदाहरण है।
    2. वैदिक ऋचाएँ __________ संगीत का एक रूप हैं।
    3. __________ तमिलनाडु की प्रसिद्ध महिला संत थी।
    4. __________ सुप्रसिद्ध कश्मीरी कवियों में से एक है।
    5. भक्तों और सूफी संतों ने __________ की भाषा में कविताएँ लिखीं।
    6. ये कविताएँ __________ रूप में संप्रेषित हुईं।

7. हमारा पहनावा __________ के बजाय __________ के अनुसार भिन्न होता है।
8. किले और महल __________ द्वारा बनाए गए।

29.6 सांस्कृतिक अंतः क्रिया

हमारी संस्कृति अक्सर अंतः क्रिया की प्रक्रिया के जरिए आकार लेती है। ऐसा तब होता है जब विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं वाले लोग एक–दूसरे के संपर्क में आते हैं। यह संपर्क सौदागरों और व्यापारियों की खोजों और यात्राओं के जरिए घटित होता है या तब होता है जब आक्रमण–कर्ता किसी देश पर चढ़ाई करते हैं। यह तब भी घटित होता है जब यात्री या तीर्थ यात्री सुदूर देशों की यात्राएँ करते हैं, और जब कारीगर तथा मजदूर स्त्री–पुरुष रोजगार की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह आते–जाते हैं।

इन अंतः क्रियाओं में संलग्न लोग विभिन्न लोगों की प्रथाएँ सीखते हैं और अपने खुद के विचार नई जगहों पर ले जाते हैं। इस अंतः क्रिया में सहभागिता करने वाले समस्त लोगों की सांस्कृतिक प्रथाएँ बदलने लगती हैं।

भोजन का उदाहरण लें। क्या आप जानते हैं कि भारत में आलू और टमाटर जैसी सब्जियाँ लगभग पाँच सौ साल पहले पुर्तगाली व्यापारियों और सैनिकों द्वारा लाए गई थीं, जो वे मध्य अमेरिका से लेकर आए थे, और चाय चीन से आई है? अन्य खाद्य पदार्थ, जैसे चावल और दाल जो हम इस्तेमाल करते हैं, और सरसों व तिल जैसे तिलहन भारत में पाँच हजार सालों से उगाए जा रहे हैं।

अगर आप अपने आज के भोजन पर नजर डालें, तो पाएँगे कि वह परंपरागत रूप से उपलब्ध भोजन और बिलकुल हाल में जुड़ी चीजों का मिश्रण है। साथ ही, विश्व के अन्य भागों, जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन में रहने वाले लोगों में भारतीय भोजन के लिए स्वाद विकसित हो गया है, विशेषकर करी और कबाब के लिए। आगे आने वाले पाठों में आप सांस्कृतिक अंतः क्रिया और उसके प्रभावों के और उदाहरण देखेंगे।

पाठगत प्रश्न 29.3

सही या गलत का निशान लगाएँ :

1. सौदागरों के नए देशों की यात्रा करने पर सांस्कृतिक अंतः क्रिया घटित हो सकती है।
2. हमले सांस्कृतिक अंतः क्रिया की ओर अग्रसर नहीं करते।
3. चाय मध्य अमेरिका में उगाई जाती थी।
4. सरसों और तिल भारत में पुर्तगालियों द्वारा लाए गए थे।
5. करी ग्रेट ब्रिटेन में लोकप्रिय है।

29.7 वैश्वीकरण

उस प्रक्रिया का उल्लेख अक्सर वैश्वीकरण के रूप में किया जाता है, जिसके द्वारा संपूर्ण विश्व को एक एकल आर्थिक और सांस्कृतिक तंत्र के तहत लाया जा रहा है।

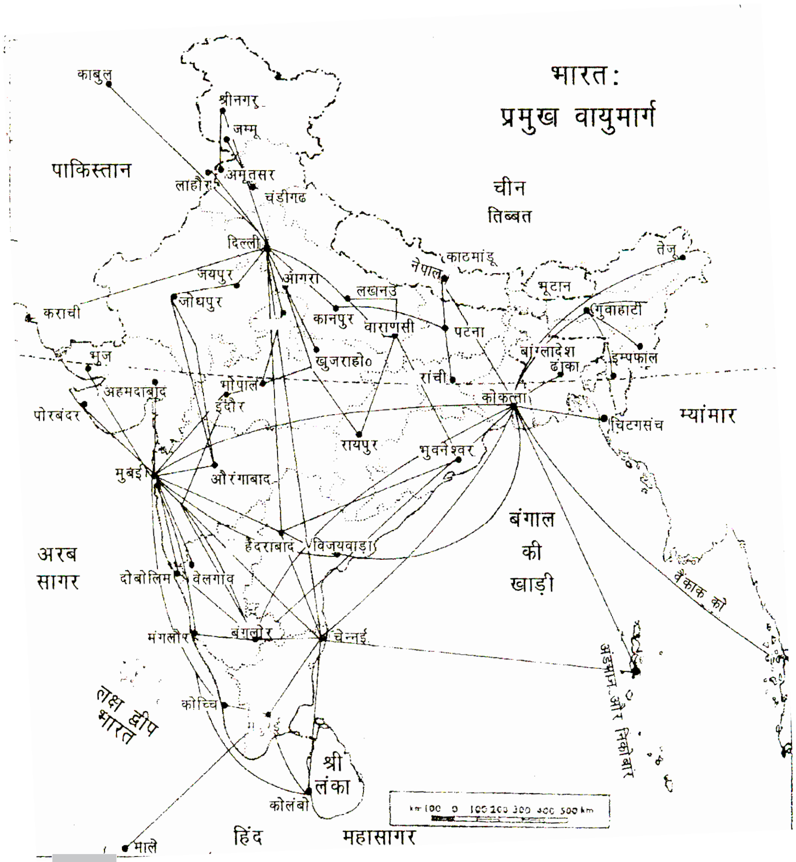

चित्र 29.11 भारत : वायुमार्ग व हवाई अड्डे

29.8 वैश्विक गाँव क्या है

आपने वैश्विक गाँव की अभिव्यक्ति सुनी होगी। पहली नजर में यह विरोधाभासी लग सकती है। कोई चीज एक ही साथ वैश्विक या विश्वव्यापी और गाँव दोनों कैसे हो सकती है?

वैश्विक गाँव का मुहावरा पहली बार मैक–लूहान नामक विद्वान द्वारा इस्तेमाल किया गया था। उसने महसूस किया कि टेलीविजन के बढ़ते प्रयोग के साथ संप्रेषण नाटकीय रूप से बदल जाएगा। इसका मतलब था कि लोग हजारों मील दूर लगभग तत्काल संदेश भेजने में कामयाब होंगे। इसके परिणामस्वरूप भौतिक दूरी अब संप्रेषण रोकने या धीमा करने वाली बाधा प्रतीत नहीं होगी।

पिछले कुछ दशकों में और खासकर पिछले दस साल में उपग्रह और अन्य सशक्त प्रौद्योगिकीय उपकरणों के इस्तेमाल से उभरे व्यापक टीवी नेटवर्क हमें विश्वास दिला

सकते हैं कि मैक–लूहान की भविष्यवाणी सच हो गई है। भारत में बैठे–बैठे हम नेल्सन मंडेला को दक्षिण अफ्रीका का राष्ट्रपति बनते या शारजहा में क्रिकेट मैच होते देख सकते हैं। लेकिन फिर हम यह पूछ सकते हैं कि क्या लोगों के बीच केवल भौतिक दूरी के ही अंतर हैं?

गाँवों में एक साथ रहने वाले लोग ज्यादातर किसान होते हैं, पर धनी भू–स्वामियों, छोटे किसानों, काश्तकारों, कारीगरों और भूमिहीन कृषि–मजदूरों के बीच स्पष्ट अंतर होते हैं। दूसरे शब्दों में, भौतिक रूप से लोग एक–दूसरे के करीब होने के बावजूद सामाजिक या आर्थिक दूरी के कारण अलग हो सकते हैं। ज्यादा ताकतवर होने के कारण भू–स्वामी गाँव में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अंतः क्रिया पर हावी रहते हैं। अतः संप्रेषण सीधा और आमने–सामने होने के बावजूद इस तथ्य से प्रभावित हो सकता है कि उसमें भाग लेने वाले लोग हैसियत में बराबर नहीं हैं।

वैश्विक गाँव में समस्या और बढ़ जाती है। यहाँ संप्रेषण पर शहरों में रहने वाले लोग हावी रहते हैं। आपने गौर किया होगा कि औसतन शहरी लोग गाँववासियों की तुलना में ज्यादा धनी और प्रभावशाली होते हैं। एक कदम और आगे जाकर हम भारत जैसे विकासशील देशों के शहरों और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों के शहरों के बीच अंतर देख सकते हैं। अमेरिकी शहरों में रहने वाले लोग आम तौर पर भारतीय शहरों में रहने वाले लोगों से ज्यादा धनी होते हैं और विकसित देशों के इन शहरों में रहने वाले लोग सामान्यतः टीवी कार्यक्रम निर्मित और प्रसारित करते हैं जिन्हें फिर हम प्राप्त करते हैं।

वैश्विक गाँव में होता यह है कि हालाँकि दूरियाँ मिट जाती हैं, लेकिन संप्रेषण एक–दिवसीय प्रक्रिया बन जाती है। हम जो कुछ टीवी–प्रोड्यूसरों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, देख सकते हैं, लेकिन कोई वास्तविक संवाद नहीं होता। इसलिए एक छोटे गाँव में आमने–सामने होने वाली बातचीत के विपरीत, जिसमें कि हम चर्चा कर सकते हैं, हस्तक्षेप कर सकते हैं, झगड़ सकते हैं और मना सकते हैं, हम सिर्फ टीवी से बहने वाले संदेश प्राप्त कर सकते हैं और अक्सर उनका अनुसरण करते हैं। जो हमें बताया जाता है, उस पर सवाल उठाना या उसे चुनौती देना बहुत मुश्किल बात है।

29.9 विज्ञापन और उपभोक्तावाद

उन कार्यक्रमों पर गौर कीजिए, जो हम रेडियो पर सुनते या टीवी पर देखते हैं—समाचार, फिल्में, टॉक–शो और विज्ञान, संगीत, इतिहास, खेलों पर कार्यक्रम—विविधतापूर्ण कार्यक्रमों की असीम श्रंखला। बहरहाल, हम देखने के लिए कोई भी कार्यक्रम क्यों न चुनें, हम सैकड़ों नहीं तो दर्जनों विज्ञापन भी देखते हैं। ऐसा क्यों होता है? इसलिए कि विज्ञापनदाता या प्रायोजक उन कार्यक्रमों के लिए भुगतान करते हैं जिन्हें हम देखते हैं। वे आम तौर पर लोकप्रिय कार्यक्रम चुनने का ध्यान रखते हैं ताकि वे एक व्यापक दर्शक–वर्ग तक पहुँचे सकें। तब वे लाखों लोगों तक अपने उत्पाद विज्ञापित कर सकते हैं।

विज्ञापनदाता यह उम्मीद रखते हैं कि अपने पसंदीदा टीवी शो देखते हुए हम उनके उत्पादों पर गौर करेंगे और उन्हें खरीदने के लिए लालायित होंगे। दूसरे शब्दों में, उन्हें हमें अपने ब्रांडों या उत्पादों को खरीदने के लिए प्रेरित करने का अवसर मिलता है, फिर चाहे वे साबुन हों या क्रीम, कारें, घरेलू उपकरण,सूची अनंत है। अपनी तात्कालिक और

मूलभूत जरूरतों से अलग और अक्सर अपने साधनों से भी परे चीजें खरीदने की यह प्रवत्ति उपभोक्तावाद के रूप में जानी जाती है।

अतः एक ओर जहाँ दूरियाँ बेशक नाटकीय ढंग से मिटा दी गई हैं, वही नई प्रौद्योगिकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों सहित बड़े निर्माताओं के हित में इस्तेमाल की जा रही है। वे उपभोक्ताओं की विशाल जनसंख्या पैदा करते हैं जिसे अपनी कमाई विभिन्न 'जरूरत की चीजें' खरीदने पर खर्च करने, बल्कि उधार लेकर भी उन्हें खरीदने के लिए प्रेरित किया जाता है।

अपने मौजूदा रूप में वैश्वीकरण सामान्यतः अन्य सबसे बढ़कर धनी उद्योगपतियों के हित पूरे करता है। वास्तव में लाभप्रद बनने के लिए उसे सांस्कृतिक विविधता के लिए सम्मान और विश्व के संसाधनों के कुछ हाथों में केंन्द्रित होने के बजाय उनके बँटवारे पर आधारित अंतः क्रिया के रूप में विकसित होना होगा।

हमें यह भी याद रखना होगा कि वैश्वीकरण के संभावित लाभों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। टीवी कार्यक्रमों के जरिए विदेशी वस्तुएँ खरीदने के लिए प्रेरित किए जाने के साथ–साथ हम विदेशी संस्कृतियों के बारे में सीखते भी हैं। हमें निर्णय करना होगा कि कौन सी चीज स्वीकार करने योग्य है और किसे अस्वीकार किया जा सकता है। वैश्वीकरण ऐसी चीज है जिसके साथ अब हम जी रहे हैं। हमें समझना चाहिए कि हम उसके साथ अपनी शर्तों पर भी जी सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 29.4

रिक्त स्थानों को भरिए:

1. वैश्वीकरण __________ और सांस्कृतिक संप्रेषण के क्षेत्रों में जगह बनाता जा रहा है।
2. __________ का मुहावरा मैक–लूहान द्वारा गढ़ा गया था।
3. विज्ञापनदाता टीवी कार्यक्रमों को __________ करते हैं।
4. वैश्विक संप्रेषण पर __________ देश हावी हैं।

आपने क्या सीखा

संस्कृति मानव के अस्तित्व का अभिन्न अंग है। सांस्कृति अभिव्यक्ति के अनेक रूप हैं। आम आदमी द्वारा या उसके लिए प्रस्तुत रूप लोक–संस्कृति के तौर पर जाने जाते हैं, जबकि ज्यादा अनन्य रूप शास्त्रीय संस्कृति के रूप में जाने जाते हैं। संस्कृति में हमारे सामाजिक रीति–रिवाज और कपड़े व भोजन जैसी चीजें शामिल होती हैं जिनका हम दैनिक जीवन में इस्तेमाल करते हैं। हमारी सांस्कृतिक प्रथाएँ अक्सर हमारे धार्मिक विश्वासों और हमारी सामाजिक व आर्थिक स्थिति से प्रभावित होती हैं। वे लोगों के बीच

होने वाली अंतः क्रिया से भी आकार ग्रहण करती हैं। आज की स्थिति में वैश्वीकरण अंतः क्रिया का एक विशिष्ट रूप प्रस्तुत करता है। यह एक मिश्रित वरदान है। यह अक्सर उपभोक्तावाद की ओर ले जाता है। इसे अपने उत्पादों का विज्ञापन करने वाले निर्माताओं द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। फिर भी, वैश्वीकरण एक लाभदायक शक्ति है क्योंकि वह हमें दूर–दूर तक संप्रेषण करने में मदद करता है और हर प्रकार के विचारों और सूचना के आदान–प्रदान को सुविधाजनक बनाता है।

पाठांत प्रश्न

1. पाठ में वर्णित सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के समस्त रूपों की सूची बनाइए। उनमें से जो आपने स्वयं देखे और सुने हों, उन पर सही का निशान लगाइए और बताइए कि उनमें से जो आपको सबसे ज्यादा पसंद है (उदाहरण के लिए आपकी पसंदीदा पेंटिंग, गीत आदि), उसे आपने कहाँ देखा या सुना है।
2. हमारी सामाजिक और आर्थिक स्थिति जिन रूपों में हमारी सांस्कृतिक प्रथाओं को प्रभावित करती है, उनमें से कुछ रूपों का वर्णन कीजिए। क्या आप समझते हैं कि ये सभी महत्वपूर्ण हैं? अपने उत्तर के कारण लिखिए।
3. उस स्थान के बारे में सोचिए, जहाँ आप गए हों। क्या वह आपके (क) जिले में या (ख) राज्य में या (ग) देश में है? उस स्थान के लोगों की संस्कृति जिन रूपों में आपके समान या भिन्न है, उनका वर्णन कीजिए।
4. एक वैश्विक गांव में संप्रेषण के स्वरूप का वर्णन कीजिए। एक साधारण गांव के संप्रेषण की तुलना में यह किस प्रकार भिन्न है?
5. किसी दैनिक समाचार पत्र या पत्रिका से पांच विज्ञापन काटकर चिपकाइए। उनमें विज्ञापित उत्पादों का वर्णन कीजिए – वे कहां निर्मित किए जा रहे हैं, कहां उपलब्ध हैं और उनकी क्या कीमत है। विज्ञापनदाता किस तरह आपको उत्पाद खरीदने के लिए प्रेरित करता है, इसका उल्लेख कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

29.1

1 (क) सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का रूप

(ख) मुगल वास्तुकला

(ग) संस्कृत काव्य

(घ) सामाजिक रीति–रिवाज

(च) भौतिक संस्कृति

2.

1. गलत, 2. सही, 3. गलत, 4. सही, 5. गलत

29.2

1. सांची, 2. धार्मिक, 3. आंडाल, 4. लाई देद, 5. जनसाधारण, 6. मौखिक, 7. धर्म, क्षेत्र, 8. शासकों

29.3

1. सही, 2. गलत, 3. गलत, 4. गलत, 5. सही

29.4

1. अर्थव्यवस्था, 2. वैश्विक गाँव, 3. स्पोंसर, 4. विकसित

शब्दावली

मानव-विज्ञान : इसका शाब्दिक अर्थ है मानव का विज्ञान। इसमें भौतिक और सामाजिक दोनों पहलुओं पर जोर देते हुए मानवों का पूर्णता सें अध्ययन किया जाता है।

पुरातत्ववेत्ता : अतीत के समाज के भौतिक अवशेषों का विश्लेषण करने वाला और उन्हें समझने में हमारी मदद करने वाला विद्वान।

शास्त्रीय : किसी सही अनुपात रखने वाली चीज के बारे में बताने वाला शब्द। यह आम तौर पर किसी उत्कष्ट समझी जाने वाली चीज का उल्लेख करने के लिए भी इस्तेमाल होता है।

उपभोक्तावाद : वास्तविक जरूरतों की तुलना में ज्यादा वस्तुएँ और सेवाएँ चाहने और कभी–कभी सामर्थ्य न होने के बावजूद उन्हें पाने की इच्छा रखने की प्रवत्ति।

भौतिक संस्कृति : इसमें वे चीजें शामिल हैं, जिन्हें हम अपने दैनिक जीवन में इस्तेमाल करते हैं। वे विचारों के विपरीत मूर्त होती हैं यानी उन्हें हम देख और छू सकते हैं, जबकि विचार हमारी संस्कृति का अंग तो बनते हैं पर अमूर्त होते हैं।

लोकप्रिय : लोगों की कोई चीज, जिस वे आगे ले जाते हैं। इसका अर्थ वह चीज भी है जो लोगों के साधनों के भीतर होने के साथ–साथ उनके द्वारा अनुमोदित या पसंद भी की जाती है।

वैदिक ऋचाएँ : वैद संख्या में चार हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद/इनमें मंत्र हैं, जिनमें से अनेक बलि और अन्य कर्मकांडों के दौरान पढ़े या गाए जाते थे।

30

प्रारंभिक राज्य

प्राचीन भारत के इतिहास में हमें सिंधु घाटी की शहरी सभ्यता से लेकर गुप्त वंश के क्लासिक युग तक समाज के अनेक रूप मिलते हैं। इस अवधि के दौरान हमें केंद्रीक त एवं विकेंद्रीक त सरकारों का स्वरूप मिलता है, जिनमें से कुछ अपनी राजनीतिक संरचना और शासन में अत्यधिक संगठित थीं, तो अन्य अपनी आंतरिक समस्याओं और शक्ति के विभाजन के कारण कमजोर थीं।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आपः

- प्राचीन भारत में राज्य–प्रणाली का विकास कैसे हुआ, इसकी व्याख्या कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के राज्यों में अंतर कर सकेंगे;
- यह समझ सकेंगे कि अत्यधिक शक्तिशाली राज्यों का विकास कैसे हुआ?

30.1 प ष्ठभूमि

प्रारंभ में मानव समाज का मानना था कि सभी मनुष्य समान हैं और सबको समान अधिकार होने चाहिए, क्योंकि मुख्यतया यह एक जनजातीय समाज था। राज्य के विचार का आविर्भाव संसाधनों पर नियंत्रण के लिए हुए युद्धों का परिणाम था और एक विशिष्ट अर्थव्यवस्था या समाज का विकास प थक स्तरों पर हुआ। वर्ग–आधारित समाज का विकास राज्य–प्रणाली में परिवर्तन लाने के लिए अनिवार्य था। जनसंख्या में व द्धि और ग हस्थ जीवन का विकास इसके अन्य कारक थे।

30.2 राज्यतंत्र की विचार धारा का विकास

पुरातत्वीय प्रमाणों ने हड़प्पा में एक सुद ढ़ केंद्रीक त सत्ता को जन्म दिया। वैदिक कालीन राजतंत्रों में कुल का मुखिया राजा बनता था, जिसने धीरे–धीरे ईश्वर के बराबर हैसियत से मिल गई। बौद्ध और जैन मतों ने ईश्वरत्व की विचारधारा को नकारा तथा उसके बजाय यह माना कि मूल प्राक तिक अवस्था में सभी आवश्यकताएं सहज ही पूरी हो जाती थीं, परन्तु शनैः शनैः पतन प्रारंभ हो गया एवं इच्छाओं का विस्तार करते हुए मनुष्य शैतान

बन गया, जिससे निजी सम्पत्ति और परिवार के भाव मन में आने लगे और अंततः मनुष्य अनैतिक व्यवहार करने लगा। अराजकता की इस स्थिति में लोग एकत्र हुए और अपने में से किसी एक को चुनने का निर्णय लिया। महासम्मत यानी 'महा चयन' जिसे वे कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए अधिकार प्रदान करेंगे। इस प्रकार धीरे–धीरे राज्य संबंधी संस्था अस्तित्व में आई। परवर्ती सिद्धांतों ने शासक और प्रजा के बीच एक करार का स्वरूप बनाए रखा। ब्राह्मण स्रोतों का मानना था कि देवता ही राजा को नियुक्त करते थे और राजा और प्रजा के बीच देनदारियों का अनुबंध संपन्न हुआ। साथ ही मत्स्यन्याय का सिद्धांत भी प्रचलित था, जो बताता है कि अव्यवस्था के वक्त जब कोई शासक नहीं होता तब शक्तिशाली कमजोर को खा जाता है वैसे ही जैसे कि सूखे के समय बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती हैं। इस प्रकार राजा की परम आवश्यकता समझी गई। राज्य का अस्तित्व मुख्यतया दो घटकों पर निर्भर था 'दंड (प्राधिकारी) और धर्म (उसकी सामाजिक व्यवस्था अर्थात्–जाति–ढांचे के संरक्षण के संदर्भ में)। *अर्थशास्त्र* में राज्य के सात अंगों (सप्तांग) का उल्लेख हैं–राजा, प्रशासन, क्षेत्र, राजधानी, राजकोष, प्रबल प्राधिकारी एवं सहयोगी। तथापि, धीरे–धीरे राज्य की राजनीतिक धारणा कमजोर पड़ने लगी, मुख्यतः राजनीतिक परंपरा को विनाश के कारण तथा राजतंत्रीय प्रणाली, के कारण जिसमें राजा के प्रति कि निष्ठा रहती थीं। मौर्य साम्राज्य के आविर्भाव से राजतंत्र के राजनीतिक विचार को मजबूती मिली। सामाजिक व्यवस्था में द्वितीय घटक धर्म था, जो राज्य की अस्पष्ट होती विचार–धारा की तुलना में पहले से कहीं अधिक निष्ठा की मांग करता था। राजा का कर्त्तव्य था धर्म की रक्षा करना तथा जब तक सामाजिक व्यवस्था अंक्षुण्ण रहेगी, अराजकता हावी नहीं होंगी। भारतीय सभ्यता की मूल पहलू रही सामाजिक व्यवस्था के प्रति निष्ठा कई शताब्दियों से मुख्य सामाजिक संस्थाओं की प्रभावशाली निरंतरता के लिए उत्तरदायी रही है। तथापि इसने राज्य के राजनीतिक विचार के प्रति निष्ठा को बदल भी दिया, जिसके कारण अनेक बार और अधिक साम्राज्य अस्तित्व में आ गए होते तथा अधिक राजनीतिक चेतना आ जाती। मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद साम्राज्य के पुनः विकसित होने में कई शताब्दियाँ लगीं।

30.3 सिंधु और वैदिक राजनीतिक या सरकारी संगठनः राज्य पूर्व से लेकर राज्य तक

सिंधु घाटी की शहरी सभ्यता से उस क्षेत्र में प्रारंभ हुई जटिल योजना तथा उस काल के मानक के अनुसार लोगों के रहन–सहन का पता चलता है। पुरातत्वीय प्रमाण के बढ़ते निकाय के बावजूद, सिंधु 'राज्य' की सामाजिक और राजनीतिक संरचनाएं अटकलबाजी की वस्तुएं बनी हुई हैं। संपूर्ण सिंधु क्षेत्र में वजन और माप की महत्त्वपूर्ण समरूपता तथा विशाल अन्न–भंडारों के रूप में ऐसे संभावित नागरिक कार्यों का विकास विशाल क्षेत्र पर राजनीतिक तथा प्रशासनिक नियंत्रण की सुद ढ़ अवस्था के संकेत देते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि आर्य भारत में लगभग 1500 ई. पू. प्रसिद्ध खैबर दर्रे से आए थे तथा इससे भारतीय इतिहास के वैदिक काल में एक और सभ्यता का विकास हुआ था। आर्य कई कबीलों में बंट गए थे, जो उत्तर–पश्चिमी भारत के विभिन्न स्थानों में बसे थे। कबीले के मुखिया का पद धीरे–धीरे वंशानुगत हो गया था, यद्यपि मुखिया अक्सर समिति अथवा संपूर्ण समुदाय की सलाह से कार्य करता था। कबीले का प्रमुख राजा की पदवी

धारण करते तथा युद्ध–नेताओं की तुलना में अधिक महत्त्व रखते थे तथा उनका मुख्य कार्य अपने लोगों का संरक्षण करना था। राजा की शक्ति पुजारियों के उच्चतर प्राधिकार के बराबर निर्धारित की गई थी। वैदिक राजतंत्र आर्य लोगों के आस–पास की स्थितियों का स्वाभाविक परिणाम था। राजा युद्ध में आक्रमण और बचाव की कार्रवाई करने के लिए लोगों का नेत त्व करता था। उसे 'लोगों का संरक्षक' कहा जाता था। ऋग्वेद का एक अध्ययन दर्शाता है कि राजा आदिकालीन कबीले का ही नेत त्व करने वाला नहीं रह गया था बल्कि उसने लोगों में अपनी जगह प्राप्त कर ली थी। लोगों का संरक्षण करना राजा का पवित्र कार्य था। बदले में वह भेंट के रूप में अपनी प्रजा से वफादारी की अपेक्षा करता था और उसे प्राप्त करता था।

आर्य कबीलों के लोग मजबूत राजनीतिक आधार के अभाव में और अपनी जाति–प्रथा की अस्थिर प्रक ति के चलते अनार्य लोगों के विरुद्ध संगठित नहीं हो सके। साम्राज्य का यह कमजोर लक्षण कठोर जाति–प्रथा से आया जिसने लोगों को बांटा तथा उनमें अस्थिरता की भावनाएं पैदा कीं। इन्हीं कुछ कारणों से वैदिक साम्राज्य सिंधु घाटी की सभ्यता की तुलना में बहुत कम संगठित था।

शुरुआत के तौर पर, ही वैदिक काल में *'जन'* जैसी राजनैतिक इकाइयाँ मौजूद थीं, जिन्होंने बाद में जनपद–महाजनपद का रूप धारण कर लिया। जन वह क्षेत्र था जहाँ कबीले के लोग रहते थे। इन कबीलों का नाम उनके लोकप्रिय मुखिया के नाम पर पड़ा था। बाद में क्षेत्र का विस्तार होने से राजनीतिक संगठन के स्वरूप में परिवर्तन आया।

वैदिक काल के बाद सरकार की एक नई प्रणाली के रूप में सरकार की शासन कला का विकास हुआ। कबीलाई राज्य की पूर्ण एकता और श्रेष्ठ योद्धाओं की राजनैतिक शक्ति से राजत्व की नई शैली विकसित हुई।

इसका लक्ष्य अधिक पेशेवर सेनाओं का स जन करना तथा राजा पर और अधिक निर्भरता बढ़ाना था। इस शासनकला का उद्‌देश्य प्राक तिक संसाधन वाले क्षेत्रों को लूटना तथा कर देने वाले किसानों का शोषण करना था न कि कबीलाई क्षेत्रों का विस्तार करना था।

30.4 महाजनपद

मौर्य साम्राज्य की स्थापना से सदियों पहले की अवधि के दौरान कौशल और मगध राज्यों का विकास हुआ जो कि अपेक्षाक त तीव्र सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन का काल था। इस अवधि में हम कबीलाई राज्यों को छोटे–छोटे टुकड़ों में बिखरते, जाति–मॉडल का विकास होते तथा चावल उपजाने वाली पूर्वी गंगा घाटी की ओर कूच करते हुए देखते हैं। पुराने सामाजिक संबंधों के विघटन के समय में सामाजिक और राजनीतिक संबंधों में नई रीतियों की स्थापना के दौरान हम महापरिवर्तन पर आधारित विचारधारा विकसित होते देखते हैं। बौद्ध और जैनों का आविर्भाव इस परिवर्तन का परिणाम था। 1500 से 800 ई. पू. के बीच गंगा और यमुना के मैदानों में घने जंगलों की सफाई करते हुए और 'कबीलाई' बस्तियों की स्थापना करते हुए आर्यों ने पंजाब क्षेत्र की अपनी मूल बस्तियों से धीरे–धीरे पूर्व की ओर बढ़ना शुरू किया। 500 ई. पू. के आसपास तक उत्तरी भारत के ज्यादातर भागों में लोग बस गए थे तथा वहां खेती होने

लगी थी। बैल से चलने वाले हलों सहित लोहे के औजारों के उपयोग से बढ़ते ज्ञान की बदौलत स्वैच्छिक तथा बेगार श्रमिक उपलब्ध कराने वाली जनसंख्या व द्धि के चलते, नदी पर आधारित होने और अंतर्देशीय व्यापार के फलने–फूलने से गंगा के तट पर बसे कई नगर व्यापार, संस्क ति और विलासी जीवन के केन्द्र बन गए थे। बढ़ती जनसंख्या और अधिक उत्पादन ने स्वतंत्र राज्यों के विकास के लिए आधार तैयार किए जिनकी अनिश्चित सीमाएँ थीं तथा जिन्हें लेकर अक्सर लड़ाइयां होती रहती थीं। कबीले के मुखिया के नेत त्व वाली मूल प्रशासनिक प्रणाली अनेक प्रादेशिक गणराज्यों अथवा वंशानुगत राज्यों में रूपांतरित की गई। जिसने सुदूर पूर्व और दक्षिण में नर्मदा नदी से आगे बस्ती और क षि क्षेत्रों का विस्तार करने के लिए उपयुक्त राजस्व वसूली तथा श्रमिकों से जबरन काम करने के तरीके ईजाद किए। इन विकसित राज्यों में अधिकारियों द्वारा राजस्व एकत्रित किया गया, सेनाएं रखी गईं और नए शहरों व राजमार्गों का निर्माण किया गया। 600 ई. पू. तक आधुनिक अफगानिस्तान से बंगला देश तक उत्तर भारत के मैदानों में ऐसे सोलह शक्तिशाली राज्य बन गए थे। अपने सिंहासन के लिए राजा के अधिकार को चाहे वह कैसे भी मिला हो, बलिदानयुक्त अनुष्ठानों और पुरोहितों द्वारा, कानूनसम्मत बनाया गया। ग्रंथों में हमें सोलह महाजनपदों के विकास के संदर्भ मिलते हैं। उनमें से मगध कौसल काशी, अवन्ति, वैशाली, लिच्छवि आदि महत्त्वपूर्ण थे। महाजनपद दो प्रकार के थे, जिनका नीचे उल्लेख किया गया है:

(1) राजतंत्रीय महाजनपद

पहले प्रकार का राजतंत्र वह था जिसका राजा अथवा मुखिया उस क्षेत्र का प्रधान होता था। इस प्रकार के राजतंत्र में वैदिक अनुष्ठानों और ब्राह्मणों को महत्त्व दिया जाता था। इन क्षेत्रों में राजा वैदिक बलियाँ देते थे। उदाहरणार्थ, कोसल राजतंत्रीय महाजनपद की श्रेणी में आता था। कोसल का राजा प्रसेनजित अनेक बलियाँ देने के लिए प्रसिद्ध था।

(2) गणराज्य महाजनपद

महाजनपदों का दूसरा प्रकार गणराज्य अथवा कुलीनतंत्रीय था, जो राजतंत्रीय राज्यों से भिन्न था। इस श्रेणी में राजा का चयन 'राजा' कहे जाने वाले लोगों के समूह में से किया जाता था। असेम्बलियों का भी उल्लेख मिलता है, जिन्हें 'सभा' कहा जाता था। इनमें सदस्य विशेष मामलों पर चर्चा करते थे और बाद में उस पर मतदान होता था। ऐसी एक सभा में 7707 राजाओं की मौजूदगी का उल्लेख मिलता है जो राजन्यास की श्रेणी का प्रतिनिधित्व करते थे, जिनकी अपनी भूमि होती थी जिन पर दासों, कर्मकारों अथवा मजदूरों द्वारा खेती की जाती थी। राजा अपनी युद्ध करने की योग्यता से जाने जाते थे। इस श्रेणी में वैदिक बलियों को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता था और ब्राह्मणों को क्षेत्रियों के बाद दूसरे क्रम का सामाजिक दर्जा दिया गया था। इन महाजनपदों के अध्ययन का मुख्य स्रोत बौद्ध ग्रंथ हैं।

(3) राजतंत्रीय महाजनपदों और गणराज्य-महाजनपदों में संघर्ष

हिमालय के बीच निचले भाग के निकट व जि राज्य–संघ (अनेक राज्यों का संघ) शक्तिशाली कुलीन तंत्र था जिसने कुछ राजतंत्रीय राज्यों के प्रभुत्व को चुनौती दी थी मगध और लिच्छवि जैसे राजतंत्रीय राज्य अत्यधिक कठिनाई में थे क्योंकि वे अपने क्षेत्रों का विस्तार करने में असमर्थ थे। महाजनपदों में शक्ति और प्रभुत्व के लिए संघर्ष बढ़ा।

मगध का राजा अजातशत्रु महत्त्वाकांक्षी था। उसने पड़ोसी राज्यों पर विजय हासिल करने का निर्णय लिया। युद्ध और वैवाहिक संबंधों की बदौलत वह कोसल और काशी पर विजय पा सका।

पाठगत प्रश्न 30.1

निम्नलिखित वाक्यों को सही करके पुनः लिखेः

1. प्रारंभ में मानव–समाज मुख्यतया कबीलाई समाज नहीं था।

 ____

2. अशोक महान के आविर्भाव से राजतंत्र की राजनीतिक धारणा को मजबूती मिली।

 ____

3. आर्य कबीले मजबूत राजनीतिक आधार के अभाव में आर्येतर लोगों के विरूद्ध संगठित हो गए।

 ____

4. एक सभा में 7077 राजा थे, जो राज्यों की श्रेणी का प्रतिनिधित्व करते थे।

 ____

30.5 मगध और मौर्यों का उदय

इस प्रकार राजतंत्रीय राज्यों में मगध एक महत्त्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरा। तथापि उसे लिच्छवियों से अनेक वर्षों तक युद्ध करना पड़ा। अजातशत्रु ने व जि संघ के कबीलों में मतभेद पैदा करने के लिए अपने मंत्री को भेजा। इस प्रयास के कारण अंततोगत्वा अजातशत्रु को लिच्छवि के विरुद्ध सफलता मिली और वह मगध साम्राज्य का हिस्सा बन गया। उत्तरी व्यापार–मार्ग को नियंत्रित करने वाला यह क्षेत्र *उत्तरापथ* कहलाता था, जबकि *दक्षिणापथ* कहलाने वाला दक्षिणी मार्ग मगध के नियंत्रण में था। इन जीतों के कारण मगध आर्थिक संसाधनों, जैसे ऊपजाऊ नदी घाटियां और लौह अयस्क की खानों की व्यवस्था करने में समर्थ हो पाया। इससे विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन इसके लिए कच्चे माल की आवश्यक आपूर्ति होती थी। परिणामस्वरूप हमें इससे मगध में राज्य का निर्माण प्रारंभ होने के संकेत मिलते हैं। मौर्य वंश द्वारा शासित मौर्य साम्राज्य प्राचीन भारत का विशाल एवं अत्यधिक शक्तिशाली राजनीतिक एवं सैन्य साम्राज्य था। आधुनिक बिहार एवं बंगाल के सिंधु–गंगा मैदानों में मगध राज्य उत्पन्न हुआ था। इसकी राजधानी पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना के निकट) थी। इस साम्राज्य की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने 322 ई. पू. में की थी, जिसने नंद वंश को पराजित किया और मध्य तथा पश्चिमी भारत में अपनी शक्ति का विस्तार करना प्रारंभ किया। बिन्दुसार द्वारा मध्य तथा दक्षिणी प्रदेशों में इस साम्राज्य का विस्तार किया गया था, परन्तु इसने कलिंग के निकट अज्ञात कबीले के छोटे से हिस्से और जंगल से आच्छादित प्रदेशों को अलग रखा।

कलिंग के महासंग्राम में विजय के बाद अशोक महान ने साम्राज्य के सैन्य विस्तार को समाप्त कर दिया, अतः मौर्य सम्राट के प्रभुत्व को स्वीकार करते हुए दक्षिण भारत में पांड्य और चेरों के राज्यों ने अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखा। अंग्रेजों के भारतीय उपमहाद्वीप में पहुंचने तक मौर्य साम्राज्य ही महान साम्राज्य था। अशोक के शासन–काल की समाप्ति के पन्द्रह वर्ष बाद इसका पतन प्रारंभ हो गया, और मगध में शुंग वंश की नींव पड़ने के साथ ही 185 ई. पू. में इसका अंत हो गया।

30.6 मौर्य कालीन राज्य

चन्द्रगुप्त के मंत्री कौटिल्य चाणक्य ने अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, विदेश नीति, प्रशासन, सेना, कला, युद्ध और धर्म पर महान शोध–प्रबंध 'अर्थशास्त्र' लिखा। पूर्व में इससे पहले ग्रंथ नहीं रचा गया था। पुरातत्त्वीय रूप से दक्षिण एशिया में मौर्य कालीन शासन की अवधि उत्तर क ष्ण म दभांड युग में आती है। अर्थशास्त्र और अशोक के शासनादेश मौर्य–काल के लिखित अभिलेखों के मुख्य स्रोत हैं। सारनाथ स्थित अशोक के सिंह–शीर्ष भारत का प्रतीक है।

मौर्य साम्राज्य में अनेकों प्रकार के राजनीतिक संगठन और पारिस्थितिकी क्षेत्र सम्मिलित थे, उनमें वनवासी, खानाबदोश, मुखिया तंत्र और कुलीन तंत्र जैसे गण–संघ अर्थात मुखियाओं के संघ सम्मिलित थे। उनमें प्रशासनिक ढांचों वाले छोटे–छोटे राज्य सम्मिलित थे, जो अनिवार्यतः मगध के प्रशासनिक ढाँचों जैसे नहीं थे। साम्राज्य के अलग–अलग भागों, जैसे महानगरों और सीमांत प्रदेशों का प्रशासन अलग–अलग ढंग से चलाया जाता था। इस प्रकार संपूर्ण मौर्य कालीन साम्राज्य में प्रशासन की कोई समान विधि मौजूद नहीं थी। एक ओर जहां केन्द्र और महानगरों में राज्य द्वारा सीधे तौर पर प्रशासन चलाया जाता था, वहीं सीमांत प्रदेशों को अधिक स्वायत्तता दी गई थी, क्योंकि इन क्षेत्रों से कर और उपहार एकत्र करने को अधिक महत्त्व दिया गया था। प्रशासनिक तंत्र में अन्य जाति के लोगों में से भर्ती किए गए उच्च अधिकारी सम्मिलित होते थे, जिन्हें अच्छा वेतन मिलता था। भर्ती करने की कोई केन्द्रीय विधि नहीं थी तथा ऐसा प्रतीत होता है कि स्थानीय लोगों को राज्य व महानगरों से दूर के क्षेत्रों में नियुक्त किया जाता था।

अशोक के शासन–काल के दौरान मौर्य साम्राज्य को औपचारिक रूप से पांच भागों में गठित किया गया था। मगध और कुछ निकटवर्ती महाजनपद सीधे प्रशासन के अधीन थे। ग्रीस के दूत, मैगेस्थनीज की रिपोर्टों और अर्थशास्त्र कें केन्द्रीय भाग में अपेक्षाक त केन्द्रीक त प्रशासन के प्रमाण मिलते हैं।

30.7 मौर्यकालीन नौकरशाही

यह साम्राज्य चार प्रांतों में बंटा था जिसकी शाही राजधानी पाटलिपुत्र में थी। अशोक के शासनादेशों के अनुसार चारों प्रांतीय राजधानियों के नाम हैं– तोसाली (पूर्व में), उज्जैन (पश्चिम में), सुवर्णगिरि (दक्षिण में) और तक्षशिला (उत्तर में)। प्रांतीय प्रशासन का प्रधान *कुमार* (शाही राजकुमार) होता था जो राजा के प्रतिनिधि के रूप में इन प्रांतों पर शासन करता था। कुमार को महामात्य और मंत्रिपरिषद् द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी। इस संगठनात्मक ढांचे में शाही स्तर पर सम्राट और उसकी मंत्रिपरिषद होती थी। नौकरशाही

की आवश्यकता जीते हुए क्षेत्रों का समान रूप से पुनर्गठन करने के लिए नहीं अपितु राजस्व का प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए पड़ती थी। साम्राज्य के उत्कर्ष काल में मुख्यतया राजस्व–प्रशासन से संबंधित अधिकारियों के समूह का उल्लेख किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि इनकी नियुक्ति केन्द्रीक त रूप से की जाती थी और उन्हें अपने क्षेत्राधिकार वाले क्षेत्रों का भ्रमण करना पड़ता था तथा प्रजा की खुशहाली के बारे में पता लगाना पड़ता था। सिंचाई अत्यधिक विकेन्द्रीक त थी और अक्सर लघुस्तरीय प्राणालियों में बँटी थी। जिसमें नदियों, पोखरों, कुओं, झरनों और क त्रिम तालाबों से जल लिया जाता था, जिन्हें कुंड कहा जाता था। स्थानीय संसाधनों से अधिक विस्त त जलाशयों और नदी तटों का निर्माण किया गया तथापि साम्राज्य नई निर्मित भूमियों के सिंचाई कार्यों में सहायता प्रदान करता था। प्रमाण से पता चलता है कि सिंचाई–कार्यों को स्थानीय रूप से नियंत्रित किया जाता था।

ऐसा प्रतीत होता है कि मौर्यों की व्यापार से राजस्व प्राप्त करने में रुचि थी। लेकिन उन्होंने व्यापार को विनियमित करने में सक्रिय भूमिका नहीं निभाई थी। यह इस तथ्य से इंगित होता है कि वे कोई विशेष किस्म की धात्विक मुद्रा जारी करते दिखाई नहीं देते। उस दौरान पाए गए साधारण पंच–मार्क के सिक्के शिल्पी संघों अथता स्थानीय निकायों द्वारा जारी किए हो सकते हैं। राज्य ने विशिष्ट व्यापारियों और संघों पर नियंत्रण बनाए रखने, उनकी पहचान, उनके माल और उनके लाभ की जांच करने का प्रयास किया था। उत्पादन के स्थान पर वस्तुओं को बेचने की अनुमति नहीं थी, संभवत : इसलिए कि राजस्व एकत्र करने वाले अधिकारियों की बाजारों में बिक्री तक अधिक पहुंच हो जाती थी। राज्य कच्चे माल से उपयोगी वस्तुओं के उत्पादन में विभिन्न बिंदुओं पर अनेक कर एकत्रित करता था। विशेष अधिकारियों की नियुक्ति की गई थी ताकि मानदंडों को सुनिश्चित किया जा सके और धोखेबाजी रोकी जा सके तथा हथियार, गोला बारूद, धातु एवं हीरों जैसी उन मदों के व्यापार पर प्रतिबंध लगाया जा सके, जिन पर राज्य का एकाधिकार होता था। अतः उपयोगी वस्तु का उत्पादन एक स्वतंत्र उपक्रम था जो बाजार के अनुकूल बन गया था तथा व्यापार राज्य के राजस्व का मुख्य संसाधन था।

इतिहासकारों का अनुमान है कि साम्राज्य का संगठन 'अर्थशास्त्र' में कौटिल्य द्वारा उल्लिखित विस्त त नौकरशाही के अनुरूप था। अत्याधुनिक नागरिक सेवा नगर की सफाई से लेकर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तक की प्रत्येक चीज को संचालित करती थी। अपने काल की विशाल स्थाई सेना होने के कारण साम्राज्य का विस्तार एवं सुरक्षा संभव हो पाई। मैगस्थनीज के अनुसार सेना में 6,00,000 पैदल 30,000 घुड़सवार और 9,000 जंगी हाथी शामिल थे। विशाल गुप्तचर प्रणाली आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा प्रयोजनों हेतु सूचना एकत्र करती थी। आक्रामक युद्ध और विस्तारवाद को छोड़ने के बाद भी अशोक ने साम्राज्य की सुरक्षा और संपूर्ण पश्चिम और दक्षिण एशिया में स्थिरता एवं शांति कायम करने के लिए इस विशाल सेना को कायम रखा।

30.8 मौर्य कालीन के बाद के राज्य

मौर्यकाल के बाद की राजनीति को मध्य एशिया के विजेताओं अर्थात भारत–यूनानियों, शासकों, पार्थियनों और कुषाणों के आगमन से रेखांकित किया गया। इन्होंने स्थानीय राजाओं पर अपनी हुकूमत जमाई, जिससे स्वामी और सेवक के संबंधों के

आधार पर संगठन के विकास हेतु मार्ग प्रशस्त हुआ। मध्य एशियाई लोगों ने राजतंत्र के ईश्वरीय मूल वाली विचारधारा को मजबूत किया। कुषाण राजाओं ने स्वयं को भगवान की संतान बताया। मध्य एशियाइयों ने क्षत्रप प्रणाली और सैन्य आधिपत्य भी प्रारंभ किया।

पाठगत प्रश्न 30.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो :

1. अर्थशास्त्र किसने लिखा?

____

2. 7 वीं एवं 8वीं शताब्दी में कुमार नाम किसका द्योतक था?

____

3. मैगस्थनीज कौन था?

____

4. मौर्यकालीन युग की चार प्रांतीय राजधानियों के नाम बताओ।

____

5. मैगस्थनीज के अनुसार मौय साम्राज्य की सेना की संख्या कितनी थी?

____

30.9 गुप्तकालीन राज्य का विस्तार

चौथी शताब्दी ईसवी में विशाल साम्राज्य गुप्त साम्राज्य था, जो भारतीय इतिहास के स्वर्ण युग का प्रारंभ था। यह साम्राज्य दो शताब्दियों से अधिक समय तक रहा। इसमें भारतीय उपमहाद्वीप का बड़ा भाग सम्मिलित था, परन्तु इसका प्रशासन मौर्यों से अधिक विकेन्द्रीक त किंतु शुंगों से अधिक केन्द्रीक त था। राजाओं का देवत्व सिद्धांत गुप्तकाल में और अधिक लोकप्रिय हो गया था। विकल्प के तौर पर अपने पड़ोस के छोटे–राज्यों से युद्ध या वैवाहिक संबंधों की स्थापना के कारण प्रत्येक राजा के साथ साम्राज्य की सीमाओं में घट–बढ़ होती रहती थी। गुप्त राज्य में उपमहाद्वीप के उत्तरार्ध और मध्य भाग सम्मिलित थे, हालांकि उसका मौर्यकालीन राज्य से कम विस्तार था। गुप्त काल को साम्राज्य युग भी कहा गया है, परन्तु उसमें साम्राज्य–प्रणाली का प्रशासनिक केन्द्रीकरण मौर्य–काल की तुलना में कम दिखाई देता है। मौर्य काल के विपरीत गुप्त शासकों में राजाओं का दास के रूप में सेवा करने की अनुमति देने की प्रक ति थी और उन्होंने प्रत्येक राज्य को एकल प्रशासनिक इकाई में संगठित नहीं किया। यह बाद के मुगल साम्राज्य के लिए मॉडल था तथा ब्रिटिश शासन मुगल प्रतिमानों पर निर्मित हुआ था।

गुप्त शासक अपेक्षाक त अज्ञात परिवार के थे, जो शायद मगध अथवा पूर्वी उत्तर प्रदेश से आया था। त तीय राजा चन्द्रगुप्त–I ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। उसने लिच्छवि वंश की राजकुमारी से विवाह किया तथा यह समारोह एक सोने के सिक्कों की श ंखला में मनाया गया। कहा जाता है कि यदि गुप्त शासकों ने प्रयाग (आधुनिक इलाहाबाद, पूर्वी उत्तर प्रदेश) पर शासन किया होता तो, वे वैवाहिक संबंधों द्वारा मगध को अपने राज्य में मिला सकते थे। गुप्त काल 320 ई.पू. में प्रारंभ हुआ था। चन्द्रगुप्त ने अपने पुत्र समुद्रगुप्त को लगभग 330 ई. पू. में अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था जिसका उल्लेख इलाहाबाद के एक स्तंभ पर अंकित समुद्रगुप्त की एक लंबी प्रशस्ति में मिलता है। एक अज्ञात राजा कच के सिक्कों से पता चलता है कि सिंहासन के लिए अनेक दावेदार रहे होंगे। समुद्रगुप्त ने अलग–अलग दिशाओं में युद्ध किए और अनेक जीत हासिल की। जिनका इसने राज्य लौटाया, वे जो चाहते थे वह करने के इच्छुक थे। वे आर्यव्रत शासकों, विभिन्न वन–मुखियों, उत्तरी कुलीन तंत्रों और पूर्व के सीमांत राज्यों के अतिरिक्त नेपाल से संबंध रखते थे। समुद्रगुप्त के अधिकार क्षेत्र में लाए गए दूरस्थ क्षेत्रों को अधीनस्थ कहा जाता था। उनमें उत्तर–पश्चिम के 'राजाओं के राजा' शका, मुरूंड और सिंहल (श्रीलंका) सहित 'सभी द्वीपों' के निवासी सम्मिलित थे। ये सब इलाहबाद की प्रशस्ति में सूचीबद्ध किए गए हैं। गंगा घाटी और मध्य भारत सीधे प्रशासनिक नियंत्रण वाले क्षेत्र थे। समुद्रगुप्त का पुत्र चन्द्रगुप्त–II लगभग 380 ई. पू. में उसका उत्तराधिकारी बना, तथापि कुछ साक्ष्यों के अनुसार बीच में कोई रामगुप्त नामक राजा भी हुआ था। चन्द्रगुप्त–II का मुख्य युद्ध उज्जैन के शका शासकों के विरुद्ध था, जिसमें प्राप्त सफलता एक चांदी के सिक्कों की श ंखला में मनाई गई। उत्तरी दक्षिण से लगा गुप्त राज्य उस क्षेत्र के सातवाहनों के उत्तराधिकारी वाकाटक वंश से वैवाहिक संबंध स्थापित करके सुरक्षित था। यद्यपि चन्द्रगुप्त ने विक्रमादित्य (शौर्य पुत्र) की पदवी धारण की किंतु इसका शासनकाल सैन्य युद्धों के बजाय सांस्क तिक और बौद्धिक उपब्धि ायों से अधिक जुड़ा है। उसके समकालीन चीनी बौद्ध भिक्षु फाह्यान ने भारत की यात्रा की और अपनी छाप छोड़ी।

30.10 गुप्तकालीन राज्य का स्वरूप

चन्द्रगुप्त–I के शासनकाल से आगे के गुप्त शासकों ने महाराजाधिराज की पदवी धारण की और शिलालेखों से प्राप्त जानकारी के अनुसार *वे परमाराजधिराज,* राजराजाधिराज के रूप में जाने गए। इलाहाबाद के स्तंभ में समुद्रगुप्त को भूमि पर निवास करने वाला भगवान कहा गया है। ऐतिहासिक विवरणों में उसका कुबेर, इन्द्र आदि के रूप में उल्लेख किया गया है। इस काल में वंशानुगत उत्तराधिकार स्थापित किया गया, किंतु प्रत्यतः इस काल में सम्राट अपने उत्तराधिकारी चयन करता था। गुप्त शासकों द्वारा जीते गए अनेक राज्यों को स्वतंत्र रूप से कार्य करने दिया गया था। उन्हें जीतकर अपने अधीन रखा गया पर अपने साम्राज्य में सम्मिलित नहीं किया गया। ये (सेवक) जमींदार जैसे गुप्त शासकों को उपहार देते थे, परन्तु कई बार उनमें से कुछ अपने अभिलेखों में गुप्त शासकों का अपने अधिराज (अभिलेखों का नियंत्रक) के रूप में उल्लेख नहीं करते थे। गुप्तों के शासन काल में भी सातवाहनों के शासन–काल में प्रचलित भूमि–अनुदानों और गांवों के अनुदान की भी परंपरा जारी रही। इन अनुदान के साथ प्रशासनिक अधिकार भी संलग्न रहते थे, जिससे प्रशासनिक प्राधिकार का विकेन्द्रीकरण होता था। उप–भूदान के

(स्वामित्व) अधिकार भूदान लेने वाले (अनुदान प्राप्त करने वाले) को दिए गए। मध्य और पश्चिमी भारत में गांववालों को बेगार करनी पड़ती थी, जिसे विष्टि (बेगार श्रमिक) कहा जाता था और यह सभी वर्गों के लोगों पर लागू थी।

30.11 गुप्त कालीन प्रशासन

प्रशासन की द ष्टि से गुप्तकालीन राज्यों को प्रांतों में विभाजित किया गया था। वे देश अथवा भक्ति कहलाते थे और उन्हें छोटी–छोटी इकाईयों प्रदेश अथवा विषयों में बांटा गया था। इन प्रांतों पर कुमारमात्य राज्य करते थे जो उच्च राजसी (शाही) अधिकारी अथवा राज परिवार के सदस्य होते थे। नगरपालिका बोर्ड अधिष्ठान अधिकरण के गठन से प्रमाणित है, जिसमें शिल्पी संघ का अध्यक्ष (नगरश्रेष्ठिन), मुख्य व्यापारी (सार्थवाह) और शिल्पियों और मुंशियों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे। इस अवधि में सामंत शब्द का उपयोग, जिसका मूल अर्थ है पड़ोसी, या तो मध्यस्थों के लिए होने लगा था, जिन्हें भूमि अनुदान दिया जाता था अथवा विजित हुए जमींदार शासकों के लिए होने लगा था। कुछ उच्च प्रशासनिक कार्यालयों को वंशानुगत बनाने की भी महत्त्वपूर्ण प्रव त्ति थी। जीते हुए क्षेत्रों पर कड़े नियंत्रण के अभाव में वे पुनः स्वतंत्र हो गए थे। बार–बार सैनिक कार्रवाई करने से राज्य के संसाधनों पर अधिक भार पड़ता था। गुप्त राजा स्थाई सेना रखते थे। सेना में घुड़सवार सेना और अश्व–धनुर्विद्या का उपयोग महत्त्वपूर्ण हो गया था। सीमा–क्षेत्रों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया था। भूमि–भर और उत्पाद कर एकत्र किए जाते थे। न्याय–प्रणाली विकसित की गई और कानून संबंधी अनेक पुस्तकें लिखी गईं। पहली बार दीवानी और फौजदारी कानूनों में अंतर किया गया।

30.12 गुप्तकाल के बाद भारतीय राजनीति

हर्षवर्धन और पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूट और चालुक्य वंशों के उत्तराधिकारियों की शासन–प्रणाली वंशानुगत पद के राजा के व्यक्तित्व पर केन्द्रित थी। जागीरदारी प्रणाली अत्यधिक प्रचलित थी और राजाओं, उनके जागीरदारों के बीच बार–बार होने वाले युद्धों ने राजनीतिक स्थिति को अस्थिर बना दिया था। इन राज्यों में राजाओं द्वारा प्रत्यक्ष प्रशासन वाले क्षेत्र और जागीर–मुखियाओं के शासन वाले क्षेत्र सम्मिलित थे। इन्हें अपने आंतरिक कार्यों में स्वयं निर्णय लेने की स्वायत्तता थी। अपने अधिपति के प्रति निष्ठा रखना, उसे निर्धारित कर चुकाना और सेनाओं के कोटे की आपूर्ति करना जागीरदारों का सामान्य दायित्व था। सरकार 'सामंतवादी' होने लगी थी।

पाठगत प्रश्न 30.3

रिक्त स्थान भरिए :

1. चौथी शताब्दी में __________ महान शासक था।
2. तीसरे राजा __________ ने __________ की पदवी धारण की।
3. समुद्रगुप्त का उत्तराधिकारी __________ था।

4. __________ का समकालीन फाह्यान एक __________ था, जिसने भारत की यात्रा की और अपनी छाप छोड़ी।

30.13 दक्षिण भारत में चोल राज्य

इस उपमहामद्वीप में चोल इस काल का कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण वंश था, यद्यपि उसकी गतिविधियाँ मुख्यतया प्रायद्वीप और दक्षिण पूर्व एशिया में चलती थीं। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विजयालय के शासन के दौरान चोल शक्ति का केन्द्र तंजावुर था, जहाँ से चोल शासक दसवीं शताब्दी में पल्लव राज्य के शेष भागों को जोड़ते हुए उत्तर की ओर फैले। दक्षिण में उनका पांड्यों से सामना हुआ। चोल–इतिहास का बहुत विस्तार से पुनर्लेखन किया जा सकता है, क्योंकि न सिर्फ शाही परिवार ने बल्कि मंदिर प्राधिकारियों, ग्राम परिषदों और व्यापार–संघों ने बड़ी संख्या में लंबे अभिलेख जारी किए। परांतक–I (907–953) ने राज्य की नींव डाली थी। उत्तर में उसने नेल्लोर आंध्रप्रदेश तक अपने शासन का विस्तार किया जहां इसकी प्रगति राष्ट्रकूट राजा क ष्ण–III के हाथों हुई पराजय से बाधित हुई। परांतक दक्षिण में अधिक सफल हुआ था जहां इसने पांड्य और गंगा दोनों को पराजित किया। उसने श्रीलंका पर भी आक्रमण किया था, जो निष्फल रहा। उसकी म त्यु के 40 वर्षों तक अनेक परस्पर व्याप्त शासनों ने चोल की स्थिति को मजबूत नहीं होने दिया, तत्पश्चात दो श्रेष्ठ शासक हुए, जिन्होंने शीघ्रता से चोल शक्ति को पुनः स्थापित किया और राज्य को इसके शीर्ष पर पहुंचाया। ये थे राजराजा–I और राजेन्द्र।

राजराजा (985–1014) ने पांड्यों और तल मंडलम (श्री लंका) के विरुद्ध आक्रमण कर सत्ता स्थापित करनी प्रारंभ की। उत्तरी श्रीलंका चोल राज्य का प्रांत बन गया। गंग और चालुक्यों के विरुद्ध युद्ध से चोल राज्य की उत्तरी सीमा तुंगभद्रा नदी तक फैल गई। पूर्वी तट पर वेंगी पर आधिपत्य जमाने के लिए चोलों का चालुक्यों से युद्ध हुआ। एक वैवाहिक संबंध ने चोल शासकों को प्रामाणिक स्थिति प्रदान की, परन्तु वेंगी विवाद का विषय बनी रही। एक नौसेना युद्ध ने मालदीव द्वीप समूह, मालाबार तट और उत्तरी श्रीलंका पर विजय दिलवाई जो दक्षिणपूर्व एशिया और अरब तथा पूर्वी अफ्रीका के साथ व्यापार पर चोलों को नियंत्रण स्थापित करने के लिए अनिवार्य थे। ये अरब व्यापारियों और दक्षिण पूर्व एशिया तथा चीन की जोर जाने वाले जहाजों के लिए पारगमन क्षेत्र और आह्वान पत्तन थे, जो यूरोप को उच्च लाभ पर कीमती मसाले बेचने के स्रोत थे।

राजराजा–I के पुत्र राजेन्द्र ने अपने पिता की सत्ता में 1012 से भागीदारी की। दो वर्ष बाद उसका उत्तराधिकारी बना और 1044 तक शासन किया। उसने उत्तर में रायपुर दोआब को जोड़ा और चालुक्य राज्य के केन्द्र में मान्यखेत में प्रवेश किया। श्रीलंका के महिन्द–V के विरुद्ध विद्रोह से राजेन्द्र को दक्षिणी श्रीलंका पर भी विजय हासिल करने का बहाना मिल गया। 1021–22 में उसने प्रसिद्ध उत्तरी युद्ध प्रारंभ किया। चोल सेना ने पूर्वीतर तथा बंगाल के साथ और तत्पश्चात गंगा नदी के उत्तर में युद्ध किया जो लगभग चौथी शताब्दी ईसवीं में कांचीपुरम में समुद्रगुप्त के युद्ध के बिल्कुल विपरीत था। तथापि 1025 में दक्षिण पूर्व एशिया में विजय राज्य के विरुद्ध उसके द्वारा किया गया सबसे अधिक भयानक युद्ध था। श्रीविजय और पड़ोसी क्षेत्रों पर आक्रमण का कारण उनके द्वारा भारतीय जहाजराजी में हस्तक्षेप करना और दक्षिण चीन से सीधे व्यापारिक

संबंध स्थापित करने के लिए वाणिज्यिक हित थे। चोल शासकों की विजय ने इन स्थितियों को पुनः स्थापित किया तथा संपूर्ण ग्यारहवीं शताब्दी के दौरान चोल व्यापारी–प्रतिनिधिमंडलों ने चीन का दौरा किया।

30.14 चोल प्रशासन का विकास

साम्राज्य काल (850–1200) के दौरान चोल राज्य को इसकी अद्वितीयता एवं नवोन्मेषता के लिए जाना जाता था। चोल ऐसा पहला वंश था, जिसने समग्र दक्षिण भारत को एक सामान्य शासन के तहत लाने का प्रयास किया था और काफी हद तक अपने प्रयासों में सफल रहा। यद्यपि उस सरकार के नवाचारों की तुलना समकालीन सरकार के स्वरूप से नहीं की जा सकती तथापि चोल साम्राज्य का काल हमारे इतिहास में खुशहाली का युग था, जिसमें आदिम प्रतीत होने के बावजूद सरकार और लोगों द्वारा महान सफलताएं हासिल की गई थीं।

राजा सर्वोच्च सेनापति और हितैषी तानाशाह होता था। प्रशासन में उसकी भागीदारी में स्वयं को प्रस्तुत अभ्यावेदनों के संबंध में जिम्मेदार अधिकारियों को मौखिक आदेश देना सम्मिलित था। ऐसे आदेश अक्सर मंदिरों की दीवारों पर अत्यधिक विस्तार से अंकित किए थे। तिरुमंदिर ओलई नायगम नामक एक विशेष अधिकारी मौखिक आदेशों को तत्काल ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियों पर दर्ज करते थे और उनकी यथातयता के लिए जिम्मेवार होते थे।

केन्द्रीय सरकार से संबंधित किसी मंत्रिपरिषद अथवा अन्य अधिकारियों को मौजूदगी के कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलते तथापि अलग–अलग मंत्रियों के नाम अभिलेखों में पाए जाते हैं। एक सशक्त नौकरशाही प्रशासन के कार्यों और राजा के आदेशों को निष्पादित करने में राजा की सहायता करती थी। आधुनिक अर्थ में विधान–परिषद अथवा विधायी प्रणाली की कमी के कारण राजा के आदेशों की निष्पक्षता उसकी अच्छाई और धर्म निष्पक्षता, एवं–न्याय बोधक में उसके विश्वास पर निर्भर थी। प्राचीन समाज सरकार से सामान्य सुरक्षा से ज्यादा कोई उम्मीद नहीं रखती थी। यहाँ तक कि विवादास्पद मामले न्यायालय के अधिकारियों के पास अंतिम उपाय के रूप में भेजे जाते थे। चोल नौकरशाही अपनी समकालीन नौकरशाहियों अर्थात् इस दौरान इसी से मेल खाती अन्य प्रचलित नौकरशाहियों से अधिक भिन्न नहीं थी। तथापि, इसकी अत्यधिक संगठित प्रक ति इसकी विशेषता थी। केन्द्रीय सरकार और स्थानीय निर्भरता के बीच एक सजगतापूर्ण संतुलन बनाए रखा गया था, तथा स्थानीय सरकार में अहस्तक्षेप अति महत्त्वपूर्ण था। नौकरशाही का एक निश्चित पदानुक्रम और कार्यकाल था 'राजा की खुशी' पर निर्भर होता था। अधिकारी मारयान और आदिगरिगल जैसी विभिन्न उपाधियां धारण करते थे। एक ही संवर्ग में वरिष्ठता पेरून्दनम और सिरुतानम जैसी उपाधियों द्वारा इंगित की जाती थीं। सरकार की आय एवं व्यय के लिए जिम्मेवार राजस्व अधिकारी महत्त्वपूर्ण अधिकारियों में से एक था।

प्रत्येक राज्य स्वयं शासित इकाई था। देश के विभिन्न भागों में ऐसे अनेक गांवों की संख्या से कुर्रम नाडू अथवा कोट्टम बनता था। तनिपूर अपने–आप में कुर्रम से काफी बड़ा गांव होता था। अनेक कुर्रमों से बेलनाडु बनता था। अनेक वेलनाडुओं से मंडलम यानी प्रांत बनता था। चोल साम्राज्य के चरमोत्कर्ष काल में उसके श्रीलंका सहित आठ अथवा नौ प्रांत थे। चोल के समग्रकाल में इनके लगातार विभाजन होते रहते थे और नाम

बदलते रहते थे उत्रामेरूर मंदिर में आठवीं शताब्दी के ई. पू. के अभिलेख में स्थानीय परिषद् के गठन, उम्मीदवारों की पात्रता एवं अनर्हताओं, चयन–पद्धति, उनके कार्यों और उनके अधिकारों की सीमा का उल्लेख है। ऐसा प्रतीत होता है कि सामान्य गांव डर अथवा ऊर का प्रशासन ब्राह्मणों को उपहार में दिए जाने वाले गांव से अलग होता था।

नौकरशाही के अधिकारियों की गतिविधियों की लगातार लेखा परीक्षा एवं समीक्षा की जाती थी। उत्तम चोल के शासन के एक अभिलेख में एक ऐसी रिपोर्ट का उदाहरण मिलता है जो हमें विशेष अनुदान के अभिलेखन के विलंब में कुछ अधिकारियों की लापरवाही एवं असावधानी की जानकारी देती है। फलतः विवादी पक्षों में विवाद हो गया कि इस अनुदान से किसको लाभ मिलना चाहिए। इसमें सम्मिलित अधिकारियों को दंडित किया गया। नागरिक प्रशासन का मुखिया होने के नाते राजा स्वयं कभी–कभी देश का दौरा करता और स्थानीय प्रशासन से पूछताछ करता था। चोला राजा कुलोत्तुंग द्वारा 1089 के लगभग एक व्यापक पुनर्सर्वेक्षण करवाया गया था, जिसमें भूमियों की सीमा और उनके कर निर्धारण गांवों की सीमाओं और गांव के भीतर सामान्य अधिकारों तथा सामुदायिक चरागाह का अभिलेखन किया गया था। राजस्व अधिकारी कर संग्रह के लिए उत्तरदायी थे। चोल सरकार राज्य तंत्र को चलाने के लिए उचित एवं यथार्थ संग्रह की आवश्यकता के प्रति अत्यधिक सतर्क थी। राजस्व–अभिलेख लूटखसोट की नियम पुस्तिका नहीं थे, भूमि–अधिकारों के सावधानी पूर्वक रखे गए अभिलेख थे जो यथार्थ सर्वेक्षणों पर आधारित पूर्ण जांच के माध्यम से अद्यतन रखे जाते थे। राजस्व अधिकारियों के कार्यों में अन्य क्षेत्रों की जिम्मेवारियां भी सम्मिलित थीं। ये मंदिरों की आय एवं व्ययों का भी निर्धारण करते थे। उन्हें गांव की ग्राम सभाओं की ओर से भूमि खरीदते हुए भी देखा जाता था। ग्राम परिषदों जैसी स्थानीय सरकारी एजेंसियों द्वारा तैयार किए गए महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों को स्थापित एवं प्रमाणित भी करते थे। उन्हें न्यायधीशों के रूप में कार्य करते हुए भी दिखाया गया था। केन्द्रीय सरकार द्वारा कर संग हीत करने के अतिरिक्त, अनेक स्थानीय निकायों को चुंगी और अन्य संगहीत करने का विशेषाधिकार प्राप्त था।

चोल साम्राज्य में न्याय अधिकतर स्थानीय मामला होता था, जहां छोटे–मोटे विवादों को ग्राम स्तर पर ही निपटा लिया जाता था। छोटे अपराधों के लिए सजाएं जुर्माने के रूप होती थीं अथवा दोषी को कुछ धर्म के लिए दान जैसे निकाय अथवा संस्थान को देने के लिए निदेश दिए जाते थे। नरहत्या अथवा कत्ल जैसे अपराधों के लिए भी जुर्माना द्वारा सजा दी जाती थी। राज्य के प्रति अपराधों जैसे देशद्रोह के बारे में राजा स्वयं सुनवाई करता और निर्णय लेता था तथा ऐसे मामलों में विशिष्ट सजा फांसी अथवा संपत्ति जब्त करना होती थी। प्रथम श्रेणी के कत्ल के मामलों में भी म त्युदंड असामान्य था। अब तक उपलब्ध सभी अभिलेखों में एकमात्र म त्युदंड का एक उदाहरण मिला है। ग्रामीण सभाएं स्थानीय विवादों के संबंध में निर्णय लेने में अत्यधिक शक्तियों का उपयोगी करती थीं। न्यायात्तार कहलाने वाली लघु समितियाँ उन मामलों की सुनवाई करती थी, जो स्वैच्छिक ग्रामीण समितियों के क्षेत्राधिकार में नहीं आते थे। ज्यादातर मामलों में सजा मंदिरों को दान अथवा अन्य दानव त्तियों के रूप में होती थीं। दोषी व्यक्ति को अपना जुर्माना धम्मासन नामक स्थान पर जमा कराना होता था। न्यायिक प्रक्रियाओं अथवा न्यायलय के अभिलेखों के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। दीवानी और फौजदारी मामलों

में कोई अंतर नहीं था। कभी–कभी दीवानी विवादों को तब तक चलने दिया जाता था, जब तक समय उनका समाधान नहीं कर देता था। चोरी, मिलावट, धोखेबाजी जैसे अपराध संगीन अपराध माने जाते थे। अधिकतर मामलों में अपराधी को सजा के रूप में मंदिर में निरंतर दीया जलाना पड़ता था। कत्ल तक के लिए जुर्माना के रूप में सजा दी जाती थी। एक मामले में एक व्यक्ति सेना के एक कमांडर को एक व्यक्ति ने छुरा घोंप दिया था। राजेन्द्र चोल –II ने अपराधी को आदेश दिया कि वह पड़ोस के मंदिर में दीया जलाने के लिए 96 भेड़ें दान में दे।

पाठगत प्रश्न 30.4

सही उत्तर पर (सही) का निशान लगाएं

1. शताब्दी में विजयवाड़ा के शासन के दौरान चोल–शक्ति का केन्द्र तंजावूर था। (8 वीं, 9 वीं, 10 वीं)
2. राजाराजा–I के पुत्र राजेन्द्र ने __________ से अपने पिता की सरकार में भाग लिया। (1012, 1102, 2101)
3. उत्त्रामेरुर मंदिर में __________ शताब्दी ई. पू. के एक अभिलेख में स्थानीय परिषद् के गठन का उल्लेख है। (6वीं, 7वीं, 8वीं)

आपने क्या सीखा

प्रारंभ में मानव–समाज का मानना था कि सभी प्राणी समान है और सबको समान अधिकार देने चाहिए, क्योंकि मूलतः यह एक कबीलाई समाज था। वर्ग आधारित समाज का विकास राज–प्रणाली के परिवर्तन के लिए अनिवार्यता थी।

वैदिक राजतंत्रों में गोत्र–मुखिया राजा बने और धीरे–धीरे उन्हें ऐसा दर्जा प्रदान किया गया, जो भगवान के बराबर था। राज्य का अस्तित्व मुख्यतया दो घटकों पर निर्भर था: दंड (प्राधिकारी) और धर्म। मौर्य साम्राज्य के आविर्भाव से राजतंत्र के राजनीतिक विचार को मजबूती मिली, मौर्यों के पतन के बाद किसी साम्राज्य के पुनः विकास में कई शताब्दियां लगीं।

कहा जाता है कि आर्यों ने भारत में लगभग 1500 ई. पू. प्रसिद्ध खैबर दर्रे से प्रवेश किया और भारतीय इतिहास में एक अन्य सभ्यता वैदिक काल का उदय हुआ। आर्य लोग कबीलों में बंट गए और प्रारंभ में उत्तर पश्चिमी भारत के विभिन्न प्रदेशों में बस गए। छोटे राजा की उपलिब्ध धारण करने वाले कबीले के मुखिया प्रारंभ में योद्धाओं से थोड़े बड़े होते थे और उनका मुख्य कार्य अपने कबीले की सुरक्षा करना था। राजा को दिए गए उपहारों में से बचे हुए उपहारों का पुनः उपयोग करने के लिए राजा आज्ञाकारिता की अपेक्षा करता था। महासंग्राम में कलिंग पर विजय प्राप्त करने के बाद अशोक महान ने

साम्राज्य का सैनिक विस्तार समाप्त कर दिया। मौर्य साम्राज्य शायद भारतीय उपमहाद्वीप पर शासन करने वाला महानतम साम्राज्य था। चन्द्रगुप्त के मंत्री कौटिल्य ने अर्थशास्त्र लिखा, जो अर्थशास्त्र, राजनीति, विदेश नीति, प्रशासन सेना, कला, युद्ध एवं धर्म का महान शोध–प्रबंध है, जैसा कभी नहीं लिखा गया था।

चौथी शताब्दी ईसवी में महान साम्राज्य गुप्त साम्राज्य था, जिसे भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता था। यह साम्राज्य दो शताब्दियों से अधिक तक चला।

इस पाठ में आपने मौर्य कालीन नौकरशाही प्रणाली, गुप्तवंश के प्रशासन तथा चोल कालीन प्रशासन के विकास के बारे में भी जाना। नौकरशाही अथवा प्रशासन के अधिकारियों की गतिविधियों की लगातार लेखा परीक्षा और संवीक्षा होती थी। राजस्व अधिकारी कर–संग्रह के लिए जिम्मेवार थे।

पाठांत प्रश्न

1. राजस्व से क्या अभिप्राय है? राजत्व की विचारधारा का विकास कैसे हुआ?
2. महाजनपदों और राजतंत्रीय महाजनपदों में अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. मगध और मौर्यों के उदय का वर्ण कीजिए।
4. गुप्त कालीन राज्य का विस्तार कैसे हुआ?
5. चोल–प्रशासन के विकास का मूल्यांकन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

30.1

1. प्रारंभ में मानव–समाज मुख्यतया कबीलाई समाज था।
2. मौर्य वंश के आविर्भाव से राजतंत्र की राजनैतिक विचारधारा को बल मिला।
3. सुद ढ़ राजनैतिक आधार के अभाव में आर्य कबीले आर्येतर लोगों के विरुद्ध संगठित होने में विफल रहे।
4. एक सभा में 7707 से भी अधिक राजा थे जो राज्यों के वर्ग का प्रतिनिधित्व करते थे।

30.2

1. कौटिल्य
2. शाही राजकुमार

3. एक ग्रीक दूत ने भारत का दौरा किया
4. (क) तोयसाली (ख) उज्जैन (ग) सुवर्णगिरि और (घ) तक्षशिला
5. 6,00,000, पैदल सेना; 30,000 घुड़ सवार और 9000 हाथी

30.3

1. गुप्त साम्राज्य
2. चन्द्रगुप्त–I, महाराजाधिराज
3. चन्द्रगुप्त–II
4. चीनी, बौद्ध

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. देखें अनुच्छेद 30.2 और 30.3
2. देखें अनुच्छेद 30.4
3. देखें अनुच्छेद 30.5
4. देखें अनुच्छेद 30.9
5. देखें अनुच्छेद 30.14

30

सांस्क तिक उत्पादन

बर्तन और तवे, चित्र, कपड़े, साहित्य और भोजन अन्य चीजों के साथ मिलकर हमारी संस्कृति के अंग बनते हैं। इस पाठ में हम देखेंगे कि इनमें से कुछ का उत्पादन किस तरह होता है, कौन उनका उत्पादन करता है और कौन उनका इस्तेमाल करता है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप :

- चित्र बनाने में किन तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता था और वे किनके लिए बनाई जाती थीं,
- भारत में निर्मित विभिन्न प्रकार के वस्त्र और पोशाकें कैसी थीं,
- महाकाव्यों से लेकर लोकगीतों तक में मिलने वाले भारत के सम द्ध और विविधतापूर्ण साहित्य और
- खाद्य उत्पादन का स्वरूप और भारत के विभिन्न भागों में खाद्य पदार्थों की व्यापक विविधता।

30.1 चित्रकला, कलाकार और संरक्षक

इस भाग में हम अपने कलाकारों और उनकी कला के बारे में समझने की कोशिश करेंगे। उन्होंने क्या पेंट किया, किससे किया और किसके लिए किया?

चित्र 30.1 हड़प्पा के पेंट किए हुए मिट्टी के बर्तन

अतीत में कला और शिल्प दैनिक जीवन के हिस्से थे और जो उपयोगी था, वह सुंदर भी था। हमारे पूर्वजों द्वारा इस्तेमाल किए जानेवाले बर्तनों और तवों, उनके द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों और जिन घरों में वे रहते थे, उन पर विभिन्न प्रकार की आक तियाँ बनी होती थीं।

सबसे उत्क ष्ट डिजाइन स्त्रियों द्वारा अपने घरों की देहरी पर चावल के आटे, हल्दी और कुमकुम के चूरे से बनाए जाते थे। मधुबनी चित्रकला बिहार की एक ऐसी ही ग्रामीण परंपरा से विकसित हुई, जिनमें जन्माष्टमी (भगवान क ष्ण का जन्म–दिवस) के त्यौहार पर और साथ ही अन्य उत्सवों पर भी दीवारों, कागज या किसी अन्य चीज पर कृष्ण के जीवन के द श्य उकेरे जाते थे। कला के इन द ष्टांतों का धार्मिक उद्देश्य होता था तथा इन्हें पवित्र माना जाता हैं।

हमें प्राप्त प्राचीनतम कला गुफा–कला हैं, जो शिकार करने और खाद्य–संग्राहक जनजातियों द्वारा बनाई गई है। इनमें से सबसे प्रसिद्ध कला उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर और बांदा, मध्य प्रदेश में भोपाल के निकट भीमबेटका और रायगढ़ के निकट सिंगनपुर, विंध्याचल पर्वतमाला की महादेव पहाड़ियों और कर्नाटक में बेल्लारी की गुफाओं और शैल–आश्रयों में पाई जाती हैं। ये चित्र प्रायः शिकार के द श्य हैं जो हमें उस क्षेत्र की वनस्पति और पशु–जीवन तथा प्रारंभिक स्त्री–पुरुषों द्वारा प्रयुक्त उपकरणों के बारे में जानकारी देते हैं। ये धनुष और बाण या कुल्हाड़ी जैसे सरल उपकरण थे। हमें नहीं पता कि असल में ये चित्र क्यों बनाए जाते थे, पर संभव है कि इनका कोई जादुई महत्व हो और ये शिकार में सफलता सुनिश्चित करने के लिए बनाए जाते रहे हों।

प्रारंभिक स्त्री–पुरुष ने जहां ये कला अपनी खुद की जरूरतों के लिए बनाई, वहीं बाद के समय में कला आम तौर पर शाही संरक्षण में बनाई जाती थी, जिसका मतलब है कि राजा उन्हें बनवाने के लिए भुगतान करते थे और कभी–कभी कलाकार का भरण–पोषण भी करते थे।

इनमें से प्राचीनतम कला बाघ (मध्यप्रदेश) की गुफाओं और एलोरा तथा अजंता (महाराष्ट्र) में पाई जाती हैं। अजंता में चित्र का विषय बुद्ध के जीवन से लिया गया है, विशेषकर जातक कथाओं में किए गए वर्णन से, जिनमें बुद्ध के अनेक जीवनों का उल्लेख है। बौद्ध धर्म के बारे में आप पाठ संख्या 31 में और पढ़ेंगे। उनमें कुछ दश्य दैनिक जीवन के भी हैं, जैसे कि अजंता गुफाओं में अपने श्रंगार में संलग्न राजकुमारी का प्रसिद्ध चित्र अजंता और एलोरा की कलाओं को गुप्त और वाकाटक शासकों ने संरक्षण प्रदान किया था और वे मोटे तौर पर चौथी से छठी शताब्दी के बीच की हैं। ये चित्र अपने अमिट रंगों की दष्टि से उल्लेखनीय हैं। ऐसा माना जाता है कि छठी से दसवीं शताब्दी के बीच शासन करने वाले पल्लव राजाओं के समय की महाबलिपुरम गुफा की कला अजंता और एलोरा की कला में इस्तेमाल की गई कलात्मक तकनीकों से प्रेरित थी।

महाबलिपुरम (चेन्नई के निकट स्थित) के चट्टानें काटकर बनाए गए मंदिर मामल्लन नरसिम्हा पल्लवन के समय के हैं, जिसने सातवीं शताब्दी में शासन किया। यहां गुफाओं के आंतरिक भागों में और चट्टानों की सतह पर महाभारत के द श्य चित्रित करने वाले खूबसूरत चित्र और मूर्तियां बनाए गए हैं।

चित्रकला का कलात्मक वस्तुओं के रूप में विकास शाही दरबारों और कस्बों व शहरों में हुआ। ऐसी परंपराओं में हम मुगलकालीन लघुचित्रों की गणना कर सकते हैं। मुगल चित्रकला (16वीं से 18वीं शताब्दी के बीच बनाई गई) अक्सर ईरानी (सफवी) और हिंदुस्तानी परंपराओं का खूबसूरत मिश्रण होती थी। मुगल और राजपूत कलाकारों ने अपनी अलग शैलियों के बावजूद एक–दूसरे को प्रभावित किया। जिल्दसाजी और पांडुलिपि–चित्रण दो संबद्ध कलाएं थीं, जो इसी समय विकसित हुईं। अत्यधिक चित्रित पादशाहनामा पांडुलिपि–चित्रण की कला में पारंगत कुशल फारसी कारीगरों की कारीगरी का अच्छा उदाहरण है। अन्य प्रसिद्ध सचित्र पांडुलिपियों में अकबरनामा शामिल है। ये दोनों अपनी उपलब्धियों का जश्न राजाओं के जीवन चरित्र हैं।

अन्य उदाहरण सचित्र जैन पांडुलिपियां हैं। ये पांडुलिपियां छठी शताब्दी से प्रकट होनी शुरू हुईं। जैनियों ने अपने प्राचीन ज्ञान को लिखकर सुरक्षित रखने का निश्चय किया। कुछ मामलों में पांडुलिपि तैयार करने के लिए सौदागरों ने कलाकारों को भुगतान किया। ये पांडुलिपियां लघुचित्रों द्वारा खूबसूरती से चित्रित की गई हैं। ऐसा माना जाता है कि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव खुद भी एक कुशल चित्रकार थे। प्रारंभिक सचित्र जैन पांडुलिपियों में अष्टसहस्रिका प्रज्ञा पारमिता शामिल है। जैन धर्म और दर्शन पर सबसे प्रसिद्ध लघुचित्र चित्रकला त्रिलोक्य दीपिका है।

प्रारंभिक चित्रकला फुरसन में बनाई जानेवाली कला–कृतियां थीं, जबकि कुछ आधुनिक कला–कृतियां तात्कालिक जरूरतों की पूर्ति के लिए तेजी से बनाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, होर्डिंग्स, पोस्टर और विज्ञापन–फिल्में जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए बनाई जाती हैं और हर हफ्ते बदल जाती हैं। प्रारंभिक चित्रकला के विपरीत इन होर्डिंग्स का जीवन छोटा होता है, क्योंकि वे बार–बार बदल दिए जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 30.1

1. सही या गलत का निशान लगाएं

   क. मधुबनी चित्रकला कर्मकांडों और धार्मिक परंपराओं के रूप में शुरू हुई।

   ख. गुफा–चित्रकला को शाही संरक्षण मिला।

   ग. अकबरनामा और पादशाहनामा राजाओं के जीवन–चरित्र?

2. कुछ स्थानों के नाम लिखें जहां प्रारंभिक गुफा–चित्रकला पाई जाती हैं।

30.2 भारतीय वस्त्र और पोशाकें

भौगोलिक और जलवायु संबंधी कारकों ने भारतीय लोगों के पहनावे को बहुत प्रभावित किया है। उत्तर भारत में जहां ऊनी और सूती दोनों तरह के कपड़े पहनते हैं, वहीं गरम जलवायु वाले दक्षिण भारत में लोग केवल सूती पकड़े पहनते हैं। गरम क्षेत्रों में पुरुषों के पहनावे में एक ऊपरी कपड़ा और लगभग डेढ़ गज का निचला कपड़ा शामिल है। उत्तर

भारत में पुरुष सिली हुई कमीज और पतलून भी पहनते हैं, जिन्हें कुरता–पाजामा कहते हैं। स्त्रियां या तो छह गज का बिना सिला कपड़ा पहनती हैं, जिसे साड़ी कहते हैं या फिर पुरुषों जैसे सिले हुए कपड़े, जो कुरता और सलवार कहलाते हैं। साड़ी का पहनावा विभिन्न क्षेत्रों की सांस्क तिक परंपराओं पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र और तमिलनाडु की स्त्रियां नौ गज की साड़ी पहनती हैं, जिसमें टांगों के बीच एक विभाजक होता है, जबकि केरल की स्त्रियां सिर्फ टखनों तक आने वाली चार या पांच गज की साड़ी पहनती हैं।

> ऐसा माना जाता है कि प्रारंभिक भारत में पहनावा बिना सिले कपड़ों का होता था। कहना कठिन है कि भारतीयों ने सिले हुए कपड़े कब पहनने शुरू किए, पर प्रारंभिक ईसा युग की चित्रकला और मूर्तियों में कुषाण पहरेदार और सैनिक पतलून और जैकेट पहने दिखाए गए हैं। अमरावती (आंध्र प्रदेश) अथवा ब हदीश्वरम (तमिलनाडु) जैसी प्राचीन मूर्तियों में केवल सेवक वर्ग और नर्तकियां ही सिले हुए कपड़ों में चित्रित की गई हैं, राजा या देवता नहीं।

राष्ट्रीय संग्रहालय में मथुरा संग्रहालय से लाई गई कनिष्क की बिना सिर की मूर्ति कोट पहने है।

भारत में कपास का उत्पादन प्रागैतिहासिक युगों से हो रहा है। हड़प्पा सभ्यता के सबसे बड़े शहरों में से एक मोहनजोदड़ो में कपास के प्रयोग के पक्के प्रमाण मिलते हैं। पुरातत्ववेत्ताओं को खुदाई में तकले प्राप्त हुए हैं। कपड़े बुननेवाले करघे के बारे में प्राचीनतम संदर्भ अथर्ववेद में मिलता है। कताई महिलाओं, खासकर विधवा और अविवाहिता स्त्रियों का काम था।

भारतीय वस्त्रों में संस्कृति झलकती है। उनकी हर चीज महत्वपूर्ण है – चुने गए रंग, आक ति और अवसर, जिन पर वे पहने जाते हैं। लाल उर्वरता का सूचक है और आम तौर पर वधू द्वारा अपनी शादी के अवसर पर पहना जाता है। गेरुआ और सफेद शुद्धता और त्याग के सूचक हैं और आम तौर पर आध्यात्मिक व्यक्तियों और विधवाओं द्वारा पहने जाते हैं। काला अशुभ माना जाता है, हालांकि दक्षिण भारत में गर्भवती स्त्रियां काले कपड़े पहनती हैं। संभवतः बुरी नजर से बचने के लिए वे ऐसा करती हैं। रंगाई परंपरागत रूप से नील और मजीठे जैसे वनस्पति–रंगों से की जाती थी, हालांकि अब ज्यादातर रंगरेजों ने सस्ते रासायनिक रंगों से रंगाई करनी शुरू कर दी है।

वस्त्रों पर आक तियाँ ज्यामितीय होती थीं। विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त वस्त्रों पर विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधों और जानवरों के चित्र हमें यह जानकारी देते हैं कि वे लोग किन चीजों से परिचित थे और किन चीजों को महत्वपूर्ण समझते थे। कमल या आम की आक ति भारत के ज्यादातर भागों में लोकप्रिय थी। भारत वस्त्रों की एक सम द्ध विविधता उत्पादित करता है। वाराणसी का जरीदार रेशम जिसे जामदानी और जामेवर कहा जाता है, कांचीपुरम की सोने की किनारियों वाला रेशम और असम, वारंगल और कर्नाटक का टसर रेशम की सुप्रसिद्ध किस्में हैं। सूती वस्त्र साधारण क्षैतिज करघों पर

आपकी टिप्पणियाँ

बुने जा सकते हैं, जबकि जरीमदार रेशम के लिए अनेक पैडलों वाले जटिल करघों की जरूरत पड़ती है। रेशमी कपड़े सूती कपड़ों से ज्यादा महंगे पड़ते हैं और कम ही लोग उन्हें खरीद सकते हैं।

विभिन्न प्रकार के वस्त्रों के लिए विभिन्न उत्पादन–तकनीकों की जरूरत पड़ती है। 'टाइ एंड डाइ' नामक वस्त्र, जिन्हें विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं में बंधिनी (राजस्थान और गुजरात), इक़त (उड़ीसा) या चुंगड़ी (तमिलनाडु) कहा जाता है, ऐसी प्रक्रिया से बनाया जाता है, जिसमें कपड़ा और कभी–कभी सूत बांधा और रंगा जाता है।

कलमकारी वस्त्र आंध्र की एक जीवित परंपरा है। 'कलमकारी' शब्द का अर्थ है कलम से कारी यानी कार्य करना। इसके चित्रकारों को (चौदहवीं से सत्रहवीं शताब्दियों तक) दक्कनी सल्तनतों और अमीर वर्गों द्वारा संरक्षण प्रदान किया जाता था। उसमें चित्रित विषय मुस्लिम और हिंदू विषयों का मिश्रण होते थे। कितनी दिलचस्प बात है कि आज बेची जाने वाली 'कलमकारी' मशीन से बनाई और ब्लॉक से प्रिंट की गई होती है! असल में आज उत्पादित किया जाने वाला ज्यादातर कपड़ा बिजली के करघों पर बनाया जाता है।

पाठगत प्रश्न 30.1

1. बंधिनी तकनीक से आप क्या समझते हैं और बंधिनियां कहां बनाई जाती हैं?

____

2. 'कलमकारी' से क्या अभिप्राय है?, व्याख्या कीजिए।

____

3. सही या गलत का निशान लगाएं–

   (क) सूती कपड़े गरमी के मौसम में पहने जाते हैं।

   (ख) रेशमी कपड़े सूती कपड़ों से सस्ते होते हैं।

   (ग) बांधकर रंगे जानेवाले कपड़े जामदानी कहलाते हैं।

   (घ) नील और मजीठा वनस्पति रंग हैं।

30.3 साहित्य

अब हम अपने सम द्ध और विविधतापूर्ण साहित्य पर नजर डालेंगे, जो महाकाव्यों से लेकर लोकगीतों और शास्त्रीय से लेकर लोकप्रिय तक सभी रूपों में मिलता है।

भारत वह देश है, जहां अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। यहां 325 उपभाषाएं या बोलियां बोली जाती हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी उत्तर प्रदेश की मुख्य भाषा है और वहां के लोग 85 बोलियां बोलते हैं, जो हिंदी के क्षेत्रीय रूप हैं।

विषय की द ष्टि से हमारा साहित्य धार्मिक भी है और गैर–धार्मिक भी, जिसमें लोगों या महल के जीवन को लेखन का विषय बनाया गया है। संस्कृत में लिखे गए वेद हमारे धार्मिक साहित्य के अंग हैं, जबकि शूद्रक की म च्छाकटिका जिसका शाब्दिक अर्थ है मिट्टी का खिलौना, जैसी कृतियां सांसारिक विषयों पर लिखी गई हैं।

क्षेत्रीय रूपों की एक व्यापक श ंखला भी पाई जाती है, विशेषकर बड़े महाकाव्यों के पुनर्कथन में। सभी जानते हैं कि जहां वाल्मीकि ने संस्कृत में 'आदिकाव्य' के नाम से प्रसिद्ध रामायण लिखी, वहीं तुलसीदास ने उसे हिंदी में लिखा जो 'रामचरितमानस' के नाम से विख्यात हैं। चोलो के दरबारी कवि कंबन ने तमिल में रामायण लिखी, जबकि तेलुगु में रामायण का लोकप्रिय रूप एक किसान महिला मोल्ला ने लिखा।

यह एक दिलचस्प बात है कि रचना लिखने की शैली भी लेखक की सामाजिक स्थिति से प्रभावित होती है। उदाहरण के लिए, जहां कंबन कुलीन शासक वर्ग की भाषा और बिंग इस्तेमाल करते हैं, वहीं मोल्ला किसान महिला की तरह लिखती हैं और सूर्यास्त का वर्णन करते हुए वह कहती हैं कि सूरज इस तरह आसमान से नीचे चला गया जैसे कोई मजदूर दिन भर मेहनत करने के बाद लौट जाता है।

अब हम संक्षेप में महाभारत के कुछ क्षेत्रीय और लोक–रूपों को देखेंगे, जिसे संस्कृत में संत वेद व्यास द्वारा लिखा माना जाता है। महाभारत के एक तेलुगु रूप में कहा गया है कि जब युधिष्ठिर के नेत त्व में पांडव दुर्योधन के साथ पांसा खेलते हुए अपनी संपत्ति और स्वतंत्रता हार गए, तो द्रौपदी ने पांसे के खेल में भाग लेने के अपने अधिकार का इस्तेमाल किया। अपने विरोधी के प्रति तिरस्कार दर्शाते हुए उसने पांसे को लात मारकर फेंक दिया और अपने पतियों द्वारा हारी हुई चीजें जीतनी शुरू करदीं। दक्षिण भारत के अनेक भागों में द्रौपदी देवी के रूप में पूजी जाती हैं।

महाभारत के एक तमिल रूप में एक पांड्य रानी अलीरानी का उल्लेख मिलता है, जो पुरुषों से घणा करती थी और केवल स्त्रियों की सहायता से राज करती थी। कहा जाता है कि उसने अर्जुन को युद्ध में हरा दिया और बाद में उससे शादी कर ली। हिमालय क्षेत्र की महाभारत–कथाओं में भीम केंद्रीय पात्र है। हिमाचल प्रदेश के मंडी क्षेत्र में भीम और उसकी कबीलाई पत्नी हिडिंगा मुख्य देवता हैं। द्रौपदी द्वारा पांच भाइयों के साथ शादी करने की महाभारत की परंपरा के अनुसार बहुपति–प्रथा अभी भी मौजूद है। महाभारत के छत्तीसगढ़ी रूप पंडवानी में भी भीम केंद्रीय पात्र है। उत्तर–पूर्व के अनेक कबीली समुदाय सीधे भीम और हिडिंबा के वंशज होने का दावा करते हैं। उदाहरण के लिए, दीमापुर के दारंग कचारी खुद को भीम–नी–फा अर्थात भीम के बच्चे बताते हैं।

हालांकि महाभारत की अनेक घटनाओं और चरित्रों का अभिज्ञान उत्तर भारत से होता है, फिर भी महाभारत की एक समद्ध परंपरा है, जो पूरे भारत में फैली है। विभिन्न संप्रदाय उसे अपने–अपने ढंग से समझते हैं और उसमें विभिन्न स्थानीय कथाएं जोड़ते हुए उसे संप्रेषित करते हैं। इस प्रकार महाभारत लोगों की विभिन्न संस्कृतियों को प्रतिबिंबित करता है। वह शास्त्रीय वर्णनों से लेकर लोकगाथाओं तक में मिलता है।

पाठगत प्रश्न 30.2

1. वेद किस प्रकार के साहित्य का प्रतिनिधित्व करते हैं?

2. भारत के किन क्षेत्रों में आप भीम और हिडिंबा की पूजा किए जाने की अपेक्षा करते हैं?

____

3. रामायण का हिंदी रूप किसने लिखा और वह किस नाम से जाना जाता है?

____

30.4 खाद्य संस्कृति

अब हम अपनी खाने की आदतों पर नजर डालते हैं। हम पाएंगे कि किस तरह उनमें एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में अंतर पाया जाता है और समय के साथ–साथ किस तरह वे अंतःक्रिया के कारण बदल गई है।

विभिन्न क्षेत्रों में उगने वाली फसलों के स्वरूप, विभिन्न संप्रदायों की सांस्कृतिक प्रथाओं और उपभोक्ता वर्ग/संप्रदाय या लोगों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति के कारण भारतीयों की खाने की आदतों में अंतर पाया जाता है। सिंधु–गंगा क्षेत्र का मुख्य भोजन जहां गेहूं हैं, वहीं दक्षिण भारतीयों का मुख्य भोजन चावल है क्योंकि विंध्याचल पर्वत के दक्षिण में स्थित क्षेत्रों में गेहूं बहुत कम उगता है।

खाद्यान्नों के पुरातात्विक प्रमाणों से हमें अपने पूर्वजों द्वारा खाए जाने वाले खाने के बारे में कुछ जानकारी मिलती है। उन निवास–स्थानों, जहां लोग वास्तव में रहे थे (जैसे बलूचिस्तान में मेहरग़ का पाषाणकालीन स्थल), गेहूं का प्रमाण मिलता है या फिर कर्नाटक में ब्रह्मगिरी और हल्लूर, आंध्र प्रदेश में पिकलिहल और तमिलनाडु में पैयमपल्ली जैसे दक्षिणी स्थलों पर विशेष रूप से चावल, रागी और कुथली के प्रमाण मिले हैं। पिकलिहल से मिले प्रमाण बताते हैं कि वहां के लोग पशुपालक थे, जो गाय–बैल और भेड़–बकरियां पालते थे।

पानी और अनाज एकत्र करने के साथ ही खाना पकाने के लिए भी बर्तन इस्तेमाल किए जाते थे। भारतीय पुरातत्ववेत्ताओं ने प्राचीन संस्कृतियों को उनके द्वारा बनाए गए बर्तनों, जैसे कि चित्रित धूसर बर्तन, काले पॉलिश किए हुए बर्तन आदि के आधार पर वर्गीकृत किया है। तमिलनाडु में अडिचनल्लूर जैसे कांस्ययुगीन पुरातात्विक स्थलों से कांसे और सोने के बर्तन भी मिले हैं। जाहिर है कि उनका इस्तेमाल धनी लोग करते थे।

ज्यादातर क्षेत्रों की अपनी अलग पाक–प्रणाली है। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु चावल–आधारित संस्कृतियां हैं। दक्षिण भारतीयों द्वारा बनाए जाने वाले इडली, डोसा और उपमा अब उत्तर भारत में भी लोकप्रिय हो गए हैं और उत्तर भारतीय प्रदेशों में इनकी सुलभता विभिन्न संप्रदायों में होने वाली अंतःक्रिया की प्रमाण है। पश्चिम बंगाल की तरह तटीय संस्कृति वाला केरल भी अपने मछली के पकवानों के लिए जाना जाता है। मुगलों के आगमन के साथ तंदूरी चिकन और सीख कवाब जैसे 'मुगलई' पकवान और तरबूज जैसे फल भारतीय पाक–प्रणाली के अंग बन गए। अवधी पाक–प्रणाली (अवध पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक क्षेत्र है) आज मुगलई नवाबी संस्कृति को प्रतिबिंबित करती है। सोलहवीं शताब्दी में यूरोपियों, खासकर पुर्तगालियों ने भारतीय भोजन में आलू, टमाटर और हरी मिर्च का समावेश किया, जो अब हमारी पाक–क्रिया का अनिवार्य अंग है। इस दौरान फ्लासबीन (फ्रांसीसी सेम) भी भारतीय पाक–प्रणाली का अंग बन गई। इस प्रकार सांस्कृतिक अंतःक्रिया ने हमारी खाने की आदतों में बदलाव किया है।

आपकी टिप्पणियाँ

परिवार में एक साधारण भोजन में चावल या रोटी, दाल और सब्जी शामिल रहती हैं। घरों में दैनिक भोजन जहां आम तौर पर स्त्रियों द्वारा पकाया जाता है, वहीं बड़े स्तर पर यह काम प्रायः पुरुष करते हैं। भारत में अनेक गरीब लोग केवल दलिया खा पाते हैं। धनी लोग विभिन्न प्रकार का भोजन खा सकते हैं, जिसमें शाकाहारी और मांसाहारी दोनों तरह के पकवान शामिल हैं। मांसाहारी पकवान शाकाहारी पकवानों से ज्यादा महंगे होते हैं। शादी–ब्याह जैसे विशेष अवसरों पर सभी संप्रदाय अनेक पकवानों वाला प्रीतिभोज रखते हैं, जिसमें उनके क्षेत्र की अलग महक रहती है।

पाठगत प्रश्न 30.3

1. भारत की मुख्य फसलें कौन–सी हैं और वे किस तरह खान–पान की आदतों को आकार देती हैं?

   ____

2. दक्षिण भारत के कुछ लोकप्रिय पकवानों के नाम लिखिए।

   ____

3. निम्नलिखित का मिलान कीजिए:

रोटी	केरल
उपमा	पुर्तगाली
सींख कबाब	तमिलनाडु
मिर्च	उत्तर भारत
मछली	मुगलई

आपने क्या सीखा

हमने सांस्कृतिक उत्पादन के रूपों और क्षेत्रीय भिन्नताओं के साथ–साथ अपनी पहनने–ओढ़ने और खान–पान की आदतों के संदर्भ में सांस्कृतिक अंतःक्रिया के स्वरूप पर नजर डाली। हमने देखा कि हमारे प्रारंभिक पूर्वज मिट्टी के बर्तन जैसी वस्तुएं बनाते थे, जो उपयोगी होने के साथ–साथ सुंदर भी होती थीं। किंतु बाद के समय में चित्र जैसी कलाकृतियां शाही संरक्षण में बनने लगीं।

हमने यह भी देखा कि लोग जलवायु की जरूरतों के मुताबिक कपड़े पहनते हैं और पोशाकें एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में बदल जाती हैं। हमने कपड़े की किस्मों, आक तियों और कलमकारी व चुंगडी जैसे कुछ विशेष प्रकारों के बारे में भी जाना। साहित्य के खंड में हमने देखा कि भारतीय भाषाओं की व्यापक श ंखला ने हमारे साहित्य की सम द्धि में योगदान किया है। यहां हमने महाभारत के कुछ क्षेत्रीय और लोक–रूपों पर भी गौर किया। अंत में हमने भारत के विभिन्न क्षेत्रों की खानपान की आदतों और उनमें सतत सांस्कृतिक अंतःक्रिया के जरिये आए बदलावों का अध्ययन किया।

पाठांत प्रश्न

1. अजंता और एलोरा की कलाओं के बारे में आप क्या जानते हैं?
2. आज के फिल्मी होर्डिंग्स सचित्र पांडुलिपियों में पाई जानेवाली चित्रकला से किस रूप में भिन्न हैं?
3. परंपरागत भारतीय वस्त्रों में रंगों के महत्त्व का वर्णन कीजिए।
4. महाभारत महाकाव्य के कुछ क्षेत्रीय रूपों की संक्षेप में चर्चा कीजिए।
5. भारत में क्षेत्रीय पाक–प्रणाली के स्वरूप और विविधता का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

चित्रकला

1. क. सही, ख. गलत, ग. गलत और घ. सही
2. प्रारंभिक गुफा–चित्र उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर और बांदा, मध्य प्रदेश के भीमबेटका और सिंगनपुर, विंध्याचल पर्वतमाला की महादेव पहाड़ियों और कर्नाटक के बेल्लारी में पाई जाती है।

वस्त्र और पोशाकें

1. बंधिनी की प्रक्रिया में सूत और कभी–कभी कपड़ा बांधकर रंगा जाता है। बंधिनियाँ गुजरात और राजस्थान, उड़ीसा के इकत और मदुरै (तमिलनाडु) मे चुंगडी नाम से बनाई जाती हैं।
2. 'कलमकारी' का शाब्दिक अर्थ है कलम के साथ कारी यानी कार्य करना।
3. क. सही, ख. गलत, ग. गलत और घ. सही
   1. संस्कृति में लिखे गए वेद हमारे धार्मिक साहित्य के अंग हैं।
   2. भीम और हिडिंबा हिमाचल प्रदेश के मंडी और किन्नौर क्षेत्र में पूजे जाते हैं।
   3. रामायण का हिंदी रूप तुलसीदास ने लिखा, जिसे रामचरितमानस के नाम से जाना जाता है।

खाद्य संस्कृति

1. भारत की मुख्य फसलें चावल और गेहूं हैं। चावल दक्षिण भारत की प्रमुख फसल है और इसलिए दक्षिण भारतीय मूलतः चावलभोजी हैं। चूंकि उत्तर भारत में बहुत गेहूं बहुतायत में पैदा होता है, इसलिए वह उत्तर भारतीयों का मुख्य भोजन है।
2. इडली, डोसा और उपमा दक्षिण भारतीरय पाक–प्रणाली के कुछ लोकप्रिय पकवान हैं।

आपकी टिप्पणियाँ

3. निम्नलिखित का मिलान कीजिए के उत्तरः

रोटी	उत्तर भारत
उपमा	तमिलनाडु
सींख कबाब	मुगलई
मिर्च	पुर्तगाली
मछली	केरल

पाठान्त प्रश्नों के संकेत

1. देखिए अनुच्छेद 30.1
2. देखिए अनुच्छेद 30.1
3. देखिए अनुच्छेद 30.2
4. देखिए अनुच्छेद 30.3
5. देखिए अनुच्छेद 30.5

शब्दावली

जरी : बुनाई का पैटर्न, जिसमें आम तौर पर रेशमी कपड़े में सोने का धागा लगाया जाता है

पाक-प्रणाली : खाना पकाने की शैली

कुलीन : लोगों का एक चुनिंदा समूह या वर्ग

अग्निसह मिट्टी : भट्ठी में तपाई या पकाई गई मिट्टी के बर्तन या भवन–निर्माण–सामग्री बनाने के काम आती है

हिन्दुस्तानी नील : नील के पौधे से प्राप्त एक नीला रंग

मजीठा : मजीठ नामक लता की जड़ों और डंठलों को उबालकर निकाला जाने वाला लाल रंग

लघुचित्र : छोटे पैमाने पर बनाए गए चित्र

बहुपति-प्रथा : विवाह की पद्धति, जिसमें एक स्त्री के एक से अधिक पति होते हैं

सफ़वी : ईरान के फकीर सफी द्वारा चलाया गया राजवंश। यह शब्द अकसर भारतीय कला और वास्तुकला पर फारसी प्रभाव को सूचित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है

आपकी टिप्पणियाँ

31

मध्यकालीन राज्य

इस अध्ययन–सामग्री में मध्यकालीन भारत में शामिल राज्यों के उदय, स्वरूप और विस्तार पर चर्चा की गई है। यहाँ दो मुख्य राज्य–संरचनाओं, दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य पर चर्चा की गई है। मध्यकालीन शासक मूलतः भारत मे बाहर से आए, इसलिए उन्हें देशी राजनीतिक संरचनाओं को प्रभावित भी करना था और उनसे सीखना भी था। मध्यकालीन राज्य का वर्णन एक ऐसे राज्यतंत्र के रूप में किया जा सकता है, जिसका मुखिया सशक्त शासक था, जिसे पदानुक्रमानुसार संगठित प्रशासनिक तंत्र का समर्थन प्राप्त था और धर्म की सत्ता द्वारा वैधता प्रदान की गई थी। सेना, कुलीन नौकरशाही और भूमि–राजस्व राज्य के मूल तत्त्व बने रहो। लेकिन हर शासक के लिए सत्ता में हिस्सा चाहने वाले एक दूसरे गुटों के बीच संतुलन बिठाना जरूरी था।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आपः

- मध्यकालीन भारत में राज्य के विकास का विश्लेषण कर सकेंगे;
- मध्यकालीन राज्य के स्वरूप का स्मरण कर सकेंगे; और
- मध्यकालीन राज्य की संस्थाओं का वर्णन कर सकेंगे।

31.1 प ष्ठभूमि

गुप्त राज्य के पतन के बाद भारतीय राज्यतंत्र ने विकेंद्रीकरण और विभिन्न क्षेत्रीय राज्यों का उदय देखा प्रारंभिक युग से मध्यकालीन युग में परिवर्तन के दौरान तीन क्षेत्रीय सत्ताओं – बंगाल के पालों, उत्तर भारत के प्रतिहारों और प्रायद्वीपीय भारत के राष्ट्रकूटों के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष देखने को मिला। जल्दी ही उत्तर भारत में साम्राज्य बनने की महत्त्वाकांक्षा रखने वाले छोटे राजपूत राज्यों का विकास हुआ। किंतु उत्तर–पश्चिम दिशा से तुर्कों के आगमन से एक विस्त त मध्यकालीन राज्य के उदय की नई प्रक्रिया दिखाई दी।

31.2 दिल्ली सल्तनत

इल्बरी तुर्क

तेरहावीं शताब्दी में उत्तर भारत में एक नए प्रकार के राजवंशीय प्रभाव क्षेत्र का उदय हुआ। दिल्ली सल्तनत की उत्पत्ति मुहम्मद गोरी की विजय से हुई है, जिसने 1151 में गजनी को निकाला और फिर 1157 में गजनवियों को पंजाब से खदेड़ दिया। 1186 में गजनवियों को उखाड़ फेंकने के लिए मुहम्मद गोरी ने सिंधु घाटी में कूच किया। मार्ग में उसकी सेनाओं ने मुलतान (1175), सिंध (1182), पेशावर और लाहौर (1186) को जीता। 1190 में उसने भटिंडा पर अधिकार किया जो राजपूत राजा प थ्वीराज चौहन के साथ युद्धों की वजह बन गया, जिसे उसने अंततः 1192 में हरा दिया। गंगा घाटी के पश्चिमी मार्गों से राजपूतों के आधिपत्य को समाप्त कर गोरी की सेनाएं पूर्व की ओर तब तक बढ़ती रहीं, जब तक कि बख्तयार खिलजी ने अंततः 1200 में बंगाल में लक्ष्मणसेन को नहीं हरा दिया। मुहम्मद गोरी की 1206 में म त्यु हो गई। तब उसके विश्वासपात्र मामलुक (पूर्व दास) सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने, जो कि दिल्ली का सेनापति था, अपनी स्वतंत्र सत्ता घोषित कर दी। इल्बरी तुर्कों का राजवंश उस कड़ी में पहला था, जो सामूहिक रूप से दिल्ली सल्तनत के रूप में जानी गई। बाद में गोरी और गजनवी के दिल्ली को वापस अपने अधिकार–क्षेत्र में लाने के प्रयासों को अंततः दिल्ली के सुल्तान इल्तुतमिश ने 1211–1236 में असफल कर दिए। इल्तुतमिश को उत्तर भारत में तुर्की विजयों का वास्तविक नेता माना जाना चाहिए। उसने नई राजधानी दिल्ली को राजतंत्रीय किस्म की सरकार और शासक वर्ग प्रदान किए। उसने अनुदान के वेतन के बदले भूमि से राजस्व देने की प्रथा शुरू की। उसने एक केंद्रीय सेना रखी और टंका (चांदी) तथा जीतल (तांबा) के सिक्के चलाए। प्रसिद्ध कुतुब मीनार उसी के शासन–काल में पूरी हुई। इल्तुतमिश ने अपनी बेटी रजिया (रजियाउद्दीन) को अपनी उत्तराधिकारिणी के रूप में नामांकित किया। इसके बावजूद नए राज्य में इल्तुतमिश की म त्यु के बाद के दस वर्षों में गंभीर दलीय विवाद होने के कई कारण थे जिनके चलते उसके चार बच्चे या बच्चों के बच्चे बारी–बारी से गद्दी पर बिठाए और उतार दिए गए। यह मुख्यतः इल्तुतमिश के निजी दासों के प्रयासों से कायम रहा, जो चालीस (चहलगान) के नाम से जाना गया। यह एक राजनीतिक दल था, जिसकी सदस्यता प्रतिभा और इल्तुतमिश के परिवार के प्रति निष्ठा से मिलती थी। 1246 में राजनीतिक स्थिति में बदलाव आया, जब चालीस के एक कनिष्ठ सदस्य गयासुद्दीन बलबन ने नवीनतम सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद (शासन–काल 1246–66) के प्रशासन के भीतर मजबूत हैसियत हासिल कर ली। पहले सुल्तान का नायब (सहायक) और बाद में खुद सुल्तान (शासन–काल 1266–87) रहा बलबन अपने समय की सबसे महत्त्वपूर्ण राजनीतिक हस्ती था। बलबन ने 'खुदा की परछाई' (जिल्ल–अल–अल्लाह) के रूप में सुल्तान की विशेष स्थिति पर जोर दिया। बलबन ने दरबारी शान, मर्यादा और शिष्टाचार पर बल दिया। वह राजपुरुषों तक को ऐसे गंभीर दंड देने में यकीन रखता था, जो उदाहरण बन सकें। किंतु बलबन के आसन्न उत्तराधिकारी न तो प्रशासन संभालने में सक्षम थे, न पुराने तुर्की राजपुरुषों और खिलजियों के नेत त्व वाली नई ताकतों के बीच अंतर्दलीय संघर्षों को टालने में। दोनों गुटों के बीच हुए एक संघर्ष के बाद 1290 में जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने सल्तनत हासिल की।

खिलजी

खिलजियों को पुराने राजपुरुषों द्वारा शुद्ध तुर्की कुल से आया हुआ नहीं माना जाता था (हालांकि थे वे तुर्क ही), और उनकी सत्ता–प्राप्ति के लिए उतावले बाहरी व्यक्ति मददगार रहो, जिनमें से कुछ भारत में जन्मे मुसलमान थे, जो बलबन और चहलगान के अनुयायियों की पकड़ ढीली होने पर अपनी हैसियत बढ़ने की उम्मीद कर सकते थे। कुछ हद तक तब खिलजियों की सत्ता पर पकड़ बदलते सत्ता–संतुलन की ओर एक कदम था, जो दिल्ली सल्तनत के बाहर, मध्य एशिया और ईरान में, चलने वाली गतिविधियों और उत्तर भारत में तुर्की शासन की स्थापना के बाद हुए बदलावों, दोनों का नतीजा माना जाता था। खिलजियों के तहत विजयों की बाह्य नीति और पूर्ण नियंत्रण की आंतरिक पद्धतियों का पालन सैनिक अभियानों और नियंत्रणों के जरिये किया जाता था। खिलजियों ने अपने अफगान–आक्रमण का इस्तेमाल उन असंतुष्ट राजपुरुषों की निष्ठा जीतने के लिए किया, जो यह महसूस करते थे कि पिछले सुल्तानों ने उनकी उपेक्षा की थी। जलालुद्दीन खिलजी (1290–1296) ने बलबन के शासन–काल के कुछ कठोर पहलुओं को हलका करने की कोशिश की। वह पहला शासक था, जिसने यह राय जाहिर की कि शासक शासितों के तत्पर समर्थन पर आधारित होना चाहिए और चूंकि हिंदुस्तानियों में बहुमत हिंदुओं का है, इसलिए शासन वास्तव में पूर्ण इस्लामी नहीं हो सकता।

1296 में उसके महत्त्वाकांक्षी भतीजे और उत्तराधिकारी अलाउद्दीन खिलजी द्वारा उसकी हत्या कर दी गई। अलाउद्दीन खिलजी के शासन–काल (1296–1316) में सल्तनत ने संक्षेप में साम्राज्य का स्वरूप ग्रहण कर लिया। केंद्रीकरण और विस्तार के अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए अलाउद्दीन को धन, निष्ठावान और पर्याप्त आज्ञाकारी अमीरवर्ग तथा अपने निजी नियंत्रण के अधीन एक दक्ष सेना की दरकार थी। उसने इससे पूर्व 1292 में धन की समस्या आंशिक रूप से सुलझाई थी जब उसने मध्य भारत में भेलसा में धावा बोला था। अपनी स्थिति सुद ढ़ करने और नई सेना गठित करने में उस सफलता का उपयोग करने के लिए उसने 1296 के शुरू में दक्षिण में यादवों की आश्चर्यजनक रूप से सम द्ध राजधानी देवगिरि (आधुनिक दौलताबाद) पर आक्रामक किंतु अनधिक त धावा बोला। देवगिरि की दौलत ने न केवल उसके इस बलात अपहरण के लिए धन जुटाया, बल्कि उसके राज्य–निर्माण की योजनाओं के लिए अच्छा आधार भी प्रदान किया। केंद्रीकरण और भारी क षि–कर अलाउद्दीन के शासन की मुख्य विशेषताएं थीं। क षि–कर उगाहने की मात्रा और क्रियाविधि ने सुल्तान को दो उद्देश्य हासिल करने में सहयता की : 1. अनाज–वाहकों को कम कीमतों पर आपूर्ति सुनिश्चित करना, और 2. राज्य के अनाज के गोदामों को सुरक्षित भंडारों से भरना, जो उसके प्रसिद्ध कीमत–नियंत्रणों से जुड़कर एक विशाल स्थायी सेना रखने की नाजुक वित्तीय समस्या के समाधान के रूप में सामने आया। अलाउद्दीन की म त्यु (1316) के बाद पांच वर्षों के भीतर खिलजियों ने अपनी सत्ता खो दी। उत्तराधिकार के विवाद के परिणामस्वरूप महल के रक्षकों ने मलिक काफूर की हत्या कर दी और सुल्तान के तीसरे बेटे कुतुबुद्दीन मुबारक शाह ने अलाउद्दीन के छह–वर्षीय बेटे को अंधा कर सल्तनत हासिल कर ली (1316–20)। वह अपने पसंदीदा सेनापति हिंदू धर्मांतरित खुसरो खान के हाथों मारा गया। खुसरो के शासन का विरोध तुरंत शुरू हो गया, जिसकी अगुवाई देवपालपुर में

पश्चिमी अभियानों के प्रमुख गाजी मलिक ने की। खुसरो हार गया और चार महीने बाद उसकी हत्या कर दी गई।

तुगलक

गयासुद्दीन तुगलक के नाम से गद्दी पर बैठनेवाले गाजी मलिक (शासन–काल 1320–25) ने ताजपोशी से पहले मंगोलों के खिलाफ सीमाओं की सफलतापूर्वक रक्षा करने के लिए प्रसिद्धि पाई थी। तुगलक भी संपूर्ण भारत पर शासन करने की इच्छा रखते थे। गयासुद्दीन (1320–25) की वारंगल, उड़ीसा और बंगाल की मुहिम इसी उद्देश्य को लेकर थी। उसने दिल्ली के निकट तुगलकाबाद शहर का निर्माण कराया। बंगाल की मुहिम से लौटते हुए सुल्तान की हत्या कर दी गई, जब दिल्ली के निकट अफगानपुर में उस पर लकड़ी का एक मंडप गिर पड़ा। मुहम्मद बिन तुगलक के शासन (1325–51) को सल्तनत के उत्थान और पतन दोनों के रूप में अंकित किया गया। 1296 से 1335 तक का समय लगभग सतत केंद्रीकरण और विस्तार के दौर के रूप में देखा जा सकता है। दिल्ली पर फिरोजशाह तुगलक के शासन–काल के इतिहास में समकालीन इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी कहता है कि 'इतिहास वर्ष क्रम के अनुसार घटनाओं के विवरण अर्थात् पैगंबरों, खलीफाओं, सुल्तानों और धर्म तथा सरकार के महान लोगों के ऐतिहासिक अभिलेखों और परंपराओं का ज्ञान है।' तुगलक वंश तैमूर के हमले के बाद जल्दी ही समाप्त हो गया, लेकिन सल्तनत बची रही, हालांकि वह केवल पुरानी सल्तनत की छाया ही रही। तैमूर के प्रतिनिधि ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया और वह नया सुल्तान घोषित कर दिया गया, जो पंद्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के प्रारंभिक वर्षों तक (1414–1451) शासन करने वाले सैयद वंश का पहला शासक था। उसका शासन अल्पकालिक था और दिल्ली के आसपास लगभग 200 मील के घेरे में सीमित था। उसने तंत्र को चालू रखा, जब तक कि उनसे ज्यादा योग्य लोधी वंश ने उसे नहीं संभाल लिया। लोधी शुद्ध अफगान मूल के थे, जिन्होंने तुर्की कुलीनता पर ग्रहण लगा दिया।

पाठगत प्रश्न 31.1

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके पुनः लिखिए:

1. 1168 में गजनवियों को उखाड़ फेंकने के लिए मुहम्मद गोरी ने सिंधु घाटी में कूच किया।

   ____

2. मुहम्मद गोरी की सेनाओं ने 1157 में मुलतान, 1128 में सिंध और 1168 में पेशावर और लाहौर को जीता।

   ____

3. इल्तुतमिश को दक्षिण भारत में तुर्की विजयों का वास्तविक नेता माना जाना चाहिए।

   ____

4. दो गुटों के बीच हुए संघर्ष के बाद 1209 में जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने सल्तनत हासिल की।

   ____

5. 1269 में जलालुद्दीन खिलजी के महत्त्वाकांक्षी भतीजे और उत्तराधिकारी अलाउद्दीन खिलजी द्वारा उसकी हत्या कर दी गई।

31.3 मुगल

1526 में मध्य एशिया से आए बाबर ने भारत में मुगल वंश की स्थापना की। बाबर ने तैमूर और चंगेज खान दोनों से उत्तराधिकार प्राप्त किया। दिल्ली और गंगा घाटी की उसकी जीतें दक्षिण एशिया में सैनिक सत्ता के उभार के आखिरी कदम से पहले की थीं। दक्षिण एशिया में महानतम सुल्तान मुगल सम्राट थे, जिन्होंने (बाबर और तैमूर के जरिये तुर्कों से अलग होकर भी) फारसी शाही संस्क ति अपनाई और तुर्कों, अफगानों और अन्य समस्त सुल्तानों से खुद को प्रतीकात्मक रूप से ऊंचा उठाने के लिए *पादशाह* की फारसी पदवी ग्रहण की। बाबर चुगताई तुर्क था, जो उजबेक सेनाओं से बचने के लिए समरकंद के पास अपनी पुश्तैनी जमीनें छोड़कर भाग निकला था। उसने गंगा घाटी में अवसर पाया, जहाँ उसने विरोधियों को नष्ट करने के लिए उजबेक शैली में बंदूकों और तोपों से लैस रिसाले के साथ कसे हुए तेज घोड़े इस्तेमाल किए। 1526 में उसने पंजाब से बंगाल तक सुल्तानों पर विजय प्राप्त कर ली थी लेकिन विरोधी बचे रहो। तेरहा साल बाद एक अफगान सैनिक ने जो लोधियों और बाबर के लिए युद्ध लड़ चुका था, जौनपुर में अपनी फारसी तालीम का प्रदर्शन करने के लिए अपना नाम शेरशाह रख लिया था, बंगाल और बिहार में एक नए वंश की घोषणा की। शेरशाह की सेनाओं ने तब बाबर के बेटे हुमायूँ को हराकर वापस अफगानिस्तान खदेड़ दिया, जहाँ हुमायूँ ने निर्वासन में अपने बेटे अकबर को पाला। शेर शाह की म त्यु के बाद उसका सूर वंश नहीं बचा, हालांकि प्रशासनिक नवीनताएं और बंगाल से पंजाब तक ट्रंक रोड का निर्माण उसकी स्थायी उपलब्धियां रहीं। शेरशाह की म त्यु के शीघ्र बाद 1555 में हुमायूँ ने दिल्ली को जीत लिया। वहाँ दुर्घटना के कारण उसकी म त्यु हो गई। इसके बाद उसका तेरहा वर्षीय बेटा अकबर अपने संरक्षक बैरम खाँ की देखरेख में गद्दी पर बैठा। अकबर की ताजपोशी 1556 में हुई जब बैरम खाँ ने लाहौर, दिल्ली, आगरा और जौनपुर के फौजी किलों वाले शहर जीते। संरक्षक के पद से हटाकर मार दिए जाने से पहले बैरम खाँ ने मालवा और राजस्थान पर भी फतह हासिल की। अकबर ने पचास साल (1556–1605) राज किया। वह अंत तक जीत हासिल करता गया। उसकी सेनाओं ने आकार, धन–प्राप्ति, नेत त्व, प्रौद्योगिकी और सफलता में पहले की सारी सेनाओं को पीछे छोड़ दिया। उसकी म त्यु के समय उसका अधिकार–क्षेत्र काबुल, कश्मीर और पंजाब से गुजरात, बंगाल और असम तक फैल गया था और अभी भी दक्षिण में तथा चारों तरफ पहाड़ों में बढ़ता जा रहा था। उसकी दमक उसके बेटे जहाँगीर (1605–1627), पोते शाहजहाँ (1627–1658) और परपोते औरंगजेब (1658–1707) तक पहुंची, जिसकी म त्यु के बाद शाही राज्य समाप्त हुआ। हालांकि यह वंश 1858 तक कायम रहा, जब इसे अंग्रेजों द्वारा अपदस्थ कर दिया गया। अपनी चरम अवस्था में मुगल साम्राज्य का भारतीय इतिहास में अभूतपूर्व संसाधनों पर अधिकार था और वह लगभग पूरे उपमहाद्वीप तक फैला था। 1556 से 1707 के बीच अपनी आश्चर्यजनक धन–संपदा और वैभव के स्वर्णिम दौर में मुगल साम्राज्य पर्याप्त सक्षम और केंद्रीक त संगठन था, जिसमें कर्मचारी, धन और सूचना का एक व्यापक समूह मुगल सम्राट और उसके गुप्त अमीर वर्ग को समर्पित था।

इस अवधि के दौरान साम्राज्य के विस्तार का श्रेय बाहरी दुनिया के साथ भारत के बढ़ते वाणिज्यिक और सांस्क तिक संपर्क को जाता है। उपमहाद्वीप में सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियां यूरोपीय और गैर–यूरोपीय व्यापारिक संगठनों की स्थापना और विस्तार लेकर आईं। मुख्य रूप से विदेश में मांग वाली वस्तुओं की प्राप्ति के लिए भारतीय इलाके घने स्थलमार्ग और तटीय व्यापारिक तंत्र के जरिये एक–दूसरे के नजदीक आए। कीमती धातुओं के आंतरिक आधिक्य ने इसे और बढ़ावा दिया। व्यापक विश्व के संग बढ़ते संबंध के साथ नई विचारधाराएं और प्रौद्योगिकियां भी आईं, जिन्होंने शाही प्रासाद को चुनौती दी भी और सम द्ध भी किया। किंतु साम्राज्य अपने–आप में एक विशुद्ध भारतीय ऐतिहासिक अनुभव था। मुगल संस्क ति ने फारसी–इस्लामी और स्थानीय भारतीय तत्त्वों का मेल कर उनका एक अलग किंतु रंग–बिरंगा जोड़ बना दिया। हालांकि अठारहावीं शताब्दी के प्रारंभ तक क्षेत्रों ने पुनः अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करनी शुरू कर दी थी, फिर भी मुगल–काल शाही केंद्रीय सत्ता बना रहा शाही केंद्र वस्तुतः मुगल साम्राज्य के पहले दो सौ वर्षों तक (1526–1748) उसके निर्देशो द्वारा नियंत्रित रहा और इस तरह वह भारतीय उपमहाद्वीप में पूर्व–आधुनिक राज्य–निर्माण की एक मोहक तस्वीर प्रस्तुत करता है।

31.4 मध्यकालीन राज्य का स्वरूप

सुल्तान होने का क्या अर्थ था? कुरान में इस अरबी शब्द का अर्थ है 'आध्यात्मिक शक्तियों वाला व्यक्ति'। महमूद गजनी अपने समकालीनों द्वारा 'सुल्तान' कहा जाने वाला पहला व्यक्ति था, जो अपने प्रशंसको के बीच उसकी सफलता का सूचक है। यह पदवी पहले तुर्कों में लोकप्रिय प्रतीत होती है। पश्चिम और मध्य एशिया में सल्जूक वंश 'सुल्तान' की पदवी का आम तौर पर इस्तेमाल करने वाले पहले शासक थे, बाद में ओट्टोमन तुर्कों ने इसे यूरोप में प्रसिद्ध कर दिया। जब खलीफा यह पदवी प्रदान करने लगा, तो यह तेजी से मुस्लिम शासकों में लोकप्रिय हो गई और पूरी तरहा बदल गई। दिल्ली के सुल्तान बगदाद के खलीफा की प्रभुसत्ता स्वीकार करते थे और अपनी बादशाहत को दारुल इस्लाम का अंग समझते थे, जिसका न्यायिक प्रधान खलीफा था। मुगल सम्राटों के तहत भारत मुस्लिम कानून शरियत से शासित होता था। इसके बावजूद न तो दिल्ली के सुल्तानों के समय और न ही मुगल सम्राटों के दौरान राज्य ने पूर्णतः इस्लामी अध्यादेशों की पुष्टि की, क्योंकि उसे वास्तविकताओं के अनुरूप ढलना था और अक्सर वे सही नहीं भी होते थे। तुर्की और अफगान शासकों को हिंदुओं के साथ, जिनका जनसंख्या में व्यापक बहुमत था, सम्मान और सहनशीलता के साथ व्यवहार करना था। धर्म, संपत्ति और कई अन्य गैर–धार्मिक मामलों में गैर–मुस्लिम जनता को अपने मुकदमे अपनी खुद की सांप्रदायिक अदालतों में चलाने की अनुमति थी। सुल्तान के शासन–काल की भूमि–राजस्व प्रणाली और शाही दरबार में होने वाले समारोह और क्रियाविधियां भारतीय परंपरा का अटूट प्रमाण हैं। प्रश्न उठता है कि क्या मध्यकालीन भारतीय राज्य किसी धार्मिक वर्ग द्वारा शासित था? औपचारिक तौर पर मुस्लिम शासन के तहत मध्यकालीन राज्य निश्चित रूप से धर्मतंत्र था, क्योंकि उसमें इसके सारे अनिवार्य तत्त्व थे ––ईश्वर की प्रभुसत्ता और दैवी कानूनों के अनुसार ईश्वर के निर्देश द्वारा सरकार का संचालन। दिल्ली के सुल्तान खुद को खलीफा के प्रतिनिधि या सहायक समझते थे, जो कि ईश्वर का प्रतिनिधि था। शेरशाह और इस्लाम शाह ने खलीफा की पदवी धारण की और अकबर से लेकर औरंगजेब तक मुगल सम्राटों ने 'खुदा की परछाई' और 'धरती

पर ईश्वर का प्रतिनिधि' जैसी पदवियां ग्रहण कीं। ईश्वर की प्रभुसत्ता असंदिग्ध थी। शरियत की सर्वोच्चता सदैव स्वीकार की जाती थी, हालांकि अकबर ने शरियत में राज्य के नियम जोड़ दिए थे। किंतु ये नियम मुस्लिम धर्मज्ञों को राज्य की नीतियां बनवाने की अनुमति नहीं देते थे।

मूलतः रक्षा, कानून और व्यवस्था तथा राजस्व का संग्रह दिल्ली सल्तनत की प्राथमिक चिंताएँ थीं। अन्य मामलो में वह आम तौर पर दखल न देने की नीति का पालन करती थी, क्योंकि जन–कल्याण सुल्तानों की प्राथमिक चिंता नहीं थी। सुल्तानों के शासन–काल में सहनशीलता अपवाद थी, नियम नहीं। इस प्रकार इस्लामी होने का दावा करने वाले दिल्ली सल्तनत के राज्य का चरित्र सैन्यवादी और कुलीन था। इसके विपरीत मुगल साम्राज्य एक बिलकुल अलग जमीन पर खड़ा था। सहनशीलता और दयालुता अकबर की सरकार के निर्देशक तत्त्व थे। अकबर अपनी जनता को अपनी संतान समझता था और इसलिए उसके कल्याण के लिए खुद को जिम्मेदार मानता था। अबुल फज़ल द्वारा परिकल्पित और अकबर द्वारा स्थापित राज्य किसी वर्ग–विशेष तक सीमित नहीं था और 'सबके साथ अमन' (सुल्हिकुल) के सिद्धांत पर आधारित था। लेकिन अकबर की प्रबुद्ध नीति और जहाँगीर तथा शाहजहाँ द्वारा परिस्थितिवश उसे जारी रखने के बावजूद मुगल शासन की कार्यप्रणाली में कम ही गुंजाइश थी। दान देने और उदार राजाओं के होने के बावजूद मुगल राज्य कल्याणकारी राज्य नहीं था। भूमि–राजस्व की वसूली और रक्षा उसके मुख्य कार्य थे। सरकार का स्वरूप राजतंत्रीय था, जो आनुवंशिक होने के बावजूद उत्तराधिकार की व्यवस्थित विधि विकसित नहीं कर पाया था। सिद्धांततः राजा सरकार की सभी शाखाओं का उद्भव था, पर शासक का कमजोर व्यक्तित्त्व अमीर वर्ग और उलेमाओं को शाही सता पर नियंत्रण का अवसर प्रदान कर सकता था।

पाठगत प्रश्न 31.2

रिक्त स्थान भरिए

1. बाबर ने ___________ और ___________ दोनों से उत्तराधिकार प्राप्त किया।
2. शेरशाह सूरी की म त्यु के बाद हुमायूँ ने ___________ में दिल्ली पर विजय प्राप्त की।
3. 1556 से ___________ के बीच अपनी आश्चर्यजनक धन–संपदा और गौरव के स्वर्णिम दौर में मुगल साम्राज्य एक ___________ और ___________ संगठन था।
4. ___________ साम्राज्य के तहत भारत मुस्लिम कानून ___________ द्वारा शासित था।

31.5 राजपद

चाहे उसकी जो भी पदवी है, राजा एक निजी महानता वाला व्यक्ति होता था, सेनानायक के रूप में ही नहीं, बल्कि तहत् आध्यात्मिक और नैतिक प्राणी के रूप में भी। सभ्य आदमी के रूप में उसके युद्ध उपयुक्त कार्य थे, हालांकि इसका क्या अर्थ अलग है जाता और बदल

आपकी टिप्पणियाँ

जाता था। सुल्तान की महिमा उसके आसपास के लोगों के काम से उभरती थी। मुस्लिम राजाओं की महिमा की व्याख्या कवियों, विद्वानों (इमामों और उलेमाओं), वास्तुकारों, इतिहासकारों, जीवनी लेखकों, आध्यात्मिक मार्गदर्शकों (सूफियों) और हर क्षेत्र में अनिवार्य रूप से विद्यमान बड़ी सामूहिक मस्जिद जामा मस्जिद में जुमे की नमाज पढ़वाने वालों का काम था। सुल्तानों को महिमामंडित करने, सम्मानित होने के लिए कुशल सेवा दाताओं में होड़ लगी रहाती थी, जिसके परिणामस्वरूप सुल्तान का व्यक्तित्त्व प्रसंगानुसार उभरता था। उसके आसपास रहाने वाले विशेषज्ञ और सहायक उसकी राय, नीतियों और प्राथमिकताओं को आकार देते थे। सफलता पाने के लिए वह लोगों का पोषण करता था और उसकी ताकत उनकी ताकत पर निर्भर करती थी। इस तरहा राजा की ताकत की सामाजिक पहचान ताज से बहुत परे तक फैल गई थी। महमूद गजनी जैसे प्रारंभिक सुल्तान पूर्णतः अपने रिश्तेदारों और नजदीकी सजातीय सहायकों पर आश्रित थे। राजनीतिक परिदश्य के ज्यादा जटिल होने पर ज्यादा जटिल व्यक्तित्त्व विकसित हुए और मुगलों के शासन में व्यापक आयाम ग्रहण करते गए। सुल्तान का शरीर, बोलचाल, धार्मिक श्रद्धा, निजी आदतें, शौक, परिवार, गहस्थी, पुरखे, पत्नियां, पुत्र और ससुराल उसकी सार्वजनिक पहचान का आंतरिक अंग थे, जो सार्वजनिक गपशप, कला, जनश्रुति, गीतों और इतिवत्त में व्यक्त होते थे।

31.6 शाही दरबार

सुल्तान के सार्वजनिक व्यक्तित्त्व का दैनिक प्रदर्शन उसके आम दरबार में होता था, जहाँ वह मेहमानों, दूतों, फरियाद करने वालों, सहायकों और कर तथा उपहार देने वालों से मिलता था। दरबार की परंपरा समय के साथ विकसित हुई। इसका प्रारंभिक मध्य एशियाई मूल स्वरूप युद्ध के मैदान का शाही खेमा था, जिसने बाद की शताब्दियों में वास्तुशिल्पीय महिमा हासिल कर ली, जैसे कि फतेहपुर सीकरी, आगरा और दिल्ली जैसे किले वाले शहर जिनके दरबार में सम्राट की सत्ता के निष्पादन के लिए विशाल मंच हैं। अनेक दरबारों की प्रभावशाली सजावट में हिंदू और मुस्लिम परंपराएँ शामिल हैं। अठारहवीं शताब्दी के चित्रों में दरबार के द श्यों का विस्त त प्रस्तुतीकरण मिलता है, जिनके साथ अब मुगल सम्राट शाहजहाँ का इतिव त्त सत्रहवीं शताब्दी का पादशाहनामा भी है। इन चित्रों में लटकते कालीन दिखाए गए हैं, जो दरबार की भ्रमणशील परंपरा की याद दिलाते हैं। इन चित्रों में चित्रित हर व्यक्ति का दरबार में एक खास दरजा और सम्राट से संबंध था। सुल्तानों के संबंध में परिभाषित की जाने वाली समस्त व्यक्तिगत पहचानों के सार्वजनिक प्रदर्शन का स्थान दरबार बन गया था। अपने अधिकार क्षेत्र में शामिल सत्ता की समस्त विभिन्न हस्तियों के प्रदर्शन के लिए सुल्तान जहाँ जाता था, अपने दरबार को वहीं ले जाता था। दरबार सफर में काफी समय बिताता था खासकर युद्ध के समय। शासक का भ्रमणशील दरबार एक स्थायी सांस्क तिक विशेषता बन गया था, और बाद की शताब्दियों में भ्रमणशील प्रशासक, कर–संग्रहकर्ता और राजनेता कारगर ढंग से आधुनिक युग के भ्रमणशील सुल्तान बन गए।

31.7 राजा का व्यक्तित्त्व

सुल्तान के परिजन (सेवा में उपस्थित परिचारकों का समूह), राजचिह्न धारण करने वाला विशेष सुविधाभोगी वर्ग और राजा व उसका परिवार उसकी महानता के प्रतीक थे। सुल्तान सार्वजनिक शिष्टाचार और सीमित व्यवहार का पालन करते थे, ताकि अधीनस्थ

अपनी हद पार न करें। सुल्तान को लगातार अपना प्रभुत्व दर्शाने के लिए सबसे बड़ा, सबसे धनी, सर्वाधिक अलंक त, निरंकुश और शरीर पर मूल्यवान चीजें धारण किए रहाना होता था। विजयनगर के राय अपने शरीर को विदेश व्यापार से प्राप्त कीमती चीजों, खासकर इत्रों और चीनी पोर्सिलेन जैसी कीमती वस्तुओं से सजाकर खुद को 'पूर्वी' और 'पश्चिमी' महासागरों के स्वामी' कहते थे। सुल्तान का घर उसके शरीर का एक बड़ा रूप था, जो संचय, प्रभुत्व और नियंत्रण की ताकत दर्शाता था और धन–संपदा, मूल्य और रुचि को दर्शाता करता था। उस महान प्रभावशाली असरकारक सुल्तान की उपभोग की आडम्बरपूर्ण आदतें दक्षिण एशिया में राजनीतिक जीवन का स्थायी रूप बन गईं।

सुल्तान के व्यक्तित्व की महत्त्वपूर्ण विशेषताएं सार्वजनिक तौर पर दिखाई देने वाले घरेलू प्रदर्शनों में, और सबसे बढ़कर शादी–ब्याहों में उभरती थीं। शादियां उनके राजनीतिक जीवन की बड़ी घटनाएँ होती थीं, क्योंकि शादी राजनीतिक गठजोड़ का सबसे सुरक्षित तरीका थीं। पादशाहनामा में युद्ध और शादियां कलाकारों द्वारा सबसे ज्यादा विस्तार से चित्रित किए गए हैं। यहाँ तक कि ऐसे में मुगल साम्राज्य भी एक पारिवारिक मामला जैसा बन जाता था। महल के अंदरूनी गुप्त क्षेत्रों में परिवार के सदस्य स्थितियों को प्रभावित करने में होड़ लगाए रहाते थे और गुप्त योजनाओं में शरीक रहाते थे, जो अक्सर अपने चरम बिंदु पर पहुंचकर उत्तराधिकार की लड़ाई में तब्दील हो जाती थीं, जिनमें रिश्तेदार एक–दूसरे को मार डालते थे, जैसा कि महभारत नामक महाकाव्य में देखने को मिलता है। घर में सुल्तान का सम्मान उसकी मां, पत्नियां, पुत्रियों और बहनों के निष्कलंक सद्गुणों पर निर्भर करता था। जनता की नजर से दूर महल की औरतें परदे के पीछे रहाती थीं और एकांत में रहाने वाली ये परदानशीं महिलाएं सुल्तान का सद्गुण बन गई थीं। औरतों के एकांतवास की प्रथा हिंदू और मुसलमान दोनों के विशिष्ट वर्गों में समान रूप से फैल गई थी, जो समाज के समस्त स्तरों पर सुल्तानों के लिए आदर्श बनते थे।

31.8 अभिजात वर्ग

सुल्तान विभिन्न पदवियों की खोज में रहाता था, जो व्यक्तिगत हैसियत बताने के अलावा नैतिक उद्गमों और सांस्क तिक संबंधों की सूचना देता है। हर सुल्तान अपने प्रति वफादारी रखनेवाले अभिजातों का एक दल बनाना और संगठित करना चाहता था। इसलिए न केवल तुर्क–ए–चहलगानी (चालीस अभिजातों का दल) ने समस्त विशेषाधिकारों और सत्ता पर कब्जा करने की कोशिश की, बल्कि सुल्तानों के प्रति व्यक्तिगत निष्ठा रखने वाले दलों, जैसे कुत्बीस (कुतुबुद्दीन ऐबक के प्रति निष्ठा रखने वाले), शम्सी (शम्सुद्दीन अल्तमश के प्रति निष्ठा रखने वाले), बल्बनी और अलाई अभिजात इस पूरी अवधि में प्रभावी बने रहो। तेरहावीं शताब्दी के प्रसिद्ध चालीस अमीरों सहित प्रायः सभी उच्च अभिजात मध्य एशिया मूल के थे, जिनमें से अनेक मध्य एशियाई बाजारों से खरीदे गए दास थे। यही बात तुर्की मामलुकों के केंद्र की अस्थिरता का कारण भी बनी। मंगोलों द्वारा मध्य एशिया और पूर्वी ईरान की लूटपाट के साथ इन क्षेत्रों के विशिष्ट राजनीतिक और धार्मिक वर्गों के और अधिक सदस्य उत्तर भारत में भेज दिए गए, जहाँ दिल्ली के सुल्तानों ने उन्हें सैनिक और प्रशासनिक संवर्गों के विभिन्न स्तरों पर प्रवेश दे दिया। अलाउद्दीन सल्तनत के भीतर राजनीतिक सहभागिता को जानबूझकर बढ़ाने वाले पहले शासकों में से एक था। उससे न केवल गैर–तुर्की मुस्लिम अमीरों के लिए, जिनमें से कुछ धर्मांतरित हिंदू भी थे, आंशिक रूप

से सत्ता के दरवाजे खोल दिए, बल्कि राजनीतिक दुनिया के भीतर इसे तर्कसंगत भी ठहराया। अलाउद्दीन और उसके बेटे दोनों ने महत्त्वपूर्ण हिंदू शासकों के परिवारों में शादी की और ऐसे अनेक शासकों को दरबार में प्रवेश दिया गया तथा उनका सम्मान किया गया। तुगलकों के शासन–काल में गैर–मुस्लिम भारतीय उच्च और अत्यंत उत्तरदायित्व पूर्ण पदों पर बिठाए गए, यहाँ तक कि उन्हें प्रांतों का हाकिम तक बनाया गया। मुहम्मद बिन तुगलक प्रशासन में हिंदुओं को शामिल करने की योजना बनाने वाला पहला मुस्लिम शासक था।

अकबर के शासन–काल के पहले तीन दशकों के भीतर उच्चतम श्रेणी के शाही लोगों ने बहुत ज्यादा विकास किया। चूंकि मध्य एशियाई अमीर राजसत्ता के साथ सत्ता की हिस्सेदारी करने की तुर्की–मंगोल परंपरा में पले – बढ़े थे–जो मुगल केंद्र को अपने खुद के इर्द–गिर्द संरचित करने की अकबर की महत्त्वाकांक्षा के अनुरूप व्यवस्था नहीं थी – अतः सम्राट का प्रमुख लक्ष्य उनकी ताकत और असर घटाना था। सम्राट ने नए मानदंडों को अपनी सेवा में आने के लिए प्रोत्साहित किया और ईरानी मुगल अभिजात वर्ग का एक महत्त्वपूर्ण भाग बनने के लिए आ गए। अकबर ने भारतीय प ष्ठभूमि के नए लोगों की भी तलाश की। मुगलों के मुख्य विरोधी होने के कारण भारतीय अफगानों को बेशक दूर रखा गया पर बरहा के बुखारी सईदों और भारतीय मुस्लिमों में से कांबुओं की सैनिक और नागरिक पदों के लिए खास तौर से तरफदारी की गई। इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात थी मुगल अभिजात वर्ग में हिंदू राजपूत नेताओं की भर्ती। यहाँ भारतीय–इस्लामी इतिहास में पूर्णतः नया कदम नहीं था पर एक बड़ा कदम जरूर था, जिसने मुगल तानाशाही और स्थानीय निष्ठुर शासकों के बीच संबंधों के एक मानक प्रतिमान की शुरुआत की।

31.9 कार्यालय और पदानुक्रमिक संरचना

न तो दिल्ली सल्तनत की सरकार और न ही मुगल साम्राज्य की सरकार दास जैसी थी। दोनों सरकारें संगठित नौकरशाही थीं, जिनमें विभागों और अधिकारियों का नियमित श्रेणीकरण था। नागरिक या सैनिक कोई भी कार्यालय वंशानुगत नहीं था, इसलिए अधिकारी राजा द्वारा अपनी इच्छानुसार नियुक्त, स्थानांतरित और बर्खास्त किए जाते थे और वे केवल उसी के प्रति जवाबदेह थे। सल्तनत में सुलतान के ठीक बाद सरकार के सारे मामलों की देखभाल के लिए वजीर का दफ्तर था। मुगल अपने प्रधानमंत्री को वकील कहते थे, जो बाद में वजीर या दीवान का पर्यायवाची हो गया था। सुल्तानों ने दीवाने–अर्ज (सैनिक विभाग) की स्थापना की, जिसका प्रमुख अरीज–ए–मुमालिक होता था, जबकि मुगलों के शासन–काल में मीर बक्शी सेना और शाही प्रतिष्ठान के सामान्य प्रशासन का प्रभारी होता था। सल्तनत में धार्मिक और परोपकार के मामले दीवान–ए–रिसालत नामक विभाग देखता था, जिसका प्रधान सदर–उस–सुदूर (मुख्य सदर) होता था। जहाँ तक कार्यालय का ताल्लुक था, मुगलों ने उसका वही नाम जारी रखा। दोनों शासनों ने प्रधान काजी (मुख्य न्यायाधीश) और सदर के कार्यालयों को मिला दिया था। सल्तनत में मुशारिफ–ए–मामलिक (महालेखाकार), मुशौफी–ए–मामलिक (महालेखापरीक्षक), दबीरे–ए–खास की अध्यक्षता वाला दीवाने–ए–इंशा (राज्य का पत्राचार विभाग)

और बरीद–ए–मुमालिक (गुप्तचर विभाग का प्रधान) कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यालय और विभाग थे।

31.10 प्रांतीय प्रशासन

सल्तनत में मुक्ती या वली सूबों के प्रभारी थे। सूबों में आय और व्यय पर नियंत्रण रखने के लिए एक साहिबे–दीवान भी होता था, जिसकी सहयता मुशर्रिफ और कारकुन करते थे। तेरहावीं शताब्दी के अंत में प्रशासनिक प्रभाग के रूप में शिक का उदय हुआ जो बाद में सरकार के नाम से भी जाना गया। न्याय के लिए सूबों में काजी और सदर की अदालतें कार्यरत थी। मुगल साम्राज्य 15 सूबों में बँटा था—इलाहबाद, आगरा, अवध, अजमेर, अहमदाबाद, बिहार, बंगाल, दिल्ली, काबुल, लाहौर, मुल्तान, मालवा, खानदेश, बरार और अहमदनगर। कश्मीर और कंधार काबुल के जिले थे। सिंध, जिसे उस समय थट्टा कहा जाता था, मुल्तान सूबे का एक जिला था। उड़ीसा बंगाल का हिस्सा हुआ करता था। सूबे एक समान क्षेत्र या आमदनी वाले नहीं होते थे। हर सूबे में एक हाकिम, एक दीवान (राजस्व और वित्त अधिकारी), एक बख्शी (सैनिक कमांडर), एक सदर (धार्मिक प्रशासक), एक काजी (न्यायाधीश) और केंद्र सरकार को सूचना पहुंचाने वाले एजेंट होते थे। विभिन्न अधिकारियों के बीच (खासकर हाकिम और दीवान के बीच) शक्तियों का विभाजन शाही प्रशासन में एक महत्त्वपूर्ण कार्य–सिद्धांत था। मुगलकालीन सूबे जिलों (सरकारों) में भी बंटे थे। हर जिले में एक फौजदार (एक सैनिक अधिकारी जिसके कार्य मोटे तौर पर कलक्टर जैसे थे), एक काजी, एक बितिक्ची (प्रधान लिपिक) और एक खजानेदार (कोषपाल) होते थे। न्याय की व्यवस्था अदालतों की एक श्रेणी द्वारा की जाती थी जो ग्राम पंचायत से लेकर (काजी, अमीरे–दाद और मीर अदल के तहत्) परगना, सरकार और प्रांतीय अदालतों और अंततः मुख्य सदर व काजी और सबसे अंत में खुद सम्राट तक जाती थी। सल्तनत और मुगल दोनों के शासन में कोतवाल स्थानीय स्तर पर कानून का पालन करानेवाला था।

31.11 इक्ता, जाग़ीर और मनसब

सल्तनत में इक्ता और मुगलों के तहतजाग़ीर राजस्व एकत्र करनेवाले अधिकारियों के रूप में प्रसिद्ध हुए, जिसे राज्य की ओर से इक्तादार और जागीरदार अपना वेतन प्राप्त करने के उद्देश्य से वसूल करते थे। किंतु उनके न्यायिक अधिकार सम्राट की खुशी पर निर्भर थे। मुक्ती या इक्तादारों से कानून और व्यवस्था बनाए रखने और अपनी इक्ता से राजस्व एकत्र करने के अलावा जरूरत के समय सुल्तानों को सैनिक सहायता प्रदान करने की अपेक्षा की जाती थी। राजस्व का यहाँ आबंटन आमतौर पर आनुवंशिक नहीं होता था और हस्तांतरणीय था। इसी प्रकार मनसब व्यवस्था मुगल साम्राज्य की सार्वजनिक सेवा के संगठन पर आधारित थी। यह न तो आनुवंशिक थी, न ही पदानुक्रमिक। मनसब का शाब्दिक अर्थ है दर्जा या पद, जिसे अधिकारी के व्यक्तिगत गुणों और हैसियत (जात) तथा उसके द्वारा रखे जानेवाले दस्ते (सवार) के मुताबिक तय किया जाता था। आमतौर पर मनसबदारों को एक इलाका दे दिया जाता था, जिसे जागीर कहते थे, जिसका अनुमानित राजस्व (जमा) उसके जात और सवार दोनों मनसबों के वेतन के बराबर होता था, हालांकि कुछ मनसबदारों को शाही खजाने से नकद भुगतान भी किया जाता था।

31.12 कर-व्यवस्था

सल्तनत की कर–प्रणाली में ख़राज (कुल उपज के छठे भाग से लेकर एक तिहाई तक), जज़िया (आजीविका के स्वतंत्र साधन रखनेवाले वयस्क गैर–मुस्लिम पुरुषों पर सैनिक सेवा के बदले लगाया जानेवाला कर) और जक़ात (परोपकार के उद्देश्य से धनी मुस्लिमों से वसूला जानेवाला कर) जैसे कर और खम या गनीना (युद्ध में की गई लूट) और अन्य परिवहन और चुंगी शुल्क और साथ में प्राक तिक संसाधन आय के मुख्य साधन थे। चौधरी मुकद्दम और खूत गांव के राजस्व संग्रहकर्ता थे, जो आमिलों, शिकदारों और सूबे के मुक्तियों के अधीन काम करते थे। खालिस भूमि का राजस्व केवल सुल्तान के खजाने के लिए सुरक्षित था। मुगलों ने इस व्यवस्था में सुधार किया, विशेषकर भूमि राजस्व के क्षेत्र में। शेरशाह सूरी द्वारा लागू की गई माप की प्रणाली जब्त अकबर द्वारा अपनाई और सुधारी गई। राजस्व–निपटान की अंतिम पद्धति आइने–दहसाला किसी खेत विशेष के पिछले दस वर्षों की सालाना उपज के औसत पर आधारित थी। भूमि मापने के एक नए गज गजे–इलाही से भूमि–सर्वेक्षण में एकरूपता आई। भूमि की उत्पादकता, फसल का स्वरूप, कीमतें और सिंचाई–सुविधाएं सरकार की राजस्व की मांग का नकद मूल्य निश्चित करने के अन्य प्रमुख कारक थे। लगान चुकाने का विकल्प विभिन्न प्रणालियों के जरिये कार्यान्वित किया जा सकता था। भूमि का स्वामित्व सदैव किसान के पास रहाता था।

31.13 सेना

सल्तनत और मुगल राज्य दोनों सेना पर आश्रित थे, जिसका मुख्य बल घुड़सवार सेना थी। सुल्तानों के तहतअरीज–ए–मुसालिक और मुगल सम्राटों के तहतमीर बख्शी सेना के प्रभारी थे, किंतु शासक खुद सारी सशस्त्र सेनाओं पर नियंत्रण रखता था। एक नियिमत स्थायी सेना रखनेवाला बलबन पहला शासक था। अलाउद्दीन खिलजी ने इस व्यवस्था को और मजबूत किया, जिसने घोड़ों को दागकर चिह्नित करने की प्रणाली लागू की। दिल्ली सल्तनत में शाही घुड़सवार सेना हशम–ए–कल्ब या अफ्वाज–ए–कल्ब कहलाती थी। हशम–ए–अत्राज प्रांतीय स्तर पर पदस्थ घुड़सवार सेना थी। यहाँ सेना दशमलव प्रणाली के आधार पर संगठित की जाती थी। मुगल सेना ऊपर वर्णित मनसब प्रणाली के आधार पर संगठित की जाती थी। अहदी सीधे सम्राट के नियंत्रण के अधीन शाही घुड़सवार सैनिक होते थे। बाबर के आगमन के बाद भारत में तोपखाने तेजी से विकसित हुए। घेरेबंदी अर्थात् किसी किलेबंद जगह को घेरकर उस पर हमला करने की प्रक्रिया के अलावा किलों पर भारी बंदूकें जड़ी रहाती थीं। विशाल संख्या में होने के बावजूद पैदल सेना में लड़ाकू और गैर–लड़ाकू दोनों वर्ग शामिल रहाते थे। लड़ाकू लोग मुख्यतः तोड़ेदार बंदूकों वाले लोग होते थे, जिन्हें बंदूकची कहा जाता था। अकबर के समय तक पैदल सेना में तोड़ेदार बंदूकों वाला दस्ता भी शामिल किया जाने लगा था। दिल्ली के सुल्तान और मुगल दोनों युद्ध के मैदानों में हाथियों का इस्तेमाल करते थे। नौसेना सदैव भारतीय शासकों का कमजोर पहलू बनी रही।

31.14 मुद्रा-प्रणाली

सुल्तानों के शासन में इल्तुतमिश से लेकर आगे तक 175 ग्रेन का चांदी का टका मानक सिक्का बना रहा मुद्रा प्रणाली हालांकि द्विधातुक थी और तांबे का एक समानांतर सिक्का भी प्रचलन में था, जिसकी मूलभूत इकाई जीतल थी। चौदहवीं शताब्दी में 48 या 50 जीतल एक टके के बराबर माने जाते थे। सुल्तानों ने सोने–चांदी के सिक्के भी जारी किए, और सोने के निर्गम भी बरकरार रहो। चांदी का सिक्का कभी जारी न करनेवाले लोधियों ने 145 ग्रेन का एक भारी सोने का सिक्का जारी किया, जिसे बहलोली कहा जाता था। चांदी का रुपया जारी कर और टके को पूर्णतः तांबे का सिक्का बनाकर शेरशाह सूरी ने द्विधातुक प्रणाली स्थापित की। अकबर से लेकर मुगलों ने यह व्यवस्था जारी रखी, उनका रूपए का वजन 178 ग्रेन (औरंगजेब के जमाने में 180) होता था जिसमें मिश्रधातु 4 प्रतिशत से ज्यादा कभी नहीं हुई। तांबे में उन्होंने 323 ग्रेन वजन के दाम ढाले, जो मूलतः शेरशाह के टके के आधे होते थे। अकबर के अंतिम वर्षों में एक रूपया 40 दामों का होता था, जो आगे चलकर रुपए का कागजी मूल्य बन गया। असल में रुपए का तांबागत मूल्य सत्रहवीं शताब्दी में घटता गया। मुगलों ने भी सोने के सिक्के जारी किए, जिन्हें मोहर या अशर्फी कह जाता था, पर वे आमतौर पर बाजार में इस्तेमाल नहीं किए जाते थे। मुगलों की सिक्का–ढलाई में बहुत धात्विक शुद्धता और एकरूपता रहाती थी। ढलाई इस अर्थ में 'निःशुल्क' थी कि कोई भी सोना–चांदी टकसाल में ले जाकर मामूली शुल्क पर सिक्के ढलवा सकता था।

पाठगत प्रश्न 31.3

कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए:

1. सम्राट ने नए तत्त्वों को अपनी सेवा में आने के लिए प्रोत्साहित किया और ___________ मुगल अभिजात वर्ग का एक महत्त्वपूर्ण भाग बनने के लिए आ गए। (अफगानी, ईरानी, तुर्क)
2. सल्तनत में सरकार के सारे मामले देखने के लिए सुल्तान के ठीक बाद ___________ का कार्यालय था। (मुख्य सदर, मुख्य न्यायाधीश, वजीर)
3. मुगल काल में ___________ राजस्व एकत्र करने वाले दफ्तर के रूप में विकसित हो गया जो उसे राज्य की ओर से वसूल करता था। (मसब, सदर, जागीर)
4. सुल्तानों के समय इल्तुतमिश और उसके बाद ___________ ग्रेन वजन का चांदी का टका (सिक्का) मानक सिक्का था। (175, 200, 225)

इस प्रकार मध्यकालीन राज्य का विकास विजयों और समन्वय के साथ एक लगातार बढ़नेवाली प्रक्रिया थी। शासन की कला में कुछ मध्य एशियाई संस्थाएं शुरू की गईं, पर साथ ही पिछली प्रथाओं से भी ज्यादा छेड़छाड़ नहीं की गई। जहाँ तक प्रशासन के संगठन और शासक वर्ग का संबंध है, यह कोई अखंड ढांचा नही ंथा। सत्ता के एकमात्र

स्रोत के रूप में हर राजा को अपने वंश का स्थायित्व और द ढ़ता सुनिश्चित करने के लिए बदलते समीकरणों और हिताधिकारी समूहों में संतुलन स्थापित करना पड़ता था। लेकिन एक मिश्रित संस्क ति के विश्वासों का हमेशा ध्यान रखा जाता था।

आपने क्या सीखा

गुप्त राज्य के पतन के बाद भारतीय राज्यतंत्र ने विकेंद्रीकरण और विभिन्न क्षेत्रीय राज्यों का उदय देखा तेरहावीं शताब्दी में उत्तर भारत में एक नए प्रकार के राजवंशीय क्षेत्र का उदय हुआ। दिल्ली सल्तनत की उत्पत्ति मुहम्मद गोरी के विजयों से हुई है, जिसने 1151 में गजनी को हटाया। उसकी सेनाओं ने मुलतान, सिंध, पेशावर और लाहौर को जीता। बाद में इल्तुतमिश को उत्तर भारत में तुर्की विजयों का वास्तविक नेत त्वकर्ता माना गया।

1246 में राजनीतिक स्थिति में बदलाव आया जब गयासुद्दीन बलबन ने काफी ताकत हासिल कर ली थी। पहले सुल्तान का नायब (उप) और बाद में खुद सुल्तान (शासन 1266–87) रहा बलबन अपने समय की सबसे महत्त्वपूर्ण राजनीतिक हस्ती था। 1296 में जलालुद्दीन खिलजी की उसके के महत्त्वाकांक्षी भतीजे और उत्तराधिकारी अलाउद्दीन खिलजी द्वारा हत्या कर दी गई। अलाउद्दीन खिलजी के शासन–काल (1296–1316) में सल्तनत ने संक्षेप में साम्राज्य का स्वरूप ग्रहण कर लिया। किंतु अलाउद्दीन की म त्यु के पांच वर्षों के भीतर खिलजियों ने अपनी सत्ता खो दी।

गयासुद्दीन तुगलक (1320–25) और मुहम्मद बिन तुगलक ने सल्तनत के उच्च बिंदु को चिहि्नत किया और पूरे भारत पर राज करना चाहा यह सतत केंद्रीकरण और विस्तार का समय था।

1526 में मध्य एशिया से आए बाबर ने भारत में मुगल वंश की स्थापना की। उसकी दिल्ली और गंगा घाटी और बाद में पंजाब से बंगाल तक की जीतों ने उसे पादशाह की फारसी पदवी ग्रहण करने का हकदार बना दिया। उसका बेटा हुमायूँ शेरशाह से हार गया और अफगानिस्तान लौट गया। शेरशाह की म त्यु के बाद 1555 में हुमायूँ ने दिल्ली को जीत लिया और दुर्घटनावश उसकी म त्यु हो गई। उसका तेरहा वर्षीय बेटा अकबर गद्दी पर बैठा और उसने अपने संरक्षक बैरम खाँ के मार्गदर्शन में लाहौर, दिल्ली, आगरा और जौनपुर के फौजी किलों वाले शहर जीते। अकबर ने 1556–1605 तक राज किया। उसका अधिकार–क्षेत्र काबुल, कश्मीर, पंजाब से गुजरात, बंगाल और असम तक फैला था। उसका बेटा जहाँगीर (1605–1627), पोता शाहजहाँ (1627–1658) और परपोता औरंगजेब (1658–1707) उसके उत्तराधिकारी थे। अपनी चरम अवस्था में मुगल साम्राज्य का भारतीय इतिहास में संसाधनों पर अभूतपूर्व अधिकार था।

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियां इस उपमहाद्वीप में यूरोपीय और गैर–यूरोपीय व्यापारिक संगठनों की स्थापना और विस्तार लेकर आई, मुख्य रूप से विदेश में मांग वाली भारतीय वस्तुओं की खरीद के लिए।

इस पाठ में आपने मध्यकालीन राज्य के स्वरूप, राजत्व, शाही दरबार और अभिजात वर्ग के बारे में भी जाना। इसके अलावा आपने प्रांतीय प्रशासन, कर लेने की प्रक्रिया, मध्यकालीन सेना और मुद्रा–प्रणाली के बारे में भी जानकारी प्राप्त की।

पाठांत प्रश्न

1. मुहम्मद गोरी की भूमिका का संक्षेप में वर्णन किजिए?
2. बलबन और खिलजी के युग की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख किजिए?
3. "मुहम्मद बिन तुगलक के शासन ने सल्तनत के उत्थान और उसके पतन की शुरूआत दोनों को चिह्नित किया।" टिप्पणी किजिए?
4. सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियों के दौरान मुगलों के शासन का मूल्यांकन किजिए?
5. मध्यकालीन राज्य के स्वरूप की जांच किजिए?
6. राजा के व्यक्तित्त्व का क्या अर्थ है?
7. प्रांतीय प्रशासन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

31.1

1. 1186
2. 1175, 1182 और 1186
3. उत्तर भारत
4. 1290
5. 1296

31.2 रिक्त स्थान भरो

1. तैमूर, चंगेज खान
2. 1555
3. 1707, सक्षम, केंद्रीक त
4. मुगल, शरियत

31.3 कोष्ठक ( ) में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरोः

1. ईरानी

2. वजीर
3. जागीर
4. 175

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. अनुच्छेद 31.2 देखें
2. अनुच्छेद 31.2 देखें
3. अनुच्छेद 31.2 देखें
4. अनुच्छेद 31.3 देखें
5. अनुच्छेद 31.4 देखें
6. अनुच्छेद 31.5 देखें
7. अनुच्छेद 31.10 देखें

31

सांस्क तिक संप्रेषण

जब आप छोटे थे तो आपके दादा–दादी ने आपको राजा–रानियों, जादुई घटनाओं और पशु–पक्षियों की कहानियां तथा पुराने जमाने की अन्य कहानियां जरूर सुनाई होंगी। उनमें से अनेक कहानियां रामायण और बाइबल जैसे महाकाव्यों और धार्मिक ग्रंथों से या फिर पंचतंत्र या अलिफ लैला जैसे कथा–संग्रहों से ली गई हैं। इन कहानियों के माध्यम से हम सबने अपनी सांस्कृतिक विरासत के अनेक पहलुओं को अपनाया। संस्कृति विभिन्न तरीकों से संप्रेषित की जाती है–मौखिम रूप से, लिखित रूप से, संगीत के माध्यम से, और आजकल फिल्मों और टेलीविजन द्वारा भी।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप :

- भाषण लेखन और मुद्रण सांस्कृतिक संप्रेषण में किस तरह सहायक होते हैं इसके बारे में समझा सकेंगे;
- सांस्कृतिक संप्रेषण की कुछ पद्धतियों को सूचीबद्ध कर सकेंगे;
- विभिन्न विचारों को संप्रेषित करने में संगीत के उपयोग का विश्लेषण कर सकेंगे; और
- बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए विभिन्न सांस्कृतिक रूपों का इस्तेमाल किस प्रकार किया गया था, इसकी व्याख्या कर सकेंगे।

31.1 संस्कृति कैसे संप्रेषित की जाती है

क्या आप भाषा के बिना विश्व की कल्पना कर सकते हैं? भाषा मानव–समाज की मूलभूत विशेषता है। यह लोगों के लिए एक–दूसरे को समझने का साधन ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विचारों के संप्रेषण का माध्यम भी है। आपस में बोली जानेवाली भाषा लोगों को एक–दूसरे से जोड़ती भी है और उनकी एक–दूसरे से अलग पहचान भी बताती है। पंजाब के लोग अपनी समान भाषा के कारण परस्पर जुड़ते भी हैं, पर उन लोगों से अलग भी दिखते हैं, जिनकी मात भाषा पंजाबी नहीं। क्या आप जानते हैं कि पंजाबी पाकिस्तान की भी दो सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषाओं में से एक है?

उपमहाद्वीप में विभिन्न देशों के लोगों द्वारा बोली जानेवाली एक अन्य भाषा बँगला है।

भाषा और संस्कृति का प्रसार भौगोलिक कारकों से प्रभावित होता है। आस–पड़ोस के क्षेत्रों में रहनेवाले लोग समान या मिलती–जुलती भाषाएँ बोलते हैं। हजारों मील दूर रहनेवाले लोगों की मात भाषा बहुत अलग होती है। वह इसलिए कि परिवहन के आधुनिक साधन विकसित होने से पहले दूर–दूर तक फैले इलाकों में संप्रेषण कठिन था। संस्कृतियाँ अपेक्षाकृत अलग–अलग विकसित होती थीं और बहुत भिन्न होकर रह जाती थीं।

घने जंगलों वाले और पहाड़ी इलाकों में संप्रेषण आज भी कठिन है। एक पहाड़ी या घाटी के एक तरफ रहनेवाली जनजाति को उसके दूसरी तरफ कुछ ही किलोमीटर दूर रहनेवाली जनजाति के बारे में हो सकता है, पता तक न हो। इसलिए उनके द्वारा बोली जानेवाली भाषाएँ बहुत भिन्न हो सकती हैं।

लेकिन उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे क्षेत्रों में, जहाँ के विशाल मैदान नदियों द्वारा आपस में अच्छी तरह जुड़े हैं, लोग प्राचीन काल में भी आसानी से यात्राएं कर लेते थे। इसलिए उनमें नियमित अंतःक्रिया की वजह से समान भाषाएं और रीति–रिवाज विकसित हो गए।

यहाँ तक कि जहाँ विशाल क्षेत्रों में हिंदी या तमिल जैसी एक ही भाषा बोली जाती है, वहाँ एक जिले से दूसरे जिले में उसके भिन्न रूप पाए जाते हैं। उनमें से कोई भी रूप इतना भिन्न नहीं कि उसे अलग भाषा कहा जा सके, इसलिए उन्हें उस भाषा की बोलियां कहा जाता है।

उच्चरित भाषा संप्रेषण के सबसे महत्त्वपूर्ण साधनों में से एक थी और अभी भी बनी हुई है। लेकिन लिपि के आविष्कार ने संप्रेषण की व्यापकता बढ़ा दी। संदेश अब दूर–दूर तक भेजे जाने लगे और बाद तक सुरक्षित रखे जाने लगे।

भारत में लिपि 4000 वर्ष पहले ज्ञात थी। हड़प्पा की लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है। 1800 ईसा पूर्व के आसपास हड़प्पा सभ्यता के पतन के साथ लिपि भी खो गई। लिपि की जानकारी तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पुनः प्रकट हुई। ब्राह्मी नामक यह लिपि समस्त आधुनिक भारतीय लिपियों की जननी है।

प्रारंभ में शासकों और अमीर लोगों ने महत्त्वपूर्ण दस्तावेज चट्टान की सतहों, पत्थरों के फलकों और ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण करवाए थे। कपड़ा, चमड़ा, पेड़ की छाल जिसे भोजपत्र कहा जाता था और ताड़ के पत्ते जो तालपत्र कहलाते थे, लिखने के काम आते थे।

आपके विचार में प्रारंभिक समय में किस तरह की पुस्तकें हुआ करती थीं? धार्मिक ग्रंथ होते थे जो पुजारियों द्वारा प्रयोग में लाए जाते थे। कानून की किताबें, जिन्हें शास्त्र कहा जाता था, राजाओं और उनके मंत्रियों के लिए लिखे जाते थे। अमीरों के मनोरंजन के लिए नाटकों और काव्यों की रचना की जाती थी। जाहिर है कि ज्यादातर किताबें केवल विशेषाधिकारप्राप्त थोड़े लोगों के लिए ही होती थीं।

लेकिन तब महाभारत (जिसके बारे में आपने पाठ संख्या 30 में पढ़ा है) जैसे महाकाव्य, जातक कथाओं और हितोपदेश आदि में संग हीत लोकप्रिय कथाएं और पुराणों में बड़ी संख्या में शामिल मिथकीय आख्यान भी थे। इनमें से ली गई कहानियां पेशेवर

कथावाचकों, भाट–चारणों और यहाँ तक कि स्थानीय मंदिर के पुजारियों द्वारा भी मौखिक रूप से संप्रेषित की जाती थीं। कहानियां सुनाने के दौरान समय के साथ उनमें अनेक भिन्नताएं पैदा हो गईं। इसलिए आज हम लोकप्रिय आख्यानों के अनेक रूप देखते हैं। इस तरह पुस्तकों ने अनेक लोगों के जीवन को स्पर्श किया, बावजूद इसके कि बहुत कम लोग ही लिख–पढ़ सकते थे।

हर पुस्तक की प्रति हाथ से तैयार करनी पड़ती थी। ये हस्तलिखित प्रतियां पांडुलिपि कहलाती हैं। पांडुलिपि–लेखन मध्यकाल में एक विशिष्ट कला बन गई। लिपिक सुंदर हस्तलेख इस्तेमाल करते थे, जिसे खुशनवीसी कहा जाता था। प ष्ठ अक्सर सुंदर चित्रों से सजाए जाते थे। पांडुलिपियों की प्रतियां तैयार करना, एक श्रमसाध्य प्रक्रिया थी, इसलिए बहुत कम प्रतियां ही तैयार की जा सकीं।

मुद्रण की शुरुआत 16वीं शताब्दी में हुई। पुस्तकें अब कम समय और लागत में बहुत बड़ी संख्या में तैयार की जाने लगीं। लेकिन चूंकि बहुत कम लोग ही पढ़े–लिखे थे, अतः तात्कालिक प्रभाव सीमित था। 19वीं शताब्दी में एक ज्यादा नाटकीय परिवर्तन हुआ, जब राष्ट्रवादियों और समाज–सुधारकों ने छापेखाने और मुद्रण–प्रौद्योगिकी का भरपूर प्रयोग किया।

भारत में पहला समाचारपत्र 1760 में ईस्ट इंडिया कंपनी के एक अधिकारी द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित किया गया। इसके बाद अन्य अनेक लोगों ने समाचारपत्र प्रकाशित किए। ये समाचार पत्र भारत में अंग्रेजों को यूरोप के बारे में सूचना देने का काम करते थे।

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में अनेक समाचारपत्र देशी भाषाओं में छपने शुरु हो गए। वे राष्ट्रवादियों द्वारा छापे जाते थे, जिनके मन में भारतीयों का हित था। समाचार और विचार चंद शिक्षितों तक ही नहीं, बल्कि उनके माध्यम से अन्य अनेक लोगों तक पहुंचाए जाते थे। अनेक चिंतकों ने देखा कि भारत पर ब्रिटिशों के अधिकार को तभी खत्म किया जा सकता है, जब पहले भारतीय समाज की परंपरागत बुराइयां खत्म कर दी जाएं। इन सुधारकों ने जनमत तैयार करने के लिए सीधे अभियान ही नहीं चलाया, बल्कि प्रेस का भी इस्तेमाल किया। बंगाल के राजा राममोहन राय ऐसे ही एक सुधारक थे।

1821 में राजा राममोहन ने बँगला में 'समाचार कौमुदी' नामक समाचार पत्र का और 1822 में फारसी में 'मीरातुल अकबर' तथा अंग्रेजी में 'ब्राह्मनिकल मैग्जीन' का प्रकाशन शुरु किया। इन समाचारपत्रों के जरिये उन्होंने स्त्री–शिक्षा और विधवा–पुनर्विवाह की वकालत की और सती तथा जाति–प्रथा की बुराइयों पर हमले किए। उन्होंने विश्व के प्रमुख धर्मों की सर्वोत्तम शिक्षाओं पर आधारित अपनी एक आदर्श समाज की कल्पना को रेखांकित करने वाले अनेक पर्चो भी छापे। उन्होंने ब्रह्म समाज नामक संप्रदाय की स्थापना भी की, जिसमें बंगाल के बहुत से शिक्षित और प्रगतिशील लोग शामिल हुए। छापेखाने की बदौलत ही राममोहन के विचार इतने बड़े जनसमूह तक पहुंच सके। प्रेस की ताकत का अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि समाज–सुधार के उनके विचारों का विरोध करने के लिए 1822 में एक प्रतिद्वंद्वी अखबार 'चंद्रिका' भी प्रकाशित होने लगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समाचारपत्र और पत्रिकाएं केवल दुनिया की घटनाओं के बारे में सूचना ही नहीं देते, बल्कि हमारे सोच–विचार के तरीके को भी गढ़ते हैं। विचारों और

द ष्टियों का आदान–प्रदान बेशक अति प्राचीन काल से होता रहा है। किंतु संप्रेषण के आधुनिक रूपों के संदर्भ में खास बात यह है कि विचारों का संप्रेषण एकतरफा हो गया है। किसी समाचारपत्र का मालिक जहाँ अपने पाठकों के विचारों को प्रभावित कर सकता है, वहीं पाठक उसके विचारों को प्रभावित नहीं कर सकते। क्या आप वैश्वीकरण से इसकी समानता देखते हैं, जिसके बारे में आप पाठ संख्या 29 में पढ़ आए हैं।

पाठगत प्रश्न 31.1

1. किस लिपि से ज्यादातर आधुनिक भारतीय लिपियां निकली हैं?

2. प्रारंभिक समयों में लिखी गई पुस्तकों के दो प्रकारों के नाम बताइए।

3. पांडुलिपि–निर्माण महंगा क्यों था?

4. सही या गलत का निशान लगाइए :

   (क) भाषा संप्रेषण का साधन नहीं है।

   (ख) हितोपदेश कहानियों का एक संग्रह है।

   (ग) राममोहन 19वीं शताब्दी में प्रेस का इस्तेमाल करनेवाले अकेले सुधारक थे।

   (घ) लिपि ने लंबी दूरी के संप्रेषण को संभव बना दिया।

31.2 संस्कृति के वाहक के रूप में संगीत

संगीत और न त्य संस्कृति की प्रारंभिक अभिव्यक्तियों में शामिल हैं। गीत और न त्य में साथ देने के लिए प्रारंभिक मनुष्य ताली बजाता था या ताल मिलाने के लिए छड़ी से धरती को पीटता था। क्रमिक रूप से अनेक प्रकार के ढोल और बाजे इस्तेमाल किए जाने लगे। गरबा गुजरात के, कथकली केरल के और गिद्दा तथा भांगड़ा पंजाब के लोकन त्यों के उदाहरण हैं। ये न त्य त्यौहार मनाने, महत्तवपूर्ण समारोह आयोजित करने और विभिन्न प्रकार की भावनाएं व्यक्त करने के लिए और कभी–कभी विरोध के एक तरीके के रूप में भी किए जाते थे और आज भी किए जाते हैं।

लोक गीतों में वसंत, वर्षा के आगमन या अनाज पकने का उत्सव मनाया जाता है, जो सबके सब कृषि–चक्र पर केंद्रित हैं। राजगीरों और कुम्हारों के गीत भी होते हैं। आपने भारी बोझ उठाए चिनाई–कारीगरों को गाते और उनके दल को उन्हें ध्यान से सुनते देखा होगा, जिनके बोल उनके काम से संबंधित होते हैं।

स्त्रियों द्वारा स्त्रियों से संबंधित गीत भी खूब मिलते हैं, जिनमें परदेस गए प्रेमी की प्रेमिका का दर्द, शादी के बाद पीहर छोड़कर ससुराल जाती लड़की की पीड़ा, यहाँ तक कि सास–बहू के झगड़ों का भी वर्णन होता है।

लोकसंगीत स्वभावतः सहभागितापूर्ण होता है। वह लोगों के अनुभव के साथ विकसित होता है। इसलिए लोक कला के बारे में यह कहा जा सकता है कि उसका 'उपयोग' उसके जनकों द्वारा ही किया जाता है।

लोक–संस्कृति किसी श्रोता–वर्ग या दर्शक–वर्ग के लिए नहीं होती। तथापि, आधुनिक युग में इस संस्कृति का मूल उद्देश्य बदल गया है। इसलिए कभी–कभी आप लोक–न त्य मंच पर होता पा सकते हैं, जिन्हें दर्शक देख रहे होते हैं।

पाठ संख्या 29 में आपने शास्त्रीय संस्क ति के बारे में पढ़ा था। शास्त्रीय अथवा शास्त्रीय संगीत, संगीत का अति विकसित रूप है, क्योंकि वह सूक्ष्म नियमों पर आधारित होता है। उसे संगीत का व्याकरण कहा जा सकता है। उसके गायन या वादन (किसी वाद्य पर) के लिए लंबे समय तक गहन प्रशिक्षण अपेक्षित है। किंतु उसे सुनकर हर कोई खूब आनंदित हो सकता है। वस्तुतः फिल्मों और लोकगीतों की अनेक धुनें शास्त्रीय रागों या उनके सरलीक त रूपों पर ही आधारित हैं। सदियों से शास्त्रीय और लोक–संगीत दोनों ने गहन अंतःक्रिया की है और एक–दूसरे को सम द्ध किया है, यहाँ तक कि कभी–कभी दोनों के बीच कोई स्पष्ट विभाजक रेखा खींचना मुश्किल हो जाता है।

शास्त्रीय संगीत को पहले राजाओं ने संरक्षण प्रदान किया। प्रसिद्ध संगीतकार तानसेन मुगल सम्राट अकबर के नवरत्नों में से एक था।

आजकल व्यावसायिक घराने और राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सांस्क तिक संगठन शास्त्रीय संगीत को संरक्षण प्रदान करते हैं।

संगीत के इन दोनों प्रकारों से जुड़ा संगीत धार्मिक प्रयोजनों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। वस्तुतः अनेक लोक और शास्त्रीय गीतों का विषय धार्मिक होता है।

भारत में धार्मिक संगीत का सबसे पहला उदाहरण सामवेद में मिलता है। इस 3000 साल पुराने ग्रंथ में बलि देते समय गाए जाने वाले वैदिक राग हैं।

मध्यकाल से भक्ति और सूफी संतों की कविताएं उनके अनुयाइयों और आम आदमी द्वारा गाई जाती थीं। ये गीत आज के भजनों और कव्वालियों से समानता रखते हैं। इन गीतों में अपने ईश्वर के प्रति निष्ठा और प्रेम व्यक्त हुआ है। कभी–कभी उनमें सांसारिक समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए देवी सहायता की कामना भी की जाती है। कव्वालियों और भजनों का अक्सर एक शास्त्रीय आधार और लोकप्रिय अथवा लोक–रूप होता है।

भजन कभी–कभी आम आदमी के अनुभवों से संबंध रखते हैं। उदाहरण के लिए, कबीर के दोहों में बार–बार उनके बुनकरी के आनुवंशिक व्यवसाय का संदर्भ आता है।

कव्वालियां खास तौर से दरगाहों अर्थात् सम्मानित सूफी संतों के मकबरों से संबंध रखती हैं। गुरूद्वारों में सिखों के पवित्र ग्रंथ 'ग्रंथ साहिब' को संगीत के रूप में गाया जाता है। ग्रंथ साहिब 10 सिख गुरूओं और साथ ही अनेक भक्ति व सूफी संतों के वचनों का संकलन है।

ग्रंथ साहिब का गायन करनेवाले व्यक्ति को न केवल धार्मिक प्रशिक्षण, बल्कि शास्त्रीय संगीत का भी प्रशिक्षण लेना होता है। इसीलिए वे 'रागी' कहलाते हैं।

संगीत का एक अपेक्षाकृत नया रूप है फिल्मी संगीत। प्रारंभ में फिल्मी संगीत शास्त्रीय और लोक–संगीत पर आधारित होता था। अनेक पुराने, लोकप्रिय फिल्मी गीत भारतीय और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत की धुनों पर आधारित हैं। किंतु फिल्मी संगीत ने कुछ नई विशेषताएं भी विकसित कीं। उसने भारतीय वाद्यों के अलावा मूलतः पश्चिमी शास्त्रीय संगीत से संबंध रखनेवाले ऑर्केस्ट्रा का इस्तेमाल किया। और आजकल तो हर दिन फ्यूजन संगीत की नई किस्में विकसित हो रही हैं।

'छाया' फिल्म का लोकप्रिय गाना 'इतना ना मुझसे तू प्यार बढ़ा' 18वीं शताब्दी के ऑस्ट्रियन संगीतकार मोजार्ट की सिंफनी पर आधारित है।'मुगले–आज़म' के प्रायः सभी गाने शास्त्रीय हिंदुस्तानी संगीत पर आधारित हैं। उदाहरण के लिए, 'मुहब्बत की झूठी कहानी' वाला गाना राग दरबारी कनद पर आधारित है।

फिल्मी गाने न केवल फिल्म के विषय, बल्कि प्रौद्योगिकीय चिंतन पर भी निर्भर करते हैं। शताब्दी के प्रारंभ में प्रारंभिक रिकॉर्डिंग प्रक्रिया एक बार में केवल 3–1/2 मिनट चल सकती थी। इसलिए एक फॉर्मेट विकसित हुआ, जिसके द्वारा गाना 3 से 3–1/2 मिनट तक चलता था। प्रौद्योगिकीय उन्नति के साथ अब रिकॉर्डिंग लगातार घंटों तक संभव हैं, लेकिन फिल्मी गानों ने स्थापित फॉर्मेट बरकरार रखा है। अगली बार जब आप रेडियो पर कोई गाना सुनें, तो खुद उसका समय ज्ञात कर सकते हैं।

संस्कृति की समस्त अभिव्यक्तियों की तरह संगीत भी विचार को आगे बढ़ाता है। बंगाल के बाउलों ने परंपरागत रूप से अपने गीतों के माध्यम से विश्व–बंधुत्व और निस्वार्थता के अपने संदेश फैलाए हैं।

भक्ति–गीत न केवल उपासकों की भावनाओं को व्यक्त करते हैं, बल्कि अन्य लोगों को भी अपने समूह में शामिल कर लेते हैं। आज वैश्विक गांव में, जिसके बारे में आप पाठ संख्या 29 में पढ़ आए हैं, संगीत एक महत्त्वपूर्ण पुल के रूप में काम कर रहा है। नए रूपों का समोवश करते समय यह याद रखना आवश्यक है कि हम संगीत की अपनी सम द्ध विरासत को न खोएं।

पाठगत प्रश्न 31.2

1. लोकगीतों और न त्यों में किसका उत्सव मनाया जाता है?

____

2. रिक्त स्थान भरिए

   (क) ___________ के लिए गहन प्रशिक्षण जरूरी है।

   (ख) भक्ति और सूफी संतों की रचनाए ___________ और ___________ कहलाती हैं।

   (ग) बंगाल के बाउल ___________ और ___________ के गीत गाते हैं।

3. सही या गलत के निशान लगाइएः

   1. लोकन त्य केवल मंच पर किए जाने के लिए होते हैं।
   2. शास्त्रीय और लोक–संगीत ने एक–दूसरे के साथ कभी अंतःक्रिया नहीं की।
   3. फिल्मी संगीत कभी–कभी शास्त्रीय धुनों पर आधारित होते हैं।

भारत और बाहरी दुनिया के बीच संपर्क दूसरी शताब्दी ई.पू. से दूसरी शताब्दी ई. के बीच बढ़ा। राजनीतिक और वाणिज्यिक अंतःक्रिया ने विचारों के आदान–प्रदान की ओर अग्रसर किया और सामाजिक व सांस्क तिक विकास व्यापक हुआ। बौद्ध धर्म नई परिस्थितियों के अनुकूल था और उसने भारतीय–यूनानियों और मध्य एशियाई लोगों को अपना अनुयायी बनाया। धर्मप्रचारक मठवासियों ने व्यापारियों के साथ यात्राएं कीं और मध्य एशिया में दूर–दूर के क्षेत्रों में मठ स्थापित किए। वहाँ से बौद्ध धर्म और आगे चीन तक फैल गया।

यूनानियों के साथ अंतःक्रिया ने मूर्तिकला का विकास प्रशस्त किया। प्रारंभ में बुद्ध को स्तूपों के प्रवेशद्वारों की नक्काशी में एक चक्र, कमल और पीपल के पेड़ आदि द्वारा केवल प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता था। अब वे अपोलो जैसे यूनानी देवताओं की तरह मानव रूप में प्रस्तुत किए जाने लगे।

इसी के समानांतर एक जटिल मिथक विकसित हुआ। पुनर्जन्म के लोकप्रिय विश्वास ने बुद्ध के सैकड़ों पिछले जीवनों में विश्वास की शुरुआत की। बुद्ध के ये पिछले जन्म बोधिसत्व कहलाते थे। बोधिसत्वों की कल्पना पूर्णतः अपने साथ रहनेवाले प्राणियों के कल्याण के लिए चिंतित रहनेवाले दयालु व्यक्तियों के रूप में की गई। उपासक अपनी समस्याओं की समाप्ति के लिए उनसे प्रार्थना कर सकते थे और सांसारिक कठिनाइयों में उनकी सहायता कर सकते थे।

31.3 सांस्कृतिक रूप और बौद्ध धर्म का प्रसार

आपने पढ़ा है कि धर्म हमारी सांस्कृतिक विरासत की विभिन्न विशेषताओं में से एक है। संस्कृति के माध्यम से धार्मिक विचार स्वतः संप्रेषित हो सकते हैं। आइए, बौद्ध धर्म का उदाहरण लेते हैं।

बुद्ध छठी शताब्दी ई.पू. में हुए। उन्होंने उपदेश दिया कि संसार का स्वरूप दुःखपूर्ण है और इससे मुक्त होने के लिए इच्छा पर काबू पाना होगा। उन्होंने अपने अनुयाइयों को सरल और सदाचारपूर्ण जीवन जीने और परम संयम तथा विलासिता के बीच मध्यम मार्ग अपनाने के लिए कहा।

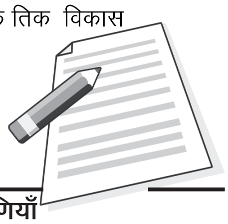

आपकी टिप्पणियाँ

बुद्ध का संदेश आम आदमी द्वारा तेजी से स्वीकार कर लिया गया, क्योंकि उन्होंने जनभाषा प्राकृत में संवाद किया, जबकि ब्राह्मण संस्कृत बोलते थे, जिसे आम आदमी नहीं समझता था।

बौद्धों ने अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाएं भी अपना लीं और उनके अनुकूल हो गए। उदाहरण के लिए, व क्षों की पूजा एक लोकप्रिय प्रथा थी। बौद्धों ने कहा कि व क्षों की पूजा बोधगया स्थित बोधिव क्ष की पूजा के समान है। बौद्ध परंपराओं के अनुसार बुद्ध ने वहाँ व क्ष के नीचे बैठकर ध्यान किया था और ज्ञान प्राप्त किया था।

म तक के अवशेषों के ऊपर स्मारक के रूप में गोल टीले बनाना एक अन्य लोकप्रिय प्रथा थी। म तक के रिश्तेदार और मित्र इन टीलों पर पूजा किया करते थे। बुद्ध के अनुयाइयों ने इस प्रथा को अपना लिया और स्तूप या टीले बनाए, जिनमें अक्सर बुद्ध के स्म तिचिह्न रहते थे, जैसे कि उनके दांत या ऐसी चीज़ें, जिनके बारे में यह माना जाता है कि बुद्ध ने उनका इस्तेमाल किया था।

चित्र 31.1 बुद्ध

जब बौद्ध धर्म फैला तो बौद्ध भारतीय–यूनानियों के संपर्क में आए, जो उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिम में बस गए थे। अपने देवताओं को मानवों के रूप में प्रस्तुत करना यूनानियों की पुरानी परंपरा थी। बौद्धों ने इस परंपरा को भी अपना लिया और बुद्ध को उसी रूप में प्रस्तुत करने लगे।

बिडाल–कुक्कुट जातक (बिल्ली और मुर्गे की जातक कथा) एक छोटी सी जातक कथा है, जो इस प्रकार है–बिल्ली मुर्गे से कहती है कि वह उससे शादी करना चाहती है। उसकी योजना मुर्गे को पेड़ से नीचे उतारकर खाने की है। पर मुर्गा समझदार है और 'शादी' करने से इंकार कर देता है। बौद्ध उपदेशक बताते हैं कि अपने एक पिछले जन्म में बुद्ध ही वह समझदार मुर्गा थे। इस कथा की मूर्तियों के रूप में जीवंत प्रस्तुति भरहुत (मध्य भारत) में देखें।

बौद्धों ने सैकड़ों लोकप्रिय लोक–कथाएं भी अपना लीं। बौद्ध परंपरा में वे जातकों अथवा बुद्ध की पूर्व जन्म–कथाओं के रूप में जानी जाती हैं। उन्हें बुद्ध के पिछले जन्मों और जीवनों की कहानियां माना गया। इनमें से अनेक कथाएं मूर्तियों के रूप में भी चित्रित की गई हैं।

जातक कथाएं अजंता की गुफाओं की दीवारों पर और सांची के स्तूप (मध्य प्रदेश) के इर्द–गिर्द रेलिंग पर बने चित्रों में भी चित्रित की गई हैं। इन स्थानों पर आनेवाले और इन कलाकृतियों को देखनेवाले स्त्री–पुरुषों के मन में पहले सुनी इन कथाओं की याद ताजा हो जाया करती होगी। साथ ही, इन कथाओं के माध्यम से उन्हें बौद्ध धर्म की शिक्षा भी दी जाती रही होगी।

अपना संदेश फैलाने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक साधनों का उपयोग करनेवाले बौद्ध शिक्षक अकेले नहीं थे। अगर हम ईसाई, हिंदू, इस्लाम और जैन धर्म सहित अपनी प्रमुख धार्मिक परंपराओं पर नजर डालें तो पाएंगे कि उनकी दीर्घकालिक सफलता का श्रेय उन अनेक तरीकों को जाता है, जिनसे उन्होंने अपने संदेश संप्रेषित किए, जैसे कि संगीत, चित्र, कथावाचन और उपासना–केंद्र निर्मित करने के लिए प्रयुक्त वास्तुकला की विभिन्न शैलियां।

देवी माता की पूजा के इर्द–गिर्द केंद्रित प्राचीन और लोकप्रिय प्रजनन–उपासनाएं भी बौद्ध धर्म के बढ़ते मिथकशास्त्र में शामिल कर ली गई। प्रत्येक बोधिसत्व एक स्त्री–देवता से जुड़ा था, जिसे तारा कहते थे।

बोधिसत्व इन देवियों के माध्यम से कार्य करते माने जाते थे। पुरूष और महिला शक्तियों का यह मेल अनेक प्रजनन–संप्रदायों की मुख्य विशेषता है। लोक–विश्वासों और प्रथाओं के ऐसे सांस्क तिक अभिप्रायों को अपनाने से बौद्ध धर्म को अपनाना आसान हो गया।

इन गतिविधियों ने जहाँ बौद्ध धर्म की लोकप्रियता बढ़ाई, वहीं बुद्ध की मूल, सरल शिक्षाएं लगभग भुला दी गई। बुद्ध ने चमत्कार दिखने से द ढ़तापूर्वक मना किया था और पूजे जाने के प्रयासों का विरोध किया था। लेकिन अब वे एक देवता माने जाने लगे और बोधिसत्वों द्वारा किए जानेवाले चमत्कारों की कहानियां विश्वास का आधार बन गईं।

बौद्ध धर्म धीरे–धीरे अपने जन्म के देश में ही लुप्त हो गया, सिर्फ इसलिए नहीं कि उसकी मूल, सरल शिक्षाएं खो गईं, बल्कि इसलिए भी कि मठवासियों का जनता से संपर्क नहीं रह गया था, क्योंकि शासकों और व्यापारियों ने मठों को धनवान बना दिया था। नए बौद्ध ग्रंथ संस्क त में लिखे जाने लगे जो आम आदमी की समझ से बाहर थे।

पाठगत प्रश्न 31.3

1. बुद्ध ने किस भाषा में उपदेश दिए थे?

2. किसके संपर्क से मानव के रूप में बुद्ध की मूर्तियों की प्रस्तुति प्रारंभ हुई?

3. जातक कथाएं क्या हैं?

____

4. रिक्त स्थान भरिए :

   1. स्तूपों की नक्काशी में बुद्ध __________, __________, __________ आदि के रूप में प्रतीकात्मक तौर पर प्रस्तुत किए जाते थे।

   2. ताराएं __________ से जुड़ी स्त्री–देवता थीं।

   3. __________ गोल टीले थे, जिनमें बुद्ध या महत्त्वपूर्ण मठवासियों के स्म तिचिह्न रहते थे।

आपने क्या सीखा

भाषा सांस्कृतिक विचारों की वाहिनी है। संस्कृति का प्रसार जलवायु, भाषा के उच्चारित और लिखित रूप, अभिलेखों, मुद्रण, समाचार पत्र–पत्रिकाओं जैसे कारकों से प्रभावित होता है।

भाषा के साथ–साथ संगीत और न त्य भी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां हैं। संगीत की सार्वभौमिक अपील है। उसके लोक और शास्त्रीय दोनों रूपों ने संस्कृति को सम द्ध किया है, क्योंकि वे भी विचारों को वहन करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. संस्कृति के संप्रेषण के कौन से साधन हैं?
2. संस्कृति के संप्रेषण में भाषण, लेखन और मुद्रण के महत्व का मूल्यांकन कीजिए?
3. विभिन्न विचार संप्रेषित करने में संगीतकारों का क्या महत्व है?
4. संस्कृति के विभिन्न रूपों ने बौद्ध धर्म के प्रसार में किस प्रकार सहायता की?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

31.1

1. ब्राह्मी
2. धार्मिक ग्रंथ और शास्त्र
3. वे हाथ से लिखी जाती थीं।
4. (क) गलत, (ख) सही, (ग) गलत, (घ) सही

31.2

1. प्रकृति में परिवर्तन की घटनाओं और जीवन के हर्ष–विषाद का
2. (क) शास्त्रीय संगीत

   (ख) भजन; कव्वालियां

   (ग) विश्व–बंधुत्व; निस्स्वार्थता
3. (क) गलत, (ख) गलत, (ग) सही

31.3

1. प्राकृत
2. यूनानियों के
3. बुद्ध की पूर्व जन्म–कथाएं
4. (क) चक्र, कमल और पीपल के पेड़

   (ख) बोधिसत्व

   (ग) स्तूप

32

औपनिवेशिक राज्य

जब ब्रिटेन ने भारत की प्रभुसत्ता यानी सर्वोच्च शक्ति अपने हाथ में ली, तो शाही–औपनिवेशिक संबंध इस आधार पर स्थापित होने लगे थे। भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना स्थानीय भारतीय शासकों की अपनी सत्ता पर नियंत्रण रखने में अक्षमता या पिछड़ेपन के कारण हुई थी। औपनिवेशिक राज्य का राजनीतिक अधिकार अपनी सत्ता बनाए रखने और लागू करने के अनेक उपकरणों से प्राप्त हुआ, जो औपनिवेशिक नीति के निर्माण की पूर्व–शर्त थी। यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि कैसे जनता पर शासन को वैध बनाया गया और कैसे औपनिवेशिक राज्य की सत्ता जनसाधारण के लिए देखने योग्य बनाई गई।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आपः

- औपनिवेशिक राज्य का अर्थ और स्वरूप समझा सकेंगे;
- भारत में औपनिवेशिक उद्देश्यों को स्मरण कर सकेंगे;
- औपनिवेशिक नियंत्रण के तत्त्वों की पहचान कर सकेंगे; और
- औपनिवेशिक शासन के प्रतीकों और प्रभावों की खोज कर सकेंगे।

31.1 प ष्ठभूमि

अठारहवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में मुगल साम्राज्य का पतन हो गया। इससे उत्पन राजनीतिक शून्यता को बंगाल, हैदराबाद, अवध, पंजाब और मराठा राज्य जैसे क्षेत्रीय राज्यों के उदय ने भरा। लेकिन ये क्षेत्रीय शक्तियां राजनीतिक स्थिरता प्रदान नहीं कर सकीं, जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत में क्षेत्रीय साम्राज्य स्थापित करने का अवसर मिल गया। अब भारत पर औपनिवेशिक तंत्र के जरिये शासन करने के लिए संस्थाओं और विनियमों का एक ढांचा चाहिए था।

(क) औपनिवेशिक राज्य का अर्थ

ब्रिटिशों की जीत से पूर्व क्षेत्रीय लोगों और परम सत्ता के बीच संबंधों को धर्म द्वारा कभी पूर्णतः परिभाषित नहीं किया गया। आर्थिक और सामाजिक संबंध का एक जाल शाही समन्वयन, संकट और पतन की अवधियों में बचा रहा, जिसने उपमहाद्वीप को परस्पर निर्भरता के एक सरल ढांचे में बाँधे रखा। परम सत्ताओं के अनेक स्तरों को रचनात्मक ढंग से समायोजित करने के एक लंबे इतिहास के बावजूद स्वतंत्र भारत में सत्ता में हिस्सेदारी बांटने के लिए किए गए शर्तों के पुनः बँटवारे ने 'राष्ट्र' के वैयत्तिक और साथ जुड़ते विचार पर आधारित क्षेत्रीय प्रभुसत्ता की एक कड़ी और स्थूल संकल्पना को देखा। औपनिवेशिक राज्य का अर्थ है एक विदेशी राजनीतिक सत्ता द्वारा किसी देश की प्रभुसत्ता (शासन और नियंत्रण करने के लिए कानूनी रूप से स्वतंत्र सत्ता) ग्रहण करना। औपनिवेशिक राज्य को शाही–औपनिवेशिक संबंध के विशेष संदर्भ में प्रभुसत्ता का एक सिद्धांत निरूपित करना था। ऐसा दुतरफा प्रक्रिया द्वारा किया जाता हैः 1. औपनिवेशिक राज्य को वैधता प्रदान करके अर्थात एक विदेशी सत्ता के अस्तित्व को न्यायसंगत ठहराकर, जो स्वतः दूसरी प्रक्रिया की ओर ले जाता है अर्थात 2. औपनिवेशिक–पूर्व देशी राजनीतिक सत्ता को उखाड़कर अथवा उसे अवैध ठहरा कर।

(ख) औपनिवेशिक राज्य का स्वरूप

ब्रिटिशों ने भारत में अपने औपनिवेशिक शासन को अपने विचारों के अनुसार समन्वित किया कि औपनिवेशिक राज्य कैसा हो सकता है, और कुछ आधुनिक विशेषताओं के साथ एक आधुनिक राज्य का उदय हुआ। जैसा कि एक आधुनिक राज्य में होता है, औपनिवेशिक सरकार के पास सेना का एकाधिकार, कर–वसूली के लिए एक केंद्रीक त प्रशासन, एक केंद्रीक त कानून–प्रणाली, प्रशासकों और नौकरशाहों का प्रशिक्षित कर्मचारी –वर्ग और स्पष्ट निर्धारित क्षेत्रीय सीमाएँ थीं। ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासकों का उद्देश्य ऐसा शासन था, जो विधि पर आधारित और विनियमों के अनुसार संचालित हो। किंतु निचले स्तरों पर, जहाँ नीतियों का कार्यान्वयन हुआ, वहाँ जाति, कुल, रिश्तेदारी और संरक्षक–आश्रित संबंधों ने स्थानीय समाज को प्रभावित करने में मुख्य भूमिका निभाई। 1947 में स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद नए राष्ट्र ने औपनिवेशिक सरकार से विरासत में प्राप्त संस्थाओं पर, अपनी संपूर्ण शक्तियों और कमजोरियों के साथ अपनी सरकार गठित की।

(ग) भारत में औपनिवेशिक उद्देश्य

19वीं शताब्दी के दौरान एक ब्रिटिश राजसी या शाही विचारधारा उभरी, जिसमें विश्व के सबसे धनी और प्रगतिशील राष्ट्र के तौर पर इंग्लैंड का यह कर्त्तव्य था कि शेष विश्व को सम द्ध बनने और उन्नति करने में उसकी मदद करे। कानून सभ्य जीवन और संपदा के निर्माण की स्थितियां पैदा करता। भारत में ब्रिटिश शासकीय विचारधारा निम्नानुसार थीः

1. भारतीय खुद पर शासन करने में समर्थ नहीं हैं।
2. ब्रिटेन का कर्त्तव्य था कि वह भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज में हस्तक्षेप अथवा उसका प्रबंधन करने का प्रयास किए बिना कानून पर आधारित एक अच्छी सरकार प्रदान करे।

शाही सरकार की मुख्य जिम्मेदारियां निम्नानुसार देखी गईः

(क) भूमि–राजस्व की वसूली और (ख) कानूनी प्रशासन का कार्यान्वयन।

ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा की गई राजस्व–व्यवस्था के प्रकार में इस प्रचलित विचारधारा के अनुसार कि भारत में धन–संपत्ति कैसे बनाई जाए, कंपनी की सुरक्षा संबंधी जरूरतों के अनुसार और नए क्षेत्र कंपनी के नियंत्रण में आने पर प्राप्त अनुभव के अनुसार अंतर बना रहा।

औपनिवेशिक राज्य दो उद्देश्यों के लिए काम कर रहा था : (क) ब्रिटिश राजधानी की जरूरतों के अनुसार भारतीय उपनिवेश को पूर्णरूपेण अपने अधीन करना और (ख) ब्रिटिश राजधानी द्वारा भारतीय उपनिवेश का आर्थिक शोषण या उसके आर्थिक अधिशेष को अपने उपयोग में लाना। किंतु भारतीय उपनिवेश में शाही दिलचस्पी का स्वरूप पूरे समय एक जैसा नहीं रहा और वह मात भूमि की जरूरतों और ब्रिटेन के विभिन्न सामाजिक समूहों के हितों के अनुसार बदलता रहा। 1813 तक भारत में ब्रिटिश शासन के पहले चरण में ब्रिटेन के हित मुख्यतः (क) भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार और अन्य यूरोपीय प्रतिस्पर्धियों की समाप्ति तथा (ख) कर–व्यवस्था के जरिये वित्तीय स्रोतों पर नियंत्रण में निहित थे।

ये दोनों उद्देश्य वर्तमान संस्थाओं और प्रशासनिक तंत्र को छेड़े बिना पूरे किए जा सकते थे। इस चरण में ब्रिटिश शासक परंपरागत शासकों से ज्यादा भिन्न नहीं थे और उनकी मुख्य दिलचस्पी क षि–अधिशेष को प्राप्त करने में भी। अतः इस चरण में एकसमान प्रशासनिक ढांचा निर्मित करने का या पुराने ढांचे को सुधारने तक का कोई प्रयास नहीं किया गया। न्याय–प्रणाली और प्रशासन में कोई मूलभूत बदलाव नहीं लाया गया। प्रशासन के क्षेत्र में जो मामूली परिवर्तन किए भी गए, वे केवल राजस्व–वसूली के शीर्ष पर किए गए जो बिना बाधा राजस्व–वसूली से जुड़े थे। भारत के लिए एक आधुनिक न्याय–प्रणाली और एकसमान प्रशासनिक ढांचा इस चरण में आवश्यक नहीं समझा गया, क्योंकि वह भारत में अंग्रेजी राज के पहले चरण में ब्रिटिशों के लक्ष्य की पूर्ति के लिए प्रासंगिक नहीं माना गया।

1813 के बाद परिद श्य काफी बदल गया था। ब्रिटिश अर्थव्यवस्था और समाज एक बड़े रूपांतरण से गुजर रहे थे, जिसका मुख्य कारण औद्योगिक क्रांति थी। वाणिज्यिक व्यापारिक निगम अब औद्योगिक स्वामित्व को रास्ता दे रहे थे जो ब्रिटिश समाज में प्रबल ताकत बन गया था। भारतीय व्यापार पर से ईस्ट इंडिया कंपनी का एकाधिकार धीरे–धीरे खोता जा रहा था। भारत में ब्रिटिश हित अब कंपनी के हितों का प्रतिनिधित्व न करके औद्योगिक पूंजीपति वर्ग के हितों का प्रतिनिधित्व करते थे। ब्रिटिश उद्योगपतियों की दिलचस्पी भारत में (क) अपनी निर्मित औद्योगिक वस्तुओं के बाजार और (ख) अपने उद्योगों के लिए पटसन और कपास जैसे कच्चे माल तथा निर्यात के लिए खाद्यान्न, अफीम आदि के स्रोत के रूप में इस्तेमाल करने में थी।

इस सबके लिए भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज में कहीं अधिक गहरी पैठ और भारत के ब्रिटेन के साथ ही नहीं, बल्कि अन्य देशों के साथ होने वाले व्यापार पर भी नियंत्रण आवश्यक था। भारत से अब एक नई भूमिका निभाने की अपेक्षा की जा रही थी।

परंपरागत प्रशासनिक संस्थाओं के साथ यह नई भूमिका निभाना शायद संभव नहीं था। उन्हें नई जरूरतों के मुताबिक बदलना और रूपांतरित होना था। अतः भारतीय प्रशासन के रूपांतरण की प्रक्रिया शुरू हुई। इसी प्रकार आधुनिक कानूनों की मदद से आधुनिक व्यवसाय को बढ़ावा देने, एक बाजार–अर्थव्यवस्था निर्मित करने, मुक्त वाणिज्यिक संबंध स्थापित करने और विभिन्न आर्थिक लेन–देनों को सुनियोजित करने के लिए संपूर्ण कानूनी ढांचे की कायापलट करना जरूरी था।

ब्रिटिशों के हित कई प्रकार के थे। सर्वप्रथम तो मुख्य प्रयोजन था एकाधिकारपूर्ण व्यापारिक स्थिति हासिल करना। बाद में यह महसूस किया गया कि मुक्त व्यापार की व्यवस्था भारत को ब्रिटिश वस्तुओं के लिए एक बड़ा बाजार और कच्चे माल का स्रोत बना देगी, किंतु भारत में निवेश करने वाले अथवा यहाँ बैंकिंग या शिपिंग सेवाएं बेचने वाले उद्योगपति कारगर ढंग से विशेष सुविधाओं पर नियंत्रण रखते रहे या उन पर हावी बने रहे। भारत ने ब्रिटेन के उच्च–मध्य वर्ग के एक बड़े भाग के लिए रुचिकर और लाभदायक रोजगार भी उपलब्ध कराया और उनके द्वारा घर भेजे गए धन ने ब्रिटेन के भुगतान–संतुलन और बचत की क्षमता में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। और अंत में, भारत पर नियंत्रण भूगोल, संभार–तंत्र यानी लॉजिस्टिक्स और सैनिक मानव–शक्ति की दष्टि से विश्व की सत्ता–संरचना का एक महत्त्वपूर्ण तत्व था। अंग्रेज भारत के आर्थिक विकास के खिलाफ नहीं थे अगर उससे उसके बाजारों में बढ़ोतरी होती, लेकिन अपने खुद के आर्थिक हितों या राजनीतिक सुरक्षा के साथ टकराव वाले क्षेत्रों में सहायता करने से उन्होंने इंकार कर दिया। इसलिए उन्होंने भारतीय वस्त्र उद्योग को तब तक संरक्षण प्रदान नहीं किया जब तक कि उसका मुख्य प्रतिस्पर्धी मैनचेस्टर के बजाय जापान नहीं बन गया और उन्होंने तकनीकी शिक्षा के विकास के लिए भी लगभग कुछ नहीं किया। उन्होंने संपत्ति की कुछ ब्रिटिश अवधारणाएं लागू कीं, पर अपने हितों की पूर्ति हो जाने पर उन्हें बहुत आगे नहीं बढ़ाया।

पाठगत प्रश्न 32.1

रिक्त स्थान भरिए :

1. ____________ शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मुगल साम्राज्य का पतन हो गया।

2. ____________ तक भारत में ब्रिटिश शासन के पहले चरण में ब्रिटेन के हित मुख्यतः भारत के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार में निहित थे।

3. ब्रिटिश अर्थव्यवस्था और समाज एक बड़े रूपांतरण से गुजर रहे थे, जिसका मुख्य कारण ____________ थी।

4. ब्रिटिश उद्योगपतियों की दिलचस्पी भारत को अपनी ____________ वस्तुओं के बाजार के रूप में इस्तेमाल करने में थी।

चित्र 32.1 राइटर्स इमारत

32.2 वैधता के रूप

जैसा कि आप जानते हैं, ब्रिटिश राज के ठीक पहले भारत की प्रभुसत्ता मुगल वंश के पास थी। उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत तक ब्रिटिशों ने मुगल वंश के राजत्व के प्रतीकों में कोई हस्तक्षेप नहीं किया। 1835 तक फारसी राजभाषा बनी रही और सिक्कों पर मुगल सम्राटों का नाम चलता रहा। मुगल वंश को तोप की सलामी 1837 तक ही सुरक्षित रही। प्रभुसत्ता के इन प्रतीकों की वापसी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से एक प्रतीकात्मक कार्रवाई थी, जो यह सूचित करती थी कि उसने भारत की प्रभुसत्ता पर कब्जा कर लिया है। ब्रिटिशों की पहले प्रांतीय राजधानियों में और फिर चुने गए आंतरिक स्थानों में उपस्थिति का अर्थ था कि जो संस्थाएँ साम्राज्य की कुछ मामलों में प्रतीक थीं, वे इस रूप में भी निर्मित की जा सकती थीं। अतः मुंबई का टापू और हुगली डेल्टा के कुछ गांव कंपनी के बाम्बे प्रांत की और फिर भारतीय साम्राज्य की भव्य राजधानियाँ बन गए। मुगल साम्राज्य का उन्नत और परिष्क त हृदय–प्रदेश प्रांतीय क्षेत्र बन गया। केंद्र और परिधि का पुनर्लेखन एक नए वास्तुशिल्प के औजारों से किया गया। नई संस्थाओं ने नई सत्ता चिन्हनित की। भवन नई संस्थाओं के सर्वाधिक मूर्त या भौतिक, महत्त्वपूर्ण और प्रभावी रूप थे। राजधानी, जैसे कि बंबई (अब मुंबई) में ठीक वही नजर आता था जिसका उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रांतीय नगर में अभाव था।

कंपनी (जो खुद ब्रिटिश ताज की नौकर थी और अपना कामकाज शाही चार्टर के माध्यम से चलाती थी) भारतीय सम्राट को अपना अधीनस्थ बनाना चाहती थी। अधीनस्थता की शब्दावली में भारत में ब्रिटिश अनुभव से निकले 'सर्वोच्चता', 'संरक्षण', 'सहायक भत्ता', 'अप्रत्यक्ष शासन', 'सहयोग' जैसे शब्द शामिल थे। उन्नीसवीं शताब्दी के

प्रारंभ तक कंपनी और विभिन्न भारतीय राजसी प्रदेशों के बीच संधियों की एक श्ृंखला के जरिये 'संरक्षण' व्यवस्था स्थापित हो गई। गवर्नर जनरल लॉर्ड वेलिजेली ने एक प्रणाली तैयार की, जो सहायक संधि प्रणाली के नाम से जानी गई। इस प्रणाली में लगातार हैदराबाद (1798), मराठा पेशवा (1802), नागपुर के भोंसले और ग्वालियर के सिंधिया (1803), जयपुर (1803), बड़ौदा के गायकवाड़ (1805), त्रावणकोर (1805), कोचीन (1807), कोटा (1817), जोधपुर (1818) और बीकानेर (1828) सूचीबद्ध होते गए। प्रणाली का सार था ब्रिटिश संरक्षण का वादा, जिसके लिए देशी राज्य निम्नलिखित में से किसी एक या अधिक तरीकों से भुगतान करते थे : (क) कंपनी की सेना की एक टुकड़ी के रख–रखाव की नकद लागत, (ख) राज्य के एक भाग कंपनी को सौंपा जाना, (ग) राज्य का आंशिक या पूर्ण विसैन्यीकरण यानी राज्य की सशस्त्र सेना का त्याग, (घ) कंपनी के अनुमोदन के बिना अन्य राजनीतिक शक्तियों के साथ संबंध और युद्ध पर प्रतिबंध, (च) सलाह या निर्देश देने के लिए दरबार में कंपनी के रेजिडेंट को रखने की स्वीक ति।

बल–प्रयोग अधीनता उपलब्ध होते ही राज्य के व्यवहार को समस्त अधीनस्थों के लिए दष्टिगोचर बनाया जाना आवश्यक था। औपनिवेशिक राज्य की दश्यता के लिए अपनाए गए व्यवहार 1858 में अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर पर उनके अपने महल में चलाए गए मुकदमे या 1877 के दिल्ली दरबार जैसे थे जिसमें ब्रिटिश प्रभुसत्ता के प्रति भारत की अधीनता सार्वजनिक तौर पर अधिनियमित की गई थी। आम जनता के लिए औपनिवेशिक राज्य की प्रतीकात्मक सांस्कतिक रचना राज्य की दूरस्थ एजेंसियों और रोजाना के अनुभवों के मार्फत की गई – दरोगा और पुलिस; कलक्टर की कचहरी में पटेल, अमीन, पटवारी और कानूनगो; नई अदालतों में ताकतवर लोगों के पक्ष में निर्णय लेते, काले कपड़े पहने अनजान भाषा (अंग्रेजी) बोलते अनजान आदमी; शहरों में औपनिवेशिक सत्ता को दष्टिगोचर बनाते विशाल औपनिवेशिक स्मारक; अक्सर छावनियों से बाहर आकर फ्लैगमार्च करते सैनिकों के दश्य और अंततः गोरी जाति के सदस्यों के समक्ष देशी समाज के उच्च लोगों के झुकने और नमन करने के नजारे भारतीय मानस में औपनिवेशिक शासन की छाप छोड़ने वाले कुछ प्रतीक थे।

32.3 औपनिवेशिक नियंत्रण की शुरुआत

औपनिवेशिक नियंत्रण के प्रारंभिक चरण के दौरान देशी नागरिक प्रशासन को बनाए रखा गया। बंगाल की विजय से पहले तक इस व्यवस्था ने बहुत अच्छा काम किया, लेकिन एक बड़े क्षेत्रीय साम्राज्य के पदाधिकारियों को पारिश्रमिक देने के तरीके के रूप में वह अक्षम थी, क्योंकि (क) लाभ का बहुत बड़ा हिस्सा कंपनी की तिजोरी में आने के बजाय निजी हाथों में चला जाता था, और (ख) एक अति लालची अल्पकालिक नीति अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता को क्षति पहुंचा रही थी, जो स्थानीय जनता को बगावत करने के लिए प्रेरित कर सकती थी और ये दोनों बातें कंपनी के दीर्घकालिक हितों के खिलाफ थीं। क्लाइव ने एक 'दोहरी' प्रणाली चलाई थी, यानी कंपनी की सत्ता और एक कठपुतली नवाब। वारेन हेस्टिंग्स ने नवाब को हटा दिया और प्रशासन सीधे संभाल लिया, लेकिन भारतीय अधिकारियों को बनाए रखा।

32.4 उपनिवेशवाद की विश्वास की विचारधारा और सिद्धांतकार

ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन में बेंथमवादी उग्र सुधारवाद की एक प्रबल प्रव त्ति थी। भारतीय संस्थाओं के प्रति घोर अवमानना दर्शाने वाला भारत का एक विशाल इतिहास लिखने के बाद जेम्स मिल 1819 में कंपनी का एक वरिष्ठ अधिकारी बना। 1831 से 1836 तक वह ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्य कार्यपालक अधिकारी यानी सीईओ था। 1823 से 1858 तक उसके बेटे ने कंपनी के लिए कार्य किया। माल्थस हेलीबरी में अर्थशास्त्र का प्रोफेसर था, जहाँ भावी कंपनी अधिकारियों की पढ़ाई उपयोगितावाद से अत्यधिक प्रभावित थी। बेंथम से भी भारतीय संस्थाओं के सुधार के संबंध में परामर्श किया गया था। उपयोगितावादियों ने उन प्रयोगों और विचारों (जैसे सिविल सेवा में प्रतियोगिता के जरिये प्रवेश) को आजमाने के लिए भारत का जानबूझकर इस्तेमाल किया, जिन्हें वे इंग्लैंड में लागू करना चाहते थे। उपयोगितावादी मुक्त अर्थव्यवस्था यानी लेसेज फेयर के प्रबल समर्थक थे और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए राज्य के किसी भी तरह के दखल से घ णा करते थे। अतः उन्होंने अकाल की समस्याओं से निपटने के लिए बाजार की ताकतों पर भरोसा किया और कृषि को बढ़ावा देने या उद्योग के संरक्षण के लिए कुछ नहीं किया। लेसेज फेयर की यह परंपरा भारतीय सिविल सेवा में खुद इंग्लैंड से ज्यादा गहराई से अंतर्निहित थी और 1920 के अंत तक बहुत प्रबलता से जारी रही। प्रशासन दक्ष था या भ्रष्ट नहीं था, किंतु राज्य–तंत्र का स्वरूप निगरानी करने वाला जैसे था, जिसमें कुछ विकासात्मक व्यय सेना, न्याय, पुलिस और जेलों पर किया जाता था और 3 प्रतिशत से कम कृषि पर। भारत के पश्चिमीकरण के लिए ब्रिटिशों द्वारा किए गए सर्वाधिक उल्लेखनीय कार्यों में से एक था अंग्रेजी शिक्षा के एक संशोधित रूप का कार्यान्वयन। शिक्षा पर मैकाले के 1835 के कार्यव त्त का ब्रिटिश शिक्षा–नीति पर निर्णायक प्रभाव पड़ा, जो भारतीय सभ्यता के प्रति पश्चिमी बुद्धिवादी नजरिये का एक विशिष्ट उदाहरण है। ब्रिटिशों के सत्ता संभालने से पहले मुगल अदालतों की भाषा फारसी थी और मुस्लिम जनसंख्या उर्दू बोलती थी, जो फारसी, अरबी और संस्कृत का मिश्रण थी। उच्च शिक्षा ज्यादातर धार्मिक थी और अरबी और संस्कृत के ज्ञान पर जोर देती थी। कंपनी ने कलकत्ता के एक मदरसे को (1718 में) और बनारस के एक संस्कृत महाविद्यालय को (1792 में) कुछ वित्तीय मदद दी थी। 1782 से 1785 तक गवर्नर जनरल रहे वॉरेन हेस्टिंग्स ने खुद भी संस्कृत और फारसी सीखी थी और कंपनी के कुछ अन्य अधिकारी भी प्राच्य विद्या के विद्वान थे। उनमें से एक, सर विलियम जोन्स ने बड़ी मात्रा में संस्कृत साहित्य का अनुवाद किया था और 1785 में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना की थी।

किंतु मैकाले इस प्राच्यवाद का प्रबल विरोधी था, उसने कहा– "मेरा विश्वास है कि वर्तमान प्रणाली सच्चाई को आगे नहीं बढ़ाती है। बल्कि गलतियों की स्वाभाविक समाप्ति को और आगे तक ले जाती है। हमारा बोर्ड जनता के धन को बर्बाद करने के लिए; ऐसी किताबें छापने के लिए जिनका मूल्य उन कागजों के, जिन पर छपे हुए मूल्य से भी कम है जब वे कोरे थे। वे बेतुके इतिहास, बेतुकी तत्वमीमांसा, बेतुकी भौतिकी, बेतुकी ईश्वर–मीमांसा को क त्रिम प्रोत्साहन देने के लिए है।मुझे संस्कृत या अरबी का ज्ञान नहीं हैं पर मैंने उनके मूल्यांकन के लिए जो कर सकता था सो किया है।इस बात से कौन इंकार कर सकता है कि एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय का एक अकेला शेल्फ भी भारत और अरबी के संपूर्ण देशी साहित्य से कहीं ज्यादा मूल्यवान है।संस्कृत भाषा में लिखी

किताबों से एकत्र की गई ऐतिहासिक जानकारी इंग्लैंड के प्राथमिक विद्यालयों में प्रयुक्त सबसे कम महत्त्व की पुस्तकों संक्षेपणों में पाई जानेवाली जानकारी से भी कम मूल्यवान है।

इन कारणों से मैकाले को अंग्रेजी शिक्षा के पक्ष में निर्णय लेने में कोई हिचक नहीं थी, पर वह आम जनता के नहीं थे। "अपने सीमित स्रोतों के चलते आम लोगों को शिक्षित करना हमारे लिए असंभव है। वर्तमान में हमें एक ऐसा वर्ग तैयार करने का भरसक प्रयास करना चाहिए, जो हमारे और उन लाखों लोगों के बीच दुभाषिए का काम कर सकें, जिन पर हम शासन करते हैं; ऐसे लोगों का वर्ग जो रक्त और वर्ण से भारतीय किंतु रुचि, आचरण और मस्तिष्क से अंग्रेज हों। देश की स्थानीय बोलियों को परिष्क त करने और उन्हें पश्चिम से आयातित विज्ञान की शब्दावली से सम द्ध करने का काम हमें उस वर्ग पर छोड़ देना चाहिए और उसे जनसंख्या के बड़े वर्ग को जानकारी देने के लिए उपयुक्त उपकरणों से सम द्ध करना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 32.2

सही पर निशान लगाइए :

1. __________ तक फारसी मुगल वंश की प्रतीक बनी रही। (1831, 1833, 1835)
2. राजधानी, जैसे कि बंबई में ठीक वही नजर आता था, जिसका __________ शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रांतीय नगर में अभाव था। (17वीं, 18वीं, 19वीं)
3. भारत का एक विशाल इतिहास लिखने के बाद जेम्स मिल __________ में कंपनी का एक वरिष्ठ अधिकारी बन गया। (1719, 1819, 1919)
4. सर विलियम जोंस ने बड़ी मात्रा में संस्कृत साहित्य का अनुवाद किया था और __________ में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना की थी। (1785, 1835, 1885)

32.5 औपनिवेशिक तंत्र

1785 में कार्नवालिस ने कंपनी के ऐसे सेवकों का एक पेशेवर वर्ग तैयार कर लिया, जिनको भरपूर वेतन मिलता था, जिनके भारत में कोई व्यापारिक या उत्पादन संबंधी हित नहीं थे, जिनकी नियमित पदोन्नति की संभावनाएं थीं और जो पेंशन पाने के पात्र थे। सभी उच्चस्तरीय पद ब्रिटिशों के लिए आरक्षित थे और भारतीय उनसे बहिष्क त थे। कार्नवालिस ने अंग्रेज न्यायाधीशों को नियुक्त किया और बंगाल के हर जिले में अंग्रेज अधिकारियों को राजस्व कलेक्टर और मजिस्ट्रेट बनाया। 1806 से कंपनी अपने युवा रंगरूटों को लंदन के पास हेलीबरी में प्रशिक्षण दिलाने लगी। नियुक्तियां अभी भी संरक्षण की प्रणाली के अनुसार की जाती थीं, पर 1833 के बाद कंपनी ने अपने नामांकित उम्मीदवारों में से प्रतियोगिता परीक्षा द्वारा चयन करना शुरू कर दिया। 1853 के बाद चयन पूर्णतः योग्यता के आधार पर होने लगा और परीक्षा हर अंग्रेज उम्मीदवार के लिए

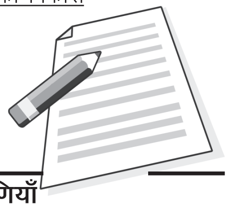

खोल दी गई। परीक्षा–प्रणाली चीनी मॉडल से प्रभावित थी, जो 2,000 सालों से अच्छी तरह चल रहा था और जिसका शास्त्रीय शिक्षण और साहित्यिक सक्षमता पर समान जोर था। भारतीय सिविल सेवा में (1) अत्यधिक वेतन मिलता था और (2) राजनीतिक सत्ता भी हासिल थी जिसे इंग्लैंड में कोई नौकरशाह प्राप्त नहीं कर सकता था।

1829 में पूरे ब्रिटिश भारत में छोटे–छोटे जिले स्थापित कर इस व्यवस्था को और सशक्त बना दिया गया, जिन्हें अकेले ब्रिटिश अधिकारी प्रभावशाली ढंग से नियंत्रित कर सकते थे। ये अधिकारी अब राजस्व–कलेक्टर न्यायाधीश और पुलिस के मुखिया (जो मुगल प्रशासन के तहत अलग–अलग कार्य थे) के रूप में कार्य करते हुए पूर्णतः निरंकुश सत्ता का प्रयोग करने लगे। यह व्यवस्था बाद में पूरे ब्रिटिश साम्राज्य में शाही प्रशासन की आधारशिला बन गई। चूँकि सिविल सेवा अंततः ब्रिटिश संसद के नियंत्रण के अधीन थी और भारत में ब्रिटिश समुदाय कड़ी पारस्परिक निगरानी के अधीन था, अतः प्रशासन वस्तुतः ईमानदार था।

चित्र 32.2 भाप का इंजन

कंपनी की सेना 20,000–30,000 ब्रिटिश अधिकारियों और सैनिकों के साथ भाड़े की स्थानीय सेना थी। एशिया में यह अब तक की सबसे आधुनिक और दक्ष सेना थी। 1857 के गदर के बाद ब्रिटिश टुकड़ी का आकार बढ़ाकर कुल संख्या का एक–तिहाई कर दिया गया और 1920 के दशक में बहुत थोड़े से भारतीयों की भर्ती किए जाने तक सारे अधिकारी अंग्रेज होते थे। आम तौर पर सेना की कुल संख्या लगभग 2,00,000 थी। यह सेना मुगल सेना से अत्यधिक छोटी, किंतु बेहतर प्रशिक्षण और उपकरणों से लैस थी और रेलवे नेटवर्क (जो अंशतः सैन्य कारणों से बनाया गया था) ने उसे बेहतर गतिशीलता, बेहतर सुविधाएँ और आवश्यक सूचना प्रदान की।

प्रशासन की उच्च श्रेणियां 1920 के दशक तक लगभग ब्रिटिश बनी रहीं, जब तक कि भारतीय सिविल सेवा परीक्षाएं इंग्लैंड के साथ–साथ भारत में भी नहीं होने लगीं। इसके अलावा, अन्य नौकरशाहियों के संपूर्ण पदानुक्रम में उच्चतर श्रेणियां ब्रिटिश ही थीं, जैसे कि राजस्व, न्याय, पुलिस, शिक्षा, चिकित्सा, लोक–निर्माण, इंजीनियरी, डाक और रेल सेवाओं के साथ–साथ प्रांतीय सिविल सेवाएं। इस प्रकार भारत ने ब्रिटिश मध्य और उच्चतर वर्गों के एक बड़े हिस्से को (खास कर स्कॉटलैंड और आयरलैंड के अपने बाह्य सदस्यों को) अत्यधिक वेतन वाले कॅरियर प्रदान किए।

1820 के दशक से 1850 के दशक तक ब्रिटिशों ने भारतीय सामाजिक संस्थाओं को बदलने और भारत का पश्चिमीकरण करने की प्रबल लालसा दिखाई। उन्होंने शिशु–हत्या और विधवाओं को जलाने की प्रथा (सती) को मिटा दिया। उन्होंने दास–प्रथा का उन्मूलन कर दिया और राजमार्गों से डकैतों को उखाड़ फेंका। उन्होंने विधवा–विवाह को वैध बना दिया और धर्म–परिवर्तन कर ईसाई बने हिंदुओं को संयुक्त परिवार की संपत्ति में अपने हिस्से पर दावा करने की अनुमति दे दी। उन्होंने ब्रिटिश कानून पर आधारित दंड–संहिता लागू की (संहिता असल में 1861 में लागू हुई), जिसने समानता के कुछ विचार लोगों के मन में बिठाने में सहायता की। नए कानून के तहत ब्राह्मण और शूद्र समान अपराध के लिए समान दंड के भागी थे। इस प्रकार कानून का राज और कानून के सामने सबकी समानता अब नए मानदंड थे।

1857 तक इस विचार को मानना संभव था कि अंग्रेज धीरे–धीरे परंपरागत भारतीय समाज को नष्ट कर देंगे और देश का पश्चिमीकरण कर देंगे। किंतु पश्चिमीकरण की अतिसक्रियतावादी नीतियों और देशी राज्यों पर कब्जा कर ब्रिटिश राज का विस्तार करने की कोशिशों से 1857 के गदर में हिंदू और मुस्लिम दोनों संप्रदायों के लोगों के बागी बन जाने पर उनका कोई नामलेवा नहीं बचा। हालांकि उसी समय जीते गए सिखों सहित निष्ठावान भारतीय सैन्य दलों की भारी मदद से गदर का सफलतापूर्वक दमन कर दिया गया, किंतु भारतीय संस्थाओं और समाज के प्रति ब्रिटिश नीति कहीं अधिक रूढ़िवादी हो गई। ताज ने सीधी जिम्मेदारी ले ली और ईस्ट इंडिया कंपनी को भंग कर दिया गया। भारतीय सिविल सेवा ने ईस्ट इंडिया कंपनी के मुकाबले नए विचारों वाले कम लोगों को आकर्षित किया और लंदन द्वारा उस पर कड़ा नियंत्रण रखा जाने लगा।

ब्रिटिशों ने बाकी देशी राजकुमारों के साथ गठजोड़ कर लिया और नए क्षेत्रों पर कब्जा करना बंद कर दिया। उनके शासन के अंत तक लगभग एक–तिहाई भारतीय जनसंख्या अर्ध–स्वायत्त देशी राज्यों के रूप में बनी रही। उनके यहाँ आधिकारिक ब्रिटिश रेजिडेंट्स होने के बावजूद वे आंतरिक नीति में काफी आजाद थे। पश्चिमीकरण के प्रयास में एक गतिरोध आ गया। जो शिक्षा–प्रणाली यहाँ विकसित हुई, वह ब्रिटेन की शिक्षा–प्रणाली का धुंधला प्रतिबिंब थी। 1857 में कोलकात्ता (कोलकाता), मद्रास (चेन्नई) और बंबई (मुंबई) में तीन विश्वविद्यालय खोले गए, पर वे केवल परीक्षा लेने वाले निकाय थे और वहां कोई पढ़ाई नहीं होती थी। उच्च शिक्षा संबद्ध महाविद्यालयों में दी जाती थी, जो दो–वर्षीय बीए पाठ्यक्रम चलाते थे जिनमें रटकर सीखने और परीक्षा देने पर जोर रहता था। पढ़ाई बीच में ही छोड़ जाने वालों का अनुपात हमेशा ऊँचा रहता था। विश्लेषण क्षमता या स्वतंत्र चिंतन को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने कुछ नहीं किया। उन्होंने ऐसे स्नातकों का समूह तैयार किया जो अंग्रेजी की अधूरी जानकारी रखते थे किंतु इतने पश्चिमीक त हो गए थे कि अपनी स्वयं की संस्क ति से कट गए थे। 1920 के दशक तक भारतीय विश्वविद्यालय शिक्षण–सुविधाएँ प्रदान नहीं करते थे और उसके बाद भी केवल एम ए के विद्यार्थियों को ही शिक्षा देते थे। इसके अलावा, भारतीय शिक्षा मुख्यतः साक्षरता के स्वरूप वाली थी, जिसमें तकनीकी प्रशिक्षण का प्रावधान यूरोपीय देशों से कम था। लड़कियों की शिक्षा को पूरी उन्नीसवीं सदी के दौरान लगभग पूरी तरह उपेक्षित रखा गया। उच्च शिक्षा अंग्रेजी में थी, इसलिए न तो पश्चिमी साहित्य के स्थानीय भाषाओं में अनुवाद का कोई आधिकारिक

प्रयास हुआ और न ही भारतीय लिपियों का कोई मानकीकरण ही था जिनकी विविधता शिक्षित भारतीयों के बीच बहुभाषावाद में एक बड़ी बाधा थी।

प्राथमिक शिक्षा को सरकारी दायित्व के रूप में गंभीरता से नहीं लिया गया और मुख्यतः कमजोर स्थानीय प्राधिकरणों द्वारा ही उसका आर्थिक पोषण किया गया। परिणामस्वरूप जनसंख्या के एक बड़े हिस्से की शिक्षा तक कोई पहुंच नहीं बनी और 1947 में स्वतंत्रता मिलने तक 88 प्रतिशत लोग अशिक्षित थे। 1930 के दशक से इसकी प्रगति तेज हुई, लेकिन स्वतंत्रता–प्राप्ति के समय बच्चों का पांचवां हिस्सा ही प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहा था। सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करने, धार्मिक अंधविश्वासों को मिटाने, उत्पादकता बढ़ाने और स्त्रियों की स्थिति सुधारने में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती थी। इसके बदले उसका प्रयोग एक छोटे से अभिजात वर्ग को ब्रिटिशों की नकल करने और थोड़े बड़े समूह को सरकारी लिपिक बनाने में किया गया।

32.6 औपनिवेशिक राज्य के अंतर्गत बदलाव

ब्रिटिशों ने जो मुख्य बदलाव भारतीय समाज में किए, वे सब उच्च वर्ग पर किए। उन्होंने बेकार कुलीन नेताओं को व्यावहारिक तकनीकों द्वारा नौकरशाही–सैनिक स्थापना से बदल दिया जो कानून–व्यवस्था बनाए रखने में बहुत दक्ष थी। उच्च सरकारी दक्षता से राजकोषीय बोझ में भारी कमी आ गई और राष्ट्रीय उत्पाद का एक सबसे बड़ा हिस्सा जमींदारों, पूंजीपतियों और नए प्रोफेशनल वर्गों के लिए उपलब्ध हो गया। इस उच्च वर्ग की कुछ आय ब्रिटेन को भेजी जाती थी, पर अधिकांश भारत में ही खर्च की जाती थी। किंतु उपभोग का तरीका बदल गया, क्योंकि नया उच्च वर्ग अब हरम और महल नहीं रखता था और न ही महीन मलमल और सुसज्जित तलवारें धारण करता था। इसके कारण परंपरागत दस्तकारी के क्षेत्र में कुछ कष्टदायक परिणाम हुए। सरकार ने खुद रेलवे और सिंचाई में निवेश किया, जिसके कारण क षि और उद्योग दोनों के उत्पादन में व द्धि हुई। नए कुलीन वर्ग ने अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी विद्यालयों के प्रयोग के साथ एक नई जीवन–शैली स्थापित की। उनके लिए अलग उप नगरों और निवास–स्थानों वाली नई शहरी और कस्बाई सुविधाएं स जित की गई। वकीलों, डॉक्टरों, शिक्षकों, पत्रकारों और व्यवसायियों के नए पेशेवर कुलीन वर्ग ने उनकी आदतों की नकल की। इस समूह के अंतर्गत पुराने जातिगत अवरोध ढीले पड़े और सामाजिक गतिशीलता बढ़ी। जहाँ तक आम जनसंख्या का संबंध है, औपनिवेशिक राज में उसके लिए ज्यादा बदलाव नहीं हुए। ब्रिटिशों के शैक्षिक प्रयास बहुत सीमित थे। ग्रामीण समाज, जाति–प्रथा अछूतों की स्थिति, संयुक्त परिवार प्रणाली या कृषि की उत्पादन–तकनीकों में कोई बड़े बदलाव नहीं हुए। कुल उत्पादन और जनसंख्या बड़ी मात्रा में बढ़े, पर प्रति व्यक्ति आय में बहुत कम या नगण्य व द्धि हुई।

पाठगत प्रश्न 32.3

रिक्त स्थानों भरिए :

1. सभी उच्चस्तरीय पद ब्रिटिशों के लिए आरक्षित थे और भारतीय उनसे __________ थे।

2. चूंकि सिविल सेवा अंततः ब्रिटिश ___________ के नियंत्रण के अधीन थी और भारत में ब्रिटिश समुदाय कड़ी पारस्परिक निगरानी के अधीन था, अतः प्रशासन ___________ ईमानदार था।

3. ब्रिटिश सेना मुगल सेना से अत्यधिक ___________ किंतु बेहतर प्रशिक्षण और ___________ लैस थी।

4. ___________ ने सीधी जिम्मेदारी ले ली और ईस्ट इंडिया कंपनी को ___________ कर दिया गया।

ब्रिटिश राज्य ने अपना अलग लोकाचार विकसित किया। ब्रिटिशों ने निचली (देशी) जातियों में विवाह या खानपान नहीं किया। जीतों और गठजोड़ों के जरिए ही नहीं, बल्कि नई संस्थाओं के विकास के जरिए भी राज्य को कायम रखा गया, जिन्होंने प्रतीकात्मक ढंग से साहबों को देशी लोगों से अलग किया। छोटा आंग्ल–भारतीय क्रिओल वर्ग भारतीय अथवा स्थानीय ब्रिटिश समाज में एकीकत होने में असमर्थ होने के कारण परित्यक्त था। अंग्रेज छावनियों या सिविल लाइंस कहलाने वाले विशेष उपनगरों में स्थित अपने क्लबों और बंगलों तक सीमित रहते थे। उन्होंने मुगलों की सरकारी शानोशौकत, बड़े निवास–स्थानों और बड़ी संख्या में नौकरों की परंपरा कायम रखी। अपनी शास्त्रीय शिक्षा और व्यवसाय की अवहेलना के साथ कुलीन वर्ग कानून–व्यवस्था स्थापित करने और 'बर्बर' लोगों को राज की सीमा से दूर रखने में खुश था। स्वयं को लोकप्रिय नहीं बल्कि अच्छी सरकार देने वाले समझते हुए उन्होंने स्व–न्यायसंगत अक्खड़पन का अपना एक अलग प्रकार विकसित किया। उनके लिए 'ब्रिटिश' शब्द भौगोलिक संबद्धता खो चुका था और भारतीय उपनिवेश पर राज करने के लिए नैतिक औचित्य का उपनाम बन गया था।

आपने क्या सीखा

अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मुगल साम्राज्य का पतन हो गया। ब्रिटिशों ने ईस्ट इंडिया कंपनी के माध्यम से भारत में एक क्षेत्रीय साम्राज्य स्थापित करने के प्रयास किए। औपनिवेशिक राज्य का अर्थ है किसी देश की प्रभुसत्ता ग्रहण करना। ब्रिटिशों ने भारत में अपने औपनिवेशिक शासन को इस बारे में अपने विचारों के अनुसार समेकित किया कि औपनिवेशिक राज्य कैसा हो सकता है। जैसा कि एक आधुनिक राज्य में होता है, औपनिवेशिक सरकार के पास सेना का एकाधिकार, एक केंन्द्रीक त प्रशासन और स्पष्ट निर्धारित क्षेत्रीय सीमाएँ थीं। 19वीं शताब्दी के दौरान एक ब्रिटिश राजसी या शाही विचारधारा उभरी, जिसमें विश्व के सबसे धनी और प्रगतिशील राष्ट्र के तौर पर इंग्लैंड का यह कर्त्तव्य था कि शेष विश्व को उन्नति करने और सुधरने में उसकी मदद करे। शाही सरकार की मुख्य जिम्मेदारियां थीं भूमि–राजस्व की वसूली और कानूनी प्रशासन का कार्यान्वयन।

बल–प्रयोग द्वारा अधीनता उपलब्ध होते ही राज्य की प्रथाओं को समस्त अधीनस्थों के लिए द ष्टिगोचर बनाया जाना आवश्यक था। औपनिवेशिक नियंत्रण के प्रारंभिक चरण के दौरान देशी नागरिक प्रशासन को बनाए रखा गया।

1785 में कार्नवालिस ने कंपनी के कर्मचारियों का एक पेशेवर संवर्ग तैयार कर लिया। सभी उच्चस्तरीय पद ब्रिटिशों के लिए आरक्षित थे और भारतीय बहिष्क त कर दिए गए थे। कंपनी की सेना 20,000–30,000 ब्रिटिश अधिकारियों और सैनिकों के साथ भाड़े की स्थानीय सेना थी।

प्रशासन की उच्च श्रेणियां 1920 के दशक तक लगभग ब्रिटिश बनी रहीं, जब तक कि भारतीय सिविल सेवा परीक्षाएं इंग्लैंड के साथ–साथ भारत में भी नहीं होने लगीं। ब्रिटिशों ने भारतीय सामाजिक संस्थाओं को बदलने और भारत का पश्चिमीकरण करने की प्रबल लालसा दिखाई। उन्होंने शिशु–हत्या और विधवाओं को जलाने की प्रथा (सती) को मिटा दिया, विधवा–विवाह को वैध बना दिया और धर्म–परिवर्तन कर ईसाई बने हिंदुओं को संयुक्त परिवार की संपत्ति में अपने हिस्से पर दावा करने की अनुमति दे दी। इसके अलावा 1857 में कोलकात्ता (कोलकाता), मद्रास (चेन्नई) और बंबई (मुंबई) में तीन विश्वविद्यालय खोले गए।

अंग्रेज मुख्यतः छावनियाँ या सिविल लाइंस कहलाने वाले विशेष उपनगरों में स्थित अपने क्लबों और बंगलों तक सीमित रहते थे। ग्रामीण समाज, जाति–प्रथा, अछूतों की स्थिति, संयुक्त परिवार प्रणाली या कृषि की उत्पादन–तकनीकों में कोई बड़े बदलाव नहीं हुए।

पाठांत प्रश्न

1. औपनिवेशिक राज्य के अर्थ और स्वरूप का वर्णन कीजिए।
2. उपनिवेशवाद की विचारधारा क्या थी और सिद्धांतकार कौन थे?
3. औपनिवेशिक उपकरणों पर प्रकाश डालिए।
4. औपनिवेशिक राज्य के अंतर्गत आए बदलावों का उल्लेख कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

32.1

1. अठारहवीं
2. 1813
3. औद्योगिक
4. निर्मित

32.2

1. 1835
2. 19वीं

3. 1819
4. 1785

32.3

1. बहिष्कृत
2. संसद, ईमानदार
3. छोटी, उपकरणों
4. ताज भंग

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. देखे अनुच्छेद 32.1
2. देखे अनुच्छेद 32.4
3. देखे अनुच्छेद 32.5
4. देखे अनुच्छेद 32.6

HISTORY

इतिहास

(315)

Question Paper Design

Subject : History **Course : Sr. secondary**

Marks : 100 **Duration : 3 hrs**

1. **Weightage by Objectives**

Objective	Marks
Knowledge	26
Understanding	52
Application / Skill	22

2. **Weightage by types of Questions.**

Type	Number of Questions	Marks	Total	Estimated time a Candidate is expected
Long Answer Questions	5	10	50	100 Mts
Short Answer Questions	8	4	32	48 Mts
Very Short Answer Questions	4	2	8	12 Mts
Skill (map)	1	10	10	10 Mts
				10 Revision
				180

3. **Weightage by Content**

Units / Sub – units	Marks
1. Ancient India	
2. Medieval India	
3. Modern India	
4. Indian National Movement and Contemporary India	
5. Contemporary World	
6A Evolution of state Or 6B Culture in India	

4. **Difficulty Level of Question – Paper**

Level	Mar
Difficult (can be attempted by top students)	10
Average (can be attempted by students who have regularly studied The material but may not have given sufficient time to writing)	60
Easy (can be attempted satisfactorily by students who have gone through The study material)	30

HISTORY

इतिहास

(315)

Sample Question Paper

Time: 3 Hours **Maximum Marks: 100**

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक : 100**

Note : (i) All Questions are compulsory. Marks are indicated against each questions.

(ii) Answer Question NOS. 1 to 4 in not more than 20 words each, Question NO. 5 to 12 in not more than 80 words each and Question NOS. 13 to 17 is not more than 200 words each.

निर्देश : (i) सभी प्रश्न अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित है।

(ii) प्रश्न संख्या 1 से 4 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों में प्रश्न संख्या 5 से 12 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 80 शब्दों मे और प्रश्न संख्या 13 से 17 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में दीजिए।

1. संगम साहित्य से आप क्या समझते है ? 2

What do you understand by sangam literature?

2. तमिलनाडु और केरल के तटीय राज्यों में तालाबों से सिंचाई क्यों लोकप्रिय थी ? 2

Why was Tank irrigation popular in Coastal states of Tamilnadu and Kerala?

3. बाजार नियन्त्रण द्वारा अलाउद्दीन खिलजी किन उद्देश्यों की पूर्ति करना चाहता था ? किन्ही दों का विश्लेषण कीजिए। 2

Analyse any two aims that Allouddin Khalji wanted to fulfill by market Regulations ?

4. 'पूंजीवाद' शब्द की व्याख्या कीजिए। 2

Explain the term Capitalism?

5. हड़प्पा सभ्यता के पतन के सन्दर्भ में दिए गए विभिन्न मतों की चर्चा कीजिए। 4

अथवा

पूर्व वैदिक काल को उत्तर वैदिक काल से प थक करने वाले विभिन्न कारक कौन से है ? 4

Discuss the Various theories put forword to explain the end of Harappa civilization.

Or

What were the main causes that separated Early Vedic age from post Vedic age.

6. हुमायूं के समक्ष आने वाली किन्ही चार मुख्य समस्याओं की चर्चा कीजिए। 4

अथवा

विजय नगर साम्राज्य के सैन्य व फौजी सगंठन की चर्चा कीजिए। 4

Discuss any four major problems faced by Humayun ?

Or

Discuss the Army and Military Organization of the Vijay Nagar Empire.

7. बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और अंग्रेजों के बीच संघर्ष के मुख्य कारण क्या थे ? 4

अथवा

ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा अपनाई गई विभिन्न भू – राजस्व प्रणालियों कौन – कौन सी थी ? किन्ही चार का उल्लेख कीजिए। 4

What was the main causes of conflict between Sirajuddola Nawab of Bengal and British East India Company?

Or

What were the various Land – Revenue Systems adopted by British East India Company ? Mention any four.

8. ब्रिटिश शासन किस प्रकार आर्थिक रूप से भारत का शोषण कर रहा था ? राष्ट्रवादी नेताओं ने किन बिन्दुओं के आधार पर आर्थिक राष्ट्रवाद की संरचना की ? 4

अथवा

राष्ट्रवाद के विचारों को किस प्रकार सांस्क तिक क्षेत्र में अभिव्यक्त किया गया था ? उदाहरण सहित समझाइये। 4

How was British Rule economically exploiting India? On what counts nationalist leader formulated relevance of economic nationalism?

Or

How the ideas of nationalism were expressed in field of culture? Illustrate them with examples.

9. साम्राज्यवाद के विस्तार ने प्रथम विश्वयुद्ध को भड़काने मे किस प्रकार का योगदान दिया था ? 4

अथवा

द्वितीय विश्व–युद्ध के बीज वर्साय में ही बो दिये गऐ थे, कैसे ? 4

How did spread of Imperialism led to the Breakout of First world war.

Or

Some of the seeds of II world war were sown at Versailles. How?

10. अक्टूबर 1929 में अमरीका में आरम्म होने वाली महामन्दी के दो मुख्य कारणों की व्याख्या कीजिए। इसने यूरोपीय राष्ट्रों को किस प्रकार प्रभावित किया ? 4

अथवा

'ट्रूमैन के सिद्धान्त' को समझाते हुए बताइये कि इसने अमरीका की विदेश नीति पर क्या प्रभाव डाला ? इस संदर्भ में अमरीका की मार्शल योजना की व्याख्या भी कीजिए। 4

Explain the two main causes of Great Depression that hit USA in Oct. 1929. How did it affect the European nations?

Or

Explaining Truman – doctrine. Describe how did it affect American Foreign Policy ? Also explain US Marshall plan in this context.

11. "1945 से, चीन, इतिहास के शायद सर्वाधिक क्रांतिकारी अनुभव से गुजरा है जिसमें इसने स्वंय को किसान बहुल स्थानीय अभिजातों (कुलीन) के वर्चस्व वाले समाज से 'पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना' कहे जाने वाले साम्यवादी राज्य मे परिवर्तित होते देखा है।" इस कथन की व्याख्या करे। 4

अथवा

पूंजीवादी औद्योगीकरण द्वारा विकासित दो नए वर्गों की संरचना की व्याख्या कीजिए। 4

"Since 1945, china has experienced propably the Greatest revolution in History, Transforming itself from a peasant majority society dominated by native elites into a socialist-state called people Republic of china". Analyse the statement

Or

Explain the formation of two new classes that emerged with capitalist Industrialization.

12. जनपदों से महाजनपदों में राज्यों की संरचना कैसे परिवर्तित हुई ? 4

अथवा

सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियां हमारे सांस्क तिक व्यवहार को कैसे प्रभावित करती हैं ? अपने द ष्टिकोण की उदाहरणों सहित व्याख्या करें ? 4

How the formation of state took place from Janepadas to Mahajanpadas?

Or

How does social and economic Situation influence our cultural practices? Illustrate your view point with examples

13. गुप्त काल की व्यवस्था का विस्त त विवरण दीजिए। 10

अथवा

आरंभिक मध्यकाल को दर्शाने वाले सामाजिक और आर्थिक बदलावों (परिवर्तनों) की चर्चा कीजिए।

Give the detailed explanation of Administrative system of Gupta period.

Or

Discuss the Social and economic changes that characterized the early medieval period.

14. दिल्ली सल्तनत की केन्द्रीय प्रशासन प्रणाली क्या थी ? उसकी मुख्य विशेषताऐं लिखिए। 10

अथवा

मुगलों का प्रशासनिक ढाचाँ कैसा था ? उसके मुख्य अभिलक्षणों को लिखियें।

What was the central Administrative system of Delhi Sultanate? Mention its salient features?

Or

What was the administrative structure under the Mughals? Mention its Salient features

15. भारत मे पश्चिमी शिक्षा के उदय का उल्लेख कीजिए। हंटर कमीशन की मुख्यें सिफारिशें क्या थी ? 10

अथवा

1857 के विद्रोह के कारणों को लिखिए। इसके मुख्य परिणाम क्या थे ?

Mention the rise of western Education in India? what were the Hunter commission recommendations.

Or

Mention the causes of Revolt of 1857? What were its consequences?

16. सविनय अवज्ञा आन्दोलन के विकास के विभिन्न चरणों की व्याख्या करे साथ ही इसको वापस लिए जाने तथा पुन; आरंभ करने के संदर्भ मे चर्चा कीजिए। 10

अथवा

भारत किस प्रकार स्वतन्त्र हुआ ? "यद्यपि स्वतन्त्रता प्राप्ति, अत्यधिक प्रसन्नता का विषय था, किन्तु यह सम्पूर्ण विजय नही थी।" चर्चा कीजिए।

Trace the development of civil Disobedience Movement and discuss its withdrawal and Continuance.

Or

How India become free? Discuss "Though attainment of freedom was a matter of great joy but it was not an absolute Victory".

17. आधुनिक काल में भारत के राष्ट्र राज्यों के विकास के विभिन्न चरणों की व्याख्या कीजिए। 10

अथवा

'आहार संस्क ति' पर संक्षिप्त निंबध लिखिये।

Discuss the stages of development of nation state in India in Modern times.

Or

Write a short essay on 'culture of food'.

18. (i) भारत के रेखा मानचित्र पर एक नवपाषाण कालीन स्थल तथा एक हड़प्पा सभ्यता का स्थल चिहित कीजिए । 2

(ii) निम्नलिखित मराठा शासकों की राज्य सीमा भारत के मानचित्र पर दर्शाइये। 4

सिन्धियां, होलकर, भोसले, गायकवाड

अथवा

मलिक काफूर के दक्कन की ओर जाने के किन्ही चार केन्द्रों को भारत के मानचित्र पर दिखाइये।

(iii) कोई एक फ्रांसिसी अथवा पुर्तगाली कॉलोनी भारत के रेखा मानचित्र पर चिन्हित कीजिए। 1

(iv) भारत के मानचित्र पर साबरमती आश्रम अथवा दांड़ी को चिंहित कीजिए। 1

(v) भारत के रेखा मानचित्र पर किसी एक आरंभिक राज्य (महाजनपद) को दर्शाईये। 1

(vi) यूरोप के रेखा मानचित्र पर प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् कोई एक नवोदित स्वतंत्र राष्ट्र दिखाईये। 1

(i) On the outline map of India mark one Neolithic site and one of Harappan civilization site.

(ii) Mark the territories of following Martha's on outline map of India.

Sindhia, Holkar, Bhosales, Gaikwad.

Or

Mark any four Important centers of Malik Kafur's march to Daccan.

(iii) Mark any one French or Portugues colony on the outline map of India.

(iv) Mark Sabarmati Ashram or Dandi on the out line map of India.

(v) On out line map of Europe indicate one new Independent country after First world war.

Marking Scheme
History Sample Paper

Ans No. 1

1. Major Source of study of south Indian Society, economy and polity during 300BC – 300AD.
2. Written in Tamil and Secular in nature
3. Produced by poets who joined together in assemblies (Sangam) patronized by chiefs and kings during first four centuries.

(Any two points)
Ch.1 Page 3

$1 \times 1 = 2$

Ans No. 2

1. Rivers are seasonal
2. Peoples have to depend on tank irrigation $1 \times 1 = 2$

Ans No. 3

1. To supply commodities of daily use at reasonable price to army
2. To put a stop to the purchase of horses by horse dealer & brokers so as to purchase horses centrally and it could then be supplied to army.

$1 \times 2 = 2$
P 141

Ans No. 4

Capitalism - Derived from word capital meaning accumulated Wealth and property.

Chapter 22
Page – 85

Ans No. 5 Various theories put forward:-

1. Natural calamities such as floods & earthquakes.
2. Increased aridity and drying up of river Ghaggar – Harka
3. Aryan invasions theory.
4. Civilization didn't collapse all of a sudden, but declined gradually 4×4

Or

1. Beginning of use of iron.
2. Continuous increase in population due to expansion of economy based on agriculture.
3. Change in the family composition.
4. Rise and growth of social differentiation in the form of varna system.
5. Institution of ashrama began to take shape.

(Any Four)

Ans No. 6

1. Newly conquered territories and administration was not consolidated
2. Unlike Babur, Humayun did not command respect & esteem of Mughal nobility.

3. Chaghatai nobles not inclined towards Humanyun.
4. Confronted the hostility of Afghans.
5. Humanyun had to share power with his brothers.

Any four 1× 4 = 4
P 158

Or

Vijay Nagar

1. Artillery &Horses
2. Firearms fitted on wells
3. Amera – Nayaks system
4. Feudal Nayakas 1×4 = 4

P 183 – 184

Ans No. 7

1. The misuse by the company of Imperial Farman.
2. The company's servants extended this priviledge to their own coastal trade, inter – asian trade.
3. The Fortification around Calcutta.
4. The company official also suspected that nawab was going to have an alliance with French in Bengal.

1×4 = 4
(pg 3 – 4)

Or

1. The maximization of revenue from the colony become the primary objective of British Administrative. They tried out various land revenues experiment to this aim.
2. Permanent Settlement
3. Ryotwari System
4. Mahalwari Settlement.

1×4 = 4
(pg 18 – 19)

Ans No. 8

<u>Exploitation</u>

1. Heavy taxation on peasantry
2. Unequal trade with India.

<u>Economic Nationalism</u>

1. Colonial rule harmful to interests of people
2. Powerful Nationalist agitation against exploitation 2+2 = 4

P 56 & 57

Or

1. To shun undesirable features of Indian culture like caste system, religious superstitious, priesthood,, woman discrimination
2. To oppose British encroachment in the Indian culture

Examples
Practice of sati
Remarriage of widows
Resistance to English Dress. Any two
With example
2 + 2
P 54

Ans No. 9

- Spread of imperialism in 2nd half of nineteenth century .
- Spread of colonization from 1876 to 1900
- Formation of Triple alliance and Triple Entente.
- This increased rivalries and conflicts. $1 \times 4 = 4$

Ch.23 page 96 – 97

Or

- Principles of peace and Freedom ignored at the Treaty of Versailles.
- Germany not invited to sign the Treaty and injustice done in form of compensation and Coal producing areas.
- Poland Problem
- Germany had to give up right on African Colonies $1 \times 4 = 4$

Ch.24 page 107 – 109

Ans No. 10

<u>Great Depression</u>

Causes – Overproduction and maldistribution
Effect on – Unemployment, Poverty and Starvation of European Nations $(2 \times 2) = 4$
Ch. 24 page 114

Or

1. Truman Doctrine – Contain Communism to areas where it had already triumphed but not let it spread any further
2. Foreign policy changed from isolation to interventionist.
3. Marshall plan – Transfer of 10 million dollars to Europe. 1 + 1 + 2

Ch. 25 page 132

Ans No. 11

1. Mao's Policy
2. Ouster of Japanese, French, British by 1949.
3. Since 1980's promotion of free enterprise in manufacturing and commercial activities
4. Foreign investment (1×4) Ch.26 page 148

Or

1. Emergence of Bourgeosic and working class.
2. Bourgeoisic – Middle class, lower middle class.
3. Working class – dependent on wage labour linked directly to growth of capital industry. (2 + 1 + 1) = 4

Ch.27 page 156

Ans No. 12

Jana means region where lived the people, the Tribe.
With extension of territory, creation of more professional Army, Social & Economic changes, national resources expanding Areas emerged large states
There emerged Mahajanpadas.

Or

1. Men & Woman dress differently Cost of Dress limited by economy.
2. Taste of Music limited by our economic situation.
3. Building of Taj Mahal involves a lot of resources.

Any $2 \times 2 = 4$

Ans No. 13

Gupta Admn.

- Decentralized
- Hereditary Kingship.
- Taxes increased.
- Developed Judicial system.
- Growth of feudalism. (5×2)

Page 108

Or

Social and Economic changes.

- Increase in the number of castes.
- Number of land grants increased.
- Instead of hunting – mainprofession – agricultures
- Rise of Rajputs.
- Connection between rajput class and extension of agriculture activities (5×2)

page 125 – 126

Ans No. 14

Delhi Sultanate

1. Wizarat
2. Diwan – i – Arz.
3. Diwan – i – Insha.
4. Diwan – I – Rasalat.
5. Other Departments like wakil-i-der.
   Amir-i-Hajib ; sar-i-Jandar
   Amir-i-Akhur ; Amir-i-Majlis

Explanation of points

$2 \times 5 = 10$

Or

Mughal

1. Emperor
2. Wakil and wazir
3. Diwan-i-Kul
4. Mir Bakshi
5. Sadr-u-Suder
6. Mir saman

Explanation of any five points

$2 \times 5 = 10$

Ans No. 15

1. English education was first introduced in India in 18th Century.
2. The beginning was finally made in year 1813 through a charter Act.
3. This Act allowed missionaries to spread western literature and teachings of Christianity through English Medium.
4. Encouraging Indian educated classes.
5. Promotion of sciences among Indians.

Hunter Commission

1. A Commission was set up in 1882 under W.W. Hunter.
2. It was confined mostly to secondary and Primary education.
3. It laid special emphasis on primary education control ought to be transferred to district and municipal board.
4. University education in a practical nature leading to careers in commercial or vocational field
5. Private initiative in the field of education should be encouraged. (Pg. 35 – 37)

5 + 5 = 10

The main causes of Revolt of 1857:-

1. Social
2. Economic
3. Political
4. Sepoys
5. Religions (Describe all these Reason) Any four points

(p – 47) 4 × 2 =8

1. Doctrine of Laps abandoned
2. East India company Rule came to an end, India under British crown.

Anyone 2 × 1 = 2

10

(p – 50)

Ans No. 16

Development

1. Bycot of Simon commission.
2. No Response to eleven point ultimatum.
3. 12th March 1930. Gandhi ji with 72 followers left Sabarmeti Ashram for Dandi.
4. 6th April 1930 reached Dandi & picked handful of salt.
5. Spread to Bengal, Maharashtra, Assam and Karachi. 4 × 1 = 4

Withdrawl

1. Signing of Gandhi Irwin Pact
2. Participation in Round table conference 2 × 4

Continuance

1. No gain from Round table conference & Civil Disobedience Restarted. (2)

10

(p – 74)

Or

1. Second world war in 1939.
2. Congress Government Resigned.
3. Quit India Movement in 1942.
4. Aftermath of World War II negotiation with Congress leaders.
5. India became free in 1947.

Not Absolute Victory

1. Partition into India & Pakistan.
2. Communal Violence. (10)

P – 78

Ans No. 17

With the Advent of Britishers & East India Company transformed India into a colony.

1. Started process of legimization of colonial state.
2. Delegitimization of pre – colonial indigenous political authority.

East India Company's rule being regularized through a number of Acts (Regulating Act, Pitt's India Act) taken over by British crown after 1857.

Or

<u>Culture of Food</u>

1. Food habits differ from region to region.
2. Food habits change due to interaction.
3. Nature of crops grown in different regions are different; wheat grown area & Rice grown Area, fish production in coastal Area.
4. Vegetarians & Non Vegetarian Food.
5. Coming of Mughals & Mughalai Dishes.
6. Coming of Europeans & Continental Foods. $5 \times 2 = 10$

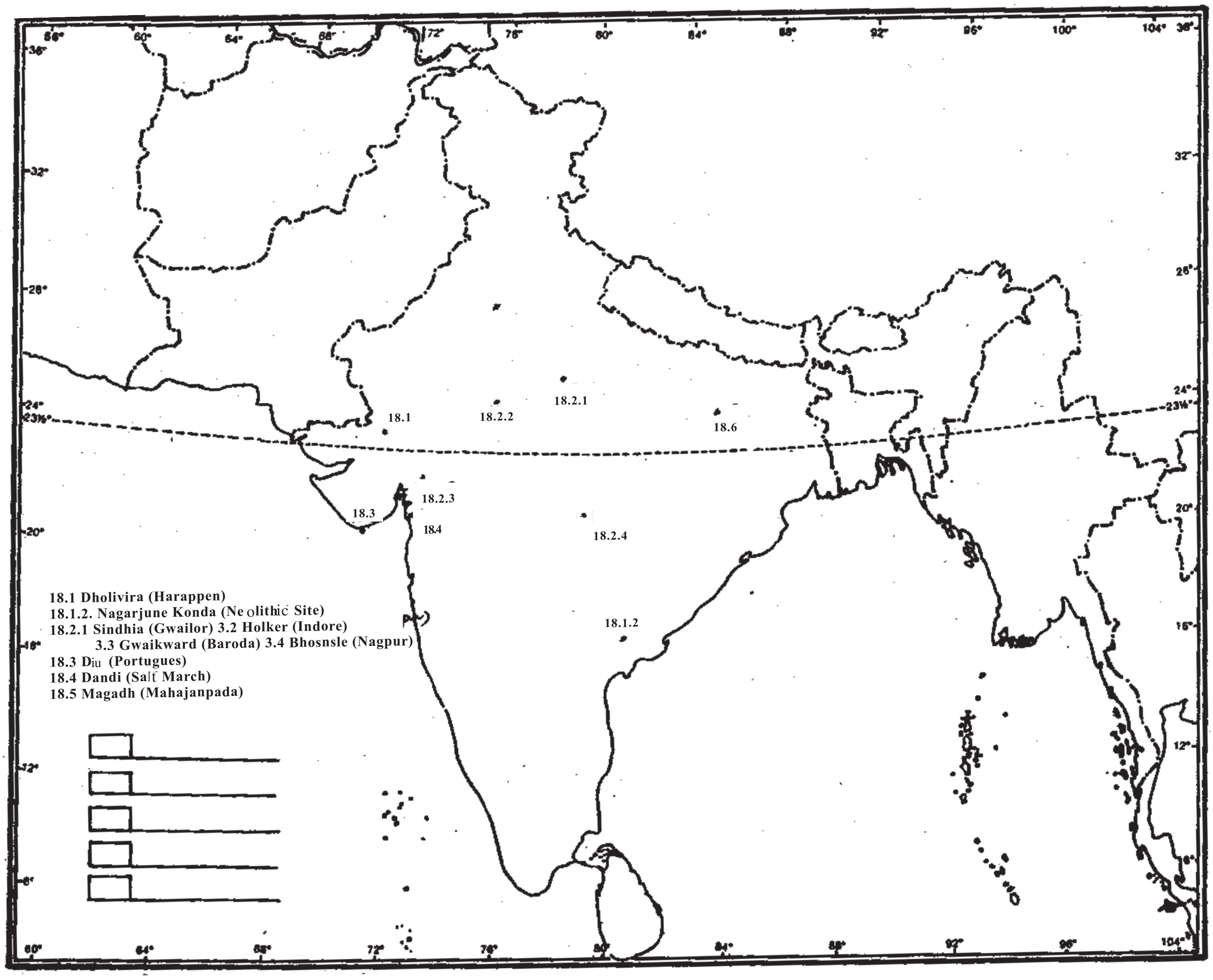

18.1 to 18.5

18.6

Question No. 18.6

First Fold

Feed back on Lessons

Lesson No.	Lesson Name	Was the content				Was the language		Were the Illustrations		What you have learnt is		
		Easy	Difficult	Interesting	Confusing	Simple	Complex	Useful	Not useful	Very helpful	Somewhat helpful	N he
MODULE 6A												
29.												
30.												
31.												
32.												
MODULE 6B												
29.												
30.												
31.												

Complete and Post the feedback form today

Final fold and seal

Fourth fold

Second Fold

Dear learners,
You must have enjoyed going through your course books. It was our endeavor to make the study material relevant, interactive and interesting. Production of course books is a two way process. Your feedback would help us improve the study material. Do take a few minutes of your time and fillup the feedback form so that an interesting and useful study material can be made.
Thank you
Course Co-ordinator
History

Feed back on Questions

Third fold

s

Postage
Stamp

Deputy Director (Academic)
National Institute of Open Schooling
A-24-25, Institutional Area,
Sec-62, Noida, 201309 (U.P.)

Name : ____________________________

Enrolment No. : ____________________

Address : __________________________

____

Subject : __________________

Book No. : ________________

Your Suggestion

____

____

____

____

Did you consult any other book to study History? Yes/No

If Yes, give reason for consulting it

____

____